गृह-वास्तु-शान्ति-प्रयोगः

[भाषा टीका परिशिष्ट विभूषित]

प्रकाशक
ठाकुर प्रसाद एण्ड संस बुकसेलर
राजादरवाजा, वाराणसी

श्री.ष.ब्र. श्री शिवपूजाराध्य-
चार्य महास्वामीजी

M.A.

हिरेजेवरगी

प्रकाशक—
ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर
राजादरवाजा-वाराणसी
फोन नं० ६४६५०

प्रथम संस्करण-पाँच हजार

मुद्रक—
विजय प्रेस,
वाराणसी

॥ श्रीः ॥

❋ शुभाशीर्वचन ❋

श्रीमद्वेदप्रकाशविद्वद्वरः प्रारम्भ टीकामिमाम् ।
वास्तोशान्ति कृते तदा विधिवशात्स्वर्गङ्गतोऽसौततः ॥
तद्धात्रा तु यत्नीयसा ह्यतिश्रमात्पूर्त्तिङ्गतायाऽधुना ।
प्राकाश्यं समुपागताः बुधवरान् सन्तर्पये त्सर्वदा ॥
सपुरोधा सुयजमानाः विधिमादाय वैदिकीम् ।
अशोकेन कलितामेतां प्रमुदन्तु नवे गृहे ॥

श्रीभृगु ज्योतिष कार्यालय
सी.के. ३५/६ सरस्वती फाटक
वाराणसी २२१००१

ज्यौतिषाचार्यः—
श्रीदेवकीनन्दन शास्त्री
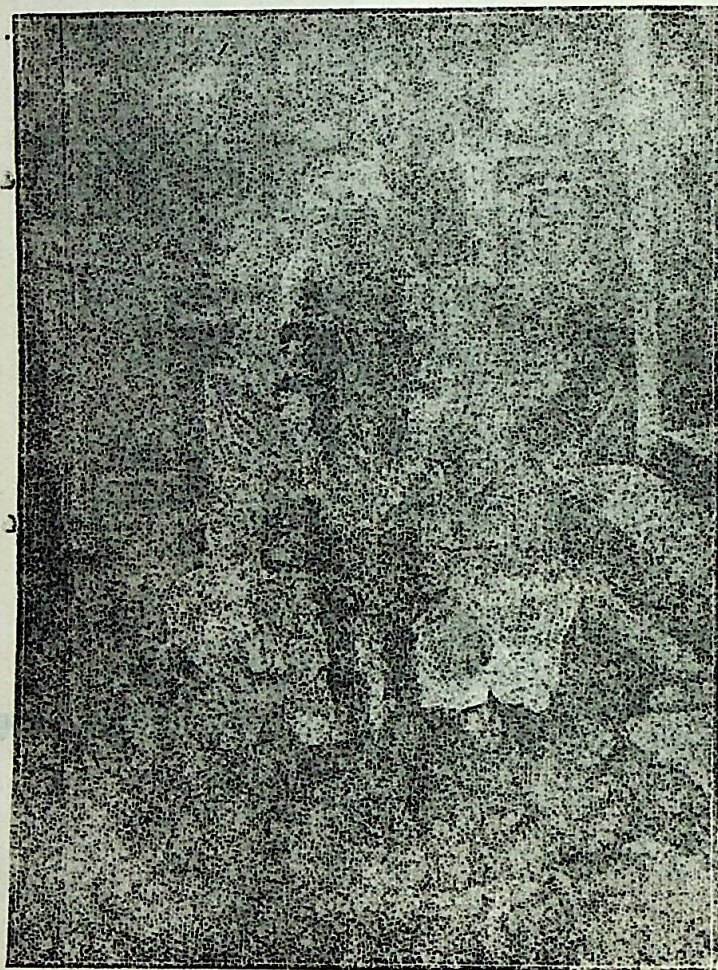
महामहोपाध्याय स्व० श्री पं० विद्याधर शास्त्री गौड़

SANAD

To

Pandit Vidyadhar Gowr,
Principal, College of Theology and
Dean of the Faculty of Theology,
Benares Hindu University,
United Provinces.

I hereby confer upon you the title of Mahamahopadhyaya as a personal distinction.

Viceroy of India.

Simla,
The 11th July 1940.
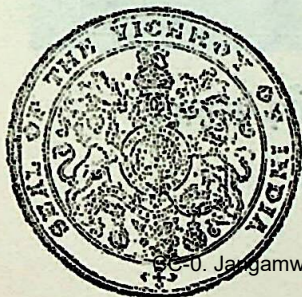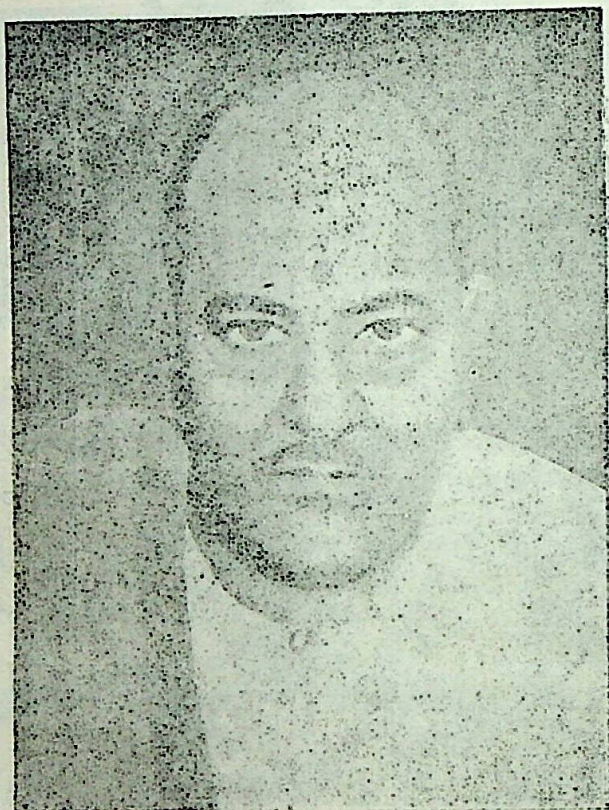
स्व० श्री पं० दौलतराम गौड़ वेदाचार्य

संयुक्त प्रांतीय सरकार

प्रमाणपत्र

स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर, गवर्नमेंट हाउस लखनऊ में, हिज़ एक्सेलेंसी श्रीमती सरोजिनी नायडू के संयुक्त प्रान्त के गवर्नर-पद का भार ग्रहण करने का उत्सव हुआ था। उस समारोह में शास्त्र रीति के अनुसार गणेश-पूजन, कलश-स्थापन, वेद-पाठ एवं स्वस्तिवाचन इत्यादि किये गए थे। इस प्रमाणपत्र के द्वारा यह प्रमाणित किया जाता है कि काशी-निवासी कर्मकांडी विद्वान पं० "दौलतराम गौड़"..... ने उपर्युक्त पूजन-हवन में भाग लेकर उसे सफल करने में पूर्ण सहयोग दिया। पंडित जी ने विशुद्ध राष्ट्रीय भावना, सेवाभाव एवं कर्तव्य-बुद्धि से उपर्युक्त मङ्गल उत्सव में भाग लिया और उसकी शोभा तथा सार्थकता बढ़ाई। संयुक्त प्रांत की सरकार उनकी निस्पृह सेवा, तत्परता, कर्तव्य-बुद्धि एवं क्रिया-कुशलता के लिये उनकी आभारी है और उन्हें धन्यवाद देती है।

गोविन्द वल्लभ पन्त
प्रधान सचिव,
संयुक्त प्रान्तीय सरकार।

लखनऊ:
स्वतंत्रता-दिवस।
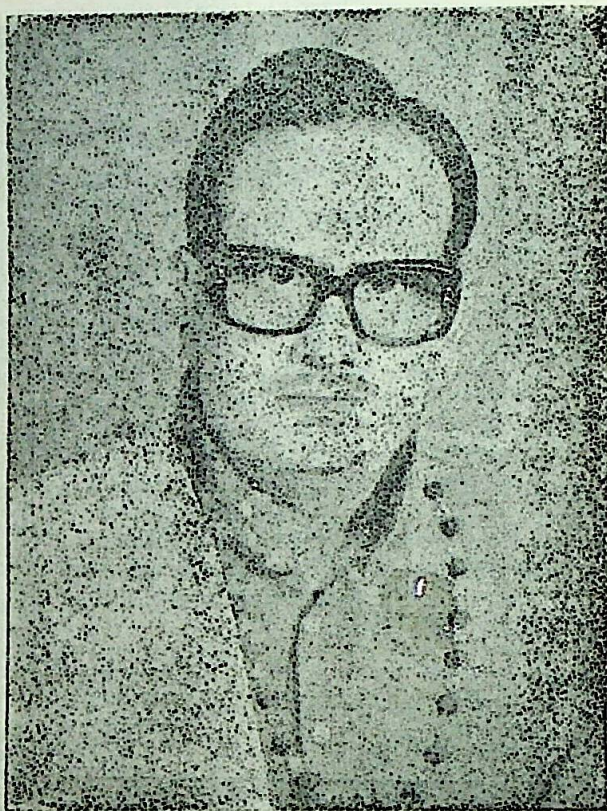
स्व० श्री पं० वेदप्रकाश शास्त्री गौड़

॥ श्रीः हरिः ॥

❀ भूमिका ❀

हिन्दू-दर्शन में घट-घट व्यापी देवतत्त्व है, उस देवतत्त्व की पूजा (सत्कार) करना प्रत्येक हिन्दू अपना कर्त्तव्य मानता है। उस पूजा विधि की कर्त्तव्यता का बोध हमें कर्मकाण्ड साहित्य से होता है यह कर्मकाण्ड बड़ा ही जटिल विषय है। इसकी सुगम पद्धतियों का प्रायः अभाव रहता है। कर्मकाण्ड में वास्तु शान्ति का विषय महत्त्वपूर्ण है-क्योंकि, जरासी भी त्रुटि रह जाने से लाखों करोड़ों रूपये व्यय करके बनाया हुआ प्रासाद थोड़े समय में ही भूतों का निवास अथवा गृह निर्माण कर्त्ता या शिल्पी अथवा वास्तु शान्ति करानेवाले पण्डितजी के लिये घातक, बन बैठता है। तरह २ की विपत्तियाँ, दुःस्वप्न, अकालमृत्यु, भयंकर ऋण ग्रस्तता, मनमुटाव आदि मकान में वास्तु दोषों के कारण नास्तिक एवं अज्ञानियों को भोगने पड़ते हैं। अतः गृह निर्माण कर्त्ता को इन तीन व्यक्तियों का चुनाव खूब सोच समझ कर करना चाहिये---

(१) दैवज्ञ (ज्योतिषी), (२) शिल्पी, (३) कर्मकाण्डी-पण्डित।

गृह-वास्तु शांति प्रयोग भाषा टीका नामक प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना से अल्पमात्रा में संस्कृत जानने वाले पुरोहित एवं कर्म में जिज्ञासा रखनेवाले हिन्दी पठित यजमान दोनों ही लाभान्वित होंगे। साथ ही साथ लोगों को विधि का ज्ञान होने से कर्मकाण्ड के प्रति उनकी अभिरूचि में भी वृद्धि होगी।

यह अहोभाग्य है कि प्रस्तुत ग्रन्थ के संकलन कर्त्ता स्व० श्री वेद प्रकाश शास्त्री गौड़ एवं संशोधक-सम्पादक तथा ग्रन्थ पूर्ति कर्त्ता चि० अशोक कुमार गौड़ उस उज्ज्वल कुल परम्परा के रत्न है—जहाँ महा-महोपाध्याय स्व० श्री पं० प्रभुदत्त शास्त्री—महामहोपाध्याय स्व० श्री पं० विद्याधर जी शास्त्री गौड़ तथा उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित स्व० श्री पं० दौलतराम जी गौड़ वेदाचार्य जी ने जन्म लेकर निरन्तर कर्मकाण्ड साहित्य की रचना कर श्रीवृद्धि की है। अपने परिवार में कर्मकाण्ड की उन्नति के लिए भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल की स्थापना की है।

आशा है, इस लघुकाय भाषा-टीका सहित गृह वास्तु शान्ति प्रयोग का अवलोकन कर कर्मकाण्डी पण्डित एवं यजमान दोनों ही लेखक परिवार के प्रति उपकृत होंगे।

डी.१५।२५ मानमन्दिर
वाराणसी

भवदीय
वंशीधर मिश्र वेदाचार्य

॥ श्रीः ॥

❀ सर्वोत्तम कृति गृहवास्तु ❀

गृह निर्माण के सम्बन्ध में स्त्री पुत्रादि भोग सौख्य जननमिति के अनुसार स्त्री-पुत्रादि एवं अन्य उत्तम सुख साधनों के भोग व यथार्थ काम सुखप्रद तथा समस्त जीव जन्तुओं के सुख का स्थान और शीत ताप वायु जन्य कष्टों का निवारक घर ही है। गृह निर्माण से कूप-वापी-देवालय आदि का पुण्य प्राप्त होने से गृह निर्माण को सर्व प्रमुख स्थान मिला है।

गृह निर्माण में ज्योतिर्विद् का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि गृह पिण्ड निर्माण एवं द्वारआदि का दिशा क्रम जितना अधिक शुद्ध रूप में निश्चित होगा। उसी के अनुसार घर में निवास करने वालों की सुख-समृद्धि होती है। उसके पश्चात् गृह-प्रवेश भी शुभाशुभ का निर्णायक होता है। इसके लिए योग्य ज्योतिर्विद् को प्राप्त करना विशेष कठिन नहीं है। परन्तु वास्तु शान्ति का कार्य यदि विधि-पूर्वक सम्पन्न नहीं हुआ तो उपर्युक्त गृह-पिण्ड एवं गृह प्रवेश का उत्तमोत्तम मुहूर्त्त निरर्थक हो जाता है।

इधर अधिक समय से वास्तु शान्ति कराने वाले योग्य विद्वानों का अभाव-सा प्रतीत हो रहा था। इसी के साथ जो इस विषय को जानते हैं वे भी इस ज्ञान के प्रसार को अपने में ही सीमित रखने का प्रयास करते रहे हैं। यह बड़े हर्ष का

विषय है कि यज्ञ-यागादि के जटिल विषय को जिस प्रकार महामहोपाध्याय स्व० पं० विद्याधर जी गौड़ एवं उन्हीं के सुपुत्र उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित वेदाचार्य पं० दौलतराम जी गौड़ ने सरल, सुबोध किया था, उसी प्रकार उन्हीं की वंश परम्परा में स्व० पं० वेदप्रकाश जी शास्त्री द्वारा संकलित एवं ग्रन्थपूर्ति कर्ता श्रीयुत् अशोक कुमार जी गौड़ द्वारा संशोधित तथा सम्पादित गृह-वास्तु-शान्ति प्रयोग नामक ग्रन्थ से सामान्य ज्ञान रखने वाले कर्मकाण्डी एवं अन्य जिज्ञासुजनों को गुरु परम्परानुगत गृह वास्तु शान्ति प्रक्रिया का ज्ञान सुगमता से हो सकेगा। क्योंकि इस ग्रन्थ में अथ से इतिपर्यन्त जिस शास्त्रीय परम्परा का निर्वाह किया गया है वह ग्रन्थ संकलन कर्ता और ग्रन्थ पूर्तिकर्ता के कर्मकाण्ड के अगाध ज्ञान का परिचायक है। इसी के साथ लेखक-टीकाकार के अनुज भ्राता श्रीयुत् अशोक कुमार जी गौड़ ने संशोधित रूप में जो मनोहारी सरल वास्तु प्रक्रिया का ग्रन्थ में समावेश कर दिया है उससे इस ग्रन्थ की उपादेयता और भी बढ़ गई है।

भृगु-संहिता भवन
सरस्वती फाटक, वाराणसी-१

भवदीय
द्वारिका प्रसाद शर्मा

❀ दो शब्द ❀

भगवान भूतभावन पतित-पावन श्री विश्वनाथ जी की असीम अनुकम्पा से तथा पूज्य पिताजी के आशीर्वाद से अपने ज्येष्ठ भ्राता स्व. पं० वेद प्रकाश शास्त्री गौड़ द्वारा लिखित और टीका टिप्पणी से अलंकृत गृह वास्तु शान्ति प्रयोग पुस्तक का संशोधन-संपादन करके सुधीजनों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ।

उत्तरोत्तर पुस्तक की बढ़ती हुई माँग को देखते हुए ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुक्सेलर फर्म के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम जी गुप्त ने भाई साहब से गृहवास्तु को सर्वजनोंपयोगी सरल-भाषा टीका से विभूषित करने का आग्रह किया। भाई साहब उनका आग्रह टालने में असमर्थ थे, अतः कार्य प्रारम्भ हो गया। भाई साहब के जीवन-काल में इस पुस्तक के दो फर्मे छपे थे। किन्तु उनके आकस्मिक निधन से पुस्तक प्रकाशित नहीं हो सकी।

भाई साहब के निधन के पश्चात मैंने अपने पिताश्री की पुस्तकों का संशोधन-संपादन करना प्रारम्भ किया।

अतः पुरुषोत्तम जी ने गृह वास्तु को पूर्ण करने के लिए मुझसे पुनः आग्रह किया।

काशी के कुछ परिचित विद्वानों से गृह वास्तु से संबंधित विषय पर मैंने परामर्ष किया तथा अपने प्रपितामह महामहोपाध्याय स्व० प्रभुदत्तजी शास्त्री अग्निहोत्री तथा पितामह महामहोपाध्याय स्व० पं० विद्याधरजी शास्त्री अग्नि होत्री और पिता श्रीस्व०पं० दौलतराम जी गौड़ वेदाचार्य तथा वेद और कर्मकाण्ड के विद्वान स्वर्गीय पं० वायुनंदनजी मिश्र के द्वारा रचित तथा टीकाकृत कर्मकाण्ड की कुछ पुस्तकों को भी एकाग्रता से देखा इस बीच गृहवास्तु विषय पर कुछ लिखित और हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को अपने निवास स्थान पर प्राचीन संगृहीत पुस्तकालय में देखने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ।

तत्पश्चात् ही इस पुस्तक के लेखन का कार्य मैंने प्रारंभ किया। लगभग चार माह के श्रम के पश्चात आज यह पुस्तक प्रकाशित होकर आप सभी के सम्मुख उपस्थित है।

किन्तु ग्रन्थ के लेखक और टीकाकार अर्थात भाई साहब आज हमारे समक्ष नहीं हैं। उनकी इस पुस्तक को प्रकाशित देखने की बहुत ही उत्कट अभिलाषा थी—किन्तु अनभ्र वज्रपात रूप मात्र चालीस वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी।

उनकी अमरात्मा जहाँ भी हो-भगवान उन्हें इस पुस्तक के प्रकाशन की सूचना देवें।

कतिपय प्रकाशकों के द्वारा इसके पूर्व भी गृहवास्तु प्रकाशित हो चुकी है किन्तु अधिकांश पुस्तकों में गृहवास्तु से सबंधित पूर्ण विषय नहीं दिए गये हैं। अतः इस पुस्तक में उन सभी विषयों का समावेश किया गया है।

पुस्तक को पूर्ण कराने का वास्तविक श्रेय श्री देवकीनंदन जी ज्योतिषाचार्य (स्वर्णपदक प्राप्त) को है।

ज्योतिषाचार्य-धर्मशास्त्री श्री पं० द्वारिका प्रसाद जी शर्मा ने पुस्तक के विषय में जो शब्द लिखे हैं। इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित वयोवृद्ध वैदिक विद्वान सर्व श्री पं० वंशीधरजी मिश्र वेदाचार्य जी का मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक की भूमिका लिखने के साथ ही साथ लेखनादि के समय-समय पर अपना अमूल्य परामर्श प्रदान किया।

पुस्तक का प्रथम संस्करण होने से कुछ अशुद्धियों का होना स्वाभाविक ही है। अतः द्वितीय संस्करण में उन अशुद्धियों को दूर करते हुए और पुस्तक में जो भी कमी रह गयी है उसे दूर करने का प्रयास करूँगा।

अशुद्धियों और त्रुटियों के लिए करबद्ध क्षमा प्रार्थी हूं।

भारतीय कर्मकांड मंडल
महामहोपाध्याय पं० विद्याधर गौड़ लेन
१५, सक्करकंद गली, वाराणसी

भवदीय
अशोक कुमार गौड

—: विषय-सूची :—

❋ गृहवास्तुचक्रम् ❋

वास्तुशान्तिः---सूत्रोक्त पुराणोक्त च। तत्र द्विजातीनां स्वस्वशाखीया पुराणोक्तया समुच्चीयते। सूत्रे हि अथातः शलाकर्मेत्यादिना गृहनिर्माणसमाप्ति प्राक्कालीनस्यैव हवनकर्ममात्रस्य सूत्रे विधानन्नतु निर्माणोत्तरं शिख्यादिवास्तु- मण्डलदेवानां स्थापनपूजनविधानात्। गृह्याग्निसाध्यं कर्मसूत्रे विहित शिख्यादिहवनं च साग्नेरपि लौकिकाग्नावेव तस्य सूत्रेऽविधानात्। यद्यपि सूत्रे वास्तुशान्तिर्विहिता तथापि द्विजातीनां पुराणोक्ताऽवश्यं विधेया। पुराणे सर्वशाखाप्रत्ययमेकं कर्मेतिन्यायेन तस्याः सर्वशास्त्रार्थतया शान्तिकमलाकरादौ व्यवस्थापितत्वात्। अकरणेऽनिष्टश्रवणाच्च। अत एव गृह्यसूत्रकारिकायां समुच्चीयेन विधानम्। अशक्तौ तु स्वसूत्रोक्तवैव कर्तव्या। तयापि सिद्धेः। उक्तं च---

"बह्वल्पं वा स्वगृह्योक्तं यस्य यावत्प्रकीर्तितम्।
तस्य तावति शास्त्रार्थे कृते सर्वं कृतं भवेदिति।।"

"येषां सूत्रे नास्ति तेषां शूद्राणां च पुराणोक्तवैव। यन्नाम्नातं स्वशाखा- यामित्याद्युक्तेः। तस्याः सर्वसाधारण्येन विधानात् अतश्च पुराणोक्तायाः न शूद्रमात्रविसयं तस्मात्सूत्रोक्ता पुराणोक्तया समुच्चीयते।"

"पूर्वोत्तरमुखो वास्तुपुरुषः कल्पितः। देवैः सेन्द्रादिभिस्तस्मिन्काले भूमौ निपातितः। अवाङ्मुखो निपतित ईशान्यां दिशि संस्थितः। तच्छरीरं स्थितं देवा आक्रम्य प्रयतास्तदेति। एवमेकाशीतिपदैर्भक्त्वै क्षेत्रे वास्तु पुमानसौ। पूर्वोत्तरशिरा आस्ते नैर्ऋत्याङ्घ्रिरधोमुख इत्यादिवचनैर्यद्यपि वास्तुपुरुष- स्याधोमुखस्य देहे शिख्यादिस्थापनमुक्तं तथापि पूजाकाले उत्तानदेहस्यैव स्मरणमित्युक्तम्।"

"नवभिर्विभजेद्भागैरेवैकं नवधा पुनः। एकाशीति पदानि स्युरेवं तत्र विभागतः। "एकाशीति पदं वास्तु गृहकर्मणि शस्यते। चतुःषष्टिपदं वास्तु प्रासादेषु प्रशस्यते।

"चतुःषष्टिपदं वास्तु देवानां परमं हितम् । एकाशोति पदं वास्तु गृहाणन्तु प्रकीर्त्यते" इत्यादिवचनात् चतुःषष्टिपदो वास्तुः प्रासादादिदेवकार्येषु गृहेषु तु एकाशीति पद इति व्यवस्था ।"

"ईशाने रक्तवर्णश्च तमीशानेति वै शिखी ।
पर्जन्यः पीतवर्णश्च महाँ इन्द्रेति वै तथा ॥
जयन्तः पीतवर्णश्च धन्वनागा इति स्मृतः ।
कुलिशायुधः पीतवर्णो महाँ इन्द्रेति वै तथा ॥
सूर्योरश्मिः सूर्यरश्मिर्हरिकेशेति मन्त्रतः ।
सत्यश्च शुक्लो व्रतेन दीक्षामाप्नोति मन्त्रतः ॥
भृशः कृष्णोऽथ मन्त्रो स्थ भद्रं कर्णेति च स्मृतः ।
अथाकाशः कृष्णवर्णो नयं सोमेति मन्त्रतः ॥
वायुर्धूम्रस्तथा वर्णे आवायो भूषमन्त्रतः ।
पूषा च रक्तवर्णश्च पूषन्तव इतीरितः ॥
शुक्लवर्णश्च वितथः सविता प्रथमेति च ।
गृहक्षतः पीतवर्णः सविता त्वेति मन्त्रतः ॥
यमः कृष्णवपुर्याम्ये यमाय त्वा मखाय च ।
गन्धर्वो रक्तवर्णश्च प्रतद्वा चेदिति स्मृतः ॥
भृङ्गराजः कृष्णवर्णो भुज्युः सुपर्ण इति ।
मृगः पीतः प्रतद्विष्णु मन्त्रेण निर्ऋतिस्थितः ॥
पितृगणा रक्तवर्णाः पितृभ्य इति पूजयेत् ।
दौवारिको रक्तवर्णो द्रविणोदाः पिपीषति ॥
शुक्लवर्णश्च सुग्रीवः सुषुम्णः सूर्यरश्मिना ।
पुष्पदन्तो रक्तवर्णो नक्षत्रेभ्योऽथ मन्त्रतः ॥
वरुणः शुक्ल इतरं इमम्मे वरुणेति च ।
असुरो द्विपदः पीतो ये रूपाणीति मन्त्रतः
शोषः कृष्णवपुर्मन्त्रोऽसवे स्वाहेति पूजने ।
पापस्तथा पीतवर्णः सूर्यरश्मीति मन्त्रतः ॥

रक्तवर्णस्तथा रोगः शिरोम इति मन्त्रतः ॥
नमोस्तु सर्पेभ्यो मन्त्रेण रक्तोऽहिर्वायुकोणके ।
मुख्यो रक्तवपुः कार्य इषेत्वेति प्रपूजयेत् ।
भल्लाटकःकृष्णावर्णो बण्महाँ असि मन्त्रतः ॥
सोमः श्वेतश्चोत्तरे च वयं सोमेति मन्त्रतः ।
सर्पः कृष्णवपुः पूज्य उदुत्यं जातवेदसम् ॥
अदितिः पीतवर्णा तूतनोऽहिर्बुध्न्य मन्त्रतः ।
दितिः पीताचादितिर्द्यौर्मन्त्रेणेशानकोणके
आपः शुक्ला ईशकोण पदाधः आपो अस्मानिति ।
सावित्री वन्हिकोणे च शुक्लवर्णैकपात्तथा ॥
उपयामगृहीतोऽसी सावित्रोऽसीति मन्त्रतः ।
जयश्च श्वेतो नैऋत्ये मर्माणि तेति मन्त्रतः ।
रुद्रा रक्तश्च वायव्ये नमस्ते रुद्रमन्त्रतः ।
अर्यमा कृष्णवर्णश्च अयमणं बृहस्पतिः ॥
सविता रक्तवर्णस्तु उपयामगृहीतकम् ।
विवस्वान् शुक्लवर्णश्च विवस्वन्नादित्यमन्त्रत ॥
इन्द्रो रक्तो नैऋत्येइन्द्रः सुत्रीमास्ववानिति ।
मित्रः श्वेतश्च तन्मित्रो वरुणस्याभिचक्ष वै ॥
पृथ्वीधरो रक्तवर्ण पृथिवीछन्द मन्त्रतः ।
आपवत्स शुक्लवर्ण आतेवत्सेति मन्त्रत ।
मध्ये नवपदो ब्रह्मा आब्रह्मन्निति मन्त्रतः ॥
धूम्रवर्णाय चरकी ईशावास्येति मन्त्रतः ।
विदारिका रक्तवर्णा अग्नि दूतेति मन्त्रतः ॥
पूतना पीतहरिता नमः सुतेति मन्त्रतः ।
पापराक्षसी कृष्णाभा वायव्यैरिति मन्त्रतः ।
वदकन्द्रेति मन्त्रेण रक्तः स्कन्दोऽथ पूर्वके ।
अर्यमा दक्षिणे च कृष्णोऽर्यमण बृहस्पतिम् ॥

जम्भको रक्तवर्णः स्यात्सरोभ्योधैवरं मनुः ।
पिलिपिच्छः पीतवर्णः कश्चिदासीदिति स्मृतः ॥
(उग्रसेना) डामरश्च काल एकपदस्तथा ।
अत्रैकपादः शुक्लः स्यादितरे कृष्णवर्णकाः ॥
उग्रश्चासुन्वन्तकार्षिरसि कुविदङ्गकः ।
मन्त्रैरेतैः पूजनीयाः पूर्वादिक्रमतः सदा '')
इति विश्वकर्मप्रकाशेऽधिका दृश्यन्ते ।
"तद्बाह्ये लोकपालांश्च यथास्थानं प्रपूजयेत् "

स्व० श्रीदौलतराम गौड

निवेदनः—विशेष कारण वश 'गृहवास्तुचक्र' को कलर ब्लाक में नहीं दिया जा रहा है इसके लिये क्षमा चाहता हूँ, गृहवास्तुचक्र बनाते समय चक्र से पूर्व श्लोकों के अन्दर ही रंगों का वर्णन है। अतः उन श्लोको से सहायता लेकर गृहवास्तु चक्र बनावे।

प्रार्थी

अशोक कुमार गौड़

॥ श्रीः ॥

गृह-वास्तु-शान्ति-प्रयोगः

(भाषा-टीका-विभूषित)

सर्वैश्वर्यं विधातारं सर्वस्फूर्ति विधायकम् ।
सर्वमङ्गलदं नित्यं गणराजं नमाम्यहम् ॥
भो! भो! भासुर भूसराः सुमतयः काले कलौ साम्प्रतम्।
वेदो वै भगवान् हिताय विदुषां चात्रावतीर्णः स्वयम् ॥
यत्पादप्लव संश्रयेण शतशो वेदार्थ पारङ्गताः ।
'श्रीमद्दौलतराम' संज्ञ पितरं प्रख्यात कीर्तिं भजे ॥
मया 'वेदप्रकाशेन' तदीय तनु जन्मना ।
श्रद्धया सहितं वास्तोः प्रयोगोऽयं वितन्यते ॥

वास्तुशान्ति कर्मारम्भ से पूर्व आचार्य पूजनकर्ता को (अपत्नीक या सपत्नीक) शुभ मुहूर्त में प्रायश्चित्त तथा ज्ञाताज्ञात पापों के शमनार्थ पञ्चगव्य प्राशन निम्न श्लोक द्वारा करवाये —

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्वग्नि रिवेन्धनम् ॥

पञ्चगव्य प्राशन के पश्चात् [१]स्नानादि कार्यों से निवृत्त होने पर आचार्य पूजनकर्ता को (अपत्नीक या सपत्नीक) पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख शुभासन पर पूजन सामग्री सहित पूजन स्थल पर बैठाकर मांगलिक तिलक (कुंकुम या केसर युक्त चन्दन) निम्न श्लोक द्वारा करे—

ॐ चन्दनं वन्द्यते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् ।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा ॥

यदि पूजनकर्ता की [२]अर्धाङ्गिनी भी पूजन में बैठे तो आचार्य उसको दाहिनी (दक्षिण) तरफ बैठाकर पति-पत्नी का ग्रन्थि बन्धन निम्न श्लोकों द्वारा करे—

ॐ मङ्गलं भगवान् विष्णुः मंगलं गरुडध्वजः ।
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलायतनं हरिः ॥
ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये
सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्रकोटि युगधारिणे नमः ॥

---

१ स्नान— सुस्नातः सम्यगाचान्तः कृतसन्ध्यादिकक्रियः ।
काम क्रोध विहीनश्च पाखण्ड स्पर्श वर्जितः ॥
जितेन्द्रियः सत्यवादी सर्व कर्मसु सस्यते ।
२अर्धांगिनी—सर्वेषु धर्म कार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा ॥ [वाराहः]

मांगलिक तिलक तथा ग्रन्थि बन्धन के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता को निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा कुशादि निर्मित [1]पवित्री धारण करवाये —

ॐ कुशमूलाग्र मध्येषु ब्रह्म-रुद्र-जनार्दनाः।
स्थिताः शुचिकराः सर्वे पवित्रं धारयाम्यहम्॥

ॐ पवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

पवित्री धारण के पश्चात आचार्य पूजनकर्ता से निम्न विनियोग एवं श्लोक द्वारा आसन शुद्धि करवाये —

विनयोगः—ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।
ॐ पृथ्वि! त्वया धृतालोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

---

१ पवित्री — मन्त्रेण धारयेद् विप्रः पवित्रं सर्व कर्मसु।
मन्त्रं विना धृतं यत्तु पवित्रं अफलं भवेत्॥
स्नाने-होमे-तपे-दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि।
करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा सन्ध्याभिवादने॥
(प्रयोग पारिजातः)

आसन शुद्धि के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता को तीन बार तीन नामों से निम्न नामानुसार आचमन करवाये —

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

आचमनान्तर आचार्य निम्न नामोच्चारण द्वारा पूजनकर्ता का हस्त प्रक्षालन करवाये—

ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐगोविन्दाय नमः।

आचमन एवं हस्त प्रक्षालन के पश्चात् आचार्य कुशा या दूर्वा से पूजनकर्ता तथा पूजन सामग्री पर पवित्रता हेतु निम्न श्लोक द्वारा जल छिड़कवाये —

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐपुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

शरीर एवं सामग्री पवित्री करण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से तीन (१पूरक-२कुम्भक-३रेचक) ४प्राणायाम निम्न प्रकार से करवाये —

---

१ पूरक— नीलोत्पलदलश्यामं नाभिदेशे प्रतिष्ठितम्।
चतुर्भुजं महात्मानं पूरकेणैव चिन्तयेत्॥ १॥

२ कुम्भक—कुम्भकेन हृदिस्थाने ध्यायेच्च कमलासनम्।
ब्रह्माणं रक्तगौराङ्गं चतुर्वक्त्रं पितामहम्॥ २॥

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।
ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।।

प्राणायाम के पश्चात् आचार्य अक्षत पुञ्ज पर पूजनकर्ता से निम्न श्लोक द्वारा घृत के रक्षादीप (प्रज्वलित करवाकर) का स्थापन करवाये —

भो दीप ! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव ।।

रक्षादीप स्थापनान्तर आचार्य दिशा शुद्धि हेतु स्वय या पूजनकर्ता के बायें हाथ में पीली सरसों ग्रहण करवाकर दाहिने हाथ से निम्न श्लोक द्वारा पूर्वादि दिशाओं में क्रमानुसार छिड़कवाये (प्रक्षेप) —

---

३ रेचक— रेचकेनेश्वरं ध्यायेत् ललाटस्थं महेश्वरम् ।
शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशं निर्मलं पापनाशनम् ।। ३ ।।
(मदन पारिजातः)

४ प्राणायाम—प्राणानायम्य कुर्वीत सर्व कर्माणि संयतः ।
सव्याहृतिकां सप्रणवां गायत्रीं शिरसा सह ।।
त्रिःपठेदायतप्राणः प्राणायामः स उच्यते ।
कनिष्ठिकानामिकाङ्गुष्ठैः यन्नासापुट धारणम् ।
प्राणायामः सविज्ञेयः तर्जनी मध्यमैर्विना ।।
(कात्यायन सूत्रम्)

ॐ अपसर्प्पन्तु ते भूता ये भूताः भुवि संस्थिताः ।
ये भूताः विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषा अविरोधेन शुभकर्म समारभे ।।
ॐ प्राच्यै नमः । ॐ आग्नेय्यै नमः । ॐ दक्षिणायै नमः । ॐ नैर्ऋत्यै नमः । ॐ पश्चिमायै नमः । ॐ वायव्यै नमः । ॐ उदीच्यै नमः । ॐ ऐशान्यै नमः । ॐ ऊर्ध्वायै नमः । ॐ अवाच्यै नमः । ॐ पृथिव्यै नमः ।

दिशाशुद्धि के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से उसके गुरु-देव, इष्टदेव और कुलदेव का हाथ जुड़वाकर ध्यान करवाये अन्यथा निम्न प्रकार से ध्यान करवाये—

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।। १ ।।
देवाः स्वस्ति प्रकुर्वन्तु सगणाः सायुधास्तथा ।
किन्नरा देवगन्धर्वाः साऽप्सराः सविनायकाः ।।२।।

कल्याणं च प्रकुर्वन्तु पातालस्तथा सुराः शुभाः।
रसातले तु ये देवास्तलाऽतलनिवासिनः ॥ ३ ॥
सुतले वितले देवाः ह्यतले च तलेऽमराः।
तान् सर्वान् प्रणमाम्यद्य स्वक्रतोः पालनाय वै ॥ ४ ॥
भूर्लोके ये स्थिता देवाः भुवर्लोके स्थिताः सदा।
भावुकं ते प्रकुर्वन्तु स्वगणाः सारसंयुताः ॥५॥
स्वर्लोक वासिनः सर्वे पुरन्दरमखाश्चलाः।
कुशलं च सवाञ्छामि कर्मारम्भे विशेषतः ॥६॥
महर्जन-तपोलोके निवसन्ति स वाहनाः।
निर्जरास्ते प्रकुर्वन्तु क्षेमं सुष्ठु प्रकाशकाः ॥७॥
सत्यलोके प्रसीदन्ति ब्राह्मणाः शिखिवाहनाः।
त्रिदशास्ते सुखासीना भव्यं कुर्वन्तु सर्वथा ॥८॥
रुद्रादिदेवताः सर्वास्तथा वैकुण्ठवासिनः।
सगणाः परिवारास्ते शुभं कुर्वन्तु नित्यशः ॥९॥
शिवयागे विष्णुयागे वास्तुकर्मणि सर्वदा।
इष्टपूर्वे महादाने तान् देवान् संस्मरेत् चिरम् ॥१०॥
ततस्तु कर्मारम्भः स्यात् निर्विघ्नेन समापयेत्।
ये वै नैव स्मरेन्नैतान् तेषां नैव फलं भवेत् ॥११॥

❀ शान्तिपाठः ❀

ध्यानान्तर आचार्य पूजनकर्ता से मृत्तिका पात्र अथवा ताम्रपात्र में पीला चावल भरवा कर, कुंकुमादि से अष्टदल कमल अंकित करवाकर, उस पर सुपारी (मौली से युक्त) के गणेश जी और गौ के गोबर की या सुपारी निर्मित गौरी (१अम्बिका) का स्थापन करवाकर, पूजनकर्ता के हाथ में पुष्पाक्षत दे कर पूजनकर्ता की मंगल कामना के निमित्त निम्न वेदमन्त्रों द्वारा शान्तिपाठ करे—

हरि÷ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽ उद्भिद÷ । देवा नोयथा सदमिद् वृधेऽअसन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानार्ठ० रातिरभि नो निवर्त्तताम् । देवानार्ठ० सख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२॥ तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम् । अर्यमणं व्वरुणर्ठ० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥३॥ तन्नो व्वातो मयोभुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।

तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु- तन्धिषण्या युवम् ॥ ४ ॥ तमीशानञ्जगतस्तस्थु- षस्पतिं धियं जिन्व मवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा व्वेदसा मसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥ स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो व्विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वे नो देवाऽ अवसा गमन्निह ॥७॥ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ॰ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः ॥८॥ शत- मिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्त- नूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मद्ध्या रीरिषता युर्गन्तोः ॥९॥ अदितिर्द्यौरदिति रन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । व्विश्वे देवा ऽअदितिः पञ्च जना ऽअदितिर्जातमदिति- र्जनित्वम् ॥१०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ॰ शान्तिः

पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति÷। व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वठं॰ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु। शन्न÷ कुरु प्प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्य÷ ॥१२॥

ॐ शान्तिः सुशान्तिः सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु।

शान्तिपाठ के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता के हाथ में ग्रहण किये हुए पुष्पाक्षतों को पृथ्वी पर या गणेश-गौरी पर चढ़वा दे तथा पुनः पूजनकर्ता के हाथ में पुष्पाक्षत देकर या तो निम्न नामोच्चारण द्वारा नमस्कार के साथ ही पुष्पाक्षतों का प्रक्षेप करवाये या अन्त में प्रक्षेप करवाये—

श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः। श्रीवाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। श्रीशचीपुरन्दराभ्यां नमः। श्रीमातापितृचरण कमलेभ्यो नमः। श्री इष्टदेवताभ्यो नमः। श्री ग्रामदेवताभ्यो नमः। श्रीवास्तु देवताभ्यो नमः। श्रीस्थानदेवताभ्यो नमः। श्रीएतत्कर्मप्रधान देवता-

भ्यो नमः। श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः। श्री सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। श्रीसर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महा गणाधिपतये नमः।

नमस्कारके अनन्तर आचार्य पूजनकर्ता से निम्न श्लोकों का पठन करवाये अन्यथा स्वयं श्लोक पाठ करे—

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥१॥
धूम्रकेतुः गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥३॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥४॥
अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥५॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्य समप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा ॥६॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ! ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि ! नमोऽस्तु ते॥७॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥८॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते
तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥९॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥१०॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥११॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥१२॥
स्मृते सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥१३॥
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥१४॥

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥१५॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म विष्णु महेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये ॥१६॥

॥ इति शान्ति पाठः ॥

❋ प्रधान [1]सङ्कल्पः ❋

शान्तिपाठ के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता के दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प, सुपारी (पूगीफल) तथा कुछ द्रव्य देकर निम्न प्रकार से प्रधान सङ्कल्प करवाये —

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगस्य कलि

---

१ सङ्कल्प—सङ्कल्पेन विना कर्म यत्किंचित् कुरुते नरः ।
फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयो भवेत् ॥
(संस्कार भास्करः)

प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे निखिलजनपावने आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्त वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टक विराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) श्रीमन्नृपति विक्रमार्क समयात् संवत्सराणां समये नातिक्रान्तां षष्ट्यब्दानां मध्ये अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकरास्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक शर्माऽहं (वर्मा, गुप्तः, दासः) मम सपरिवारस्य सभार्यस्य सर्वारिष्ट प्रशान्तिपूर्वकं आयुरारोग्य पुत्र-पौत्र-धन धान्य-गजाश्व-रथ गो महिष्यादि सम्पत् प्रवृद्धये एतद् गृहक्षेत्रावच्छिन्न भूम्यधिष्ठित देवतोपरोध जनितोपसर्ग निवृत्ति पूर्वक गृहाधिष्ठित श्रीवास्तुपुरुष प्रीतये च अस्मिन् नूतनेगृहे

करिष्यमाण नित्य नैमित्तिक काम्य कर्मणामस्य वास्तोश्च शुभता सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं गृहप्रवेश निमित्तां सनवग्रहमखां गृहवास्तु शान्ति करिष्ये। तदङ्गत्वेन तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं स्वस्ति पुण्याह वाचनं मातृका पूजनं वसोर्धारा पूजनं आयुष्यमन्त्र जपं नान्दीश्राद्धं आचार्यादि वरणं च करिष्ये।

सङ्कल्प का जलादि पूजनकर्ता पृथ्वी पर या किसी पात्र में छोड़कर हस्त प्रक्षालन कर ले।

॥ इति प्रधान सङ्कल्पः ॥

❀ गणेशाम्बिका पूजनम् ❀

आचार्य पूजनकर्ता के हाथ में अक्षत दे कर पूर्व निर्मित गणेश और अम्बिका का [1]षोडशोपचार से पूजनारम्भ निम्न

---

[1] षोडशोपचार—आवाहनासन पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीतं च गन्धमाल्यान्यनुक्रमात्॥
धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च प्रदक्षिणा।
पुष्पाञ्जलिः इति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश॥
फलेन सफलावाप्तिः साङ्गता दक्षिणार्पणात्॥
(कर्म प्रदीपः)

प्रकार से करवाये और सर्वं प्रथम गणेश और अम्बिका का आवाहन निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा करवाये —

हे हेरम्ब ! त्वमेह्येहि अम्बिका-त्र्यम्बकात्मज ।।
सिद्धि-बुद्धिपते ! त्र्यक्ष लक्षलाभ पितुः पितः ।।१।।
नागास्य नागहारस्त्वं गणराज चतुर्भुज ! ।
भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुश परश्वधैः ।।२।।
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः ।
इह आगत्य गृहाणत्वं पूजां यागं च रक्ष मे ।।३।।

हरि÷ॐ गणानान्त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गब्र्भधमा त्वमजासि गब्र्भधम् ।।

ॐ भुर्भुवः स्वः श्री सिद्धि-बुद्धि सहित हे गणपते ! इहागच्छइह तिष्ठ श्री महागणाधिपतये नमः, श्रीगणपतिं आवाहयामि स्थापयामि ।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीं आवाहयाम्यहम् ।।
ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मानयति कश्चन ।।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि-बुद्धि सहित हे अम्बिके ! इहागच्छइहतिष्ठ श्री अम्बिकायै नमः श्रीअम्बिकां (गौरीं) आवाह्यामि-स्थापयामि।

गणेशाम्बिका आवाहन के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा गणेशाम्बिका का प्राण प्रतिष्ठापन करवाये—

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः चरन्तु च।
अस्यै देवत्वं अर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पति-र्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं य्यज्ञठं॰ समिमन्दधातु। व्विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामोँ ३ प्रतिष्ठ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रतिष्ठापयामि।

प्राण प्रतिष्ठापन के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा आसनार्थ अक्षत प्रदान करावाये —

अलङ्कार समायुक्तं मुक्तामणि विभूषितम्।
दिव्य सिंहासनं चारू प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ पुरुष ऽएवेदᳬं सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्व्यम् ।
उतामृत त्वस्ये शानो यदन्नेनातिरोहति ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि अथवा आसनं समर्पयामि ।

आसन प्रदान के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा पाद्य (जल) अर्पण करवाये —

गौरी सुत ! नमस्तेऽस्तु शङ्कर प्रियकारक ! ।
भक्त्या पाद्यं मया दत्तं गृहाण प्रणतप्रिय ! ॥
ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

विशेष— द्रव्याभावे प्रदातव्याः शालिताः तण्डुलाः शुभाः ।
उपचारेषु च सर्वेषु यत् किंचित् दुर्लभं भवेत् ।
तत्सर्वं मनसा ध्यात्वा पुष्पक्षेपेण कल्पयेत् ॥
(पुरश्चर्य्यार्णवः)

पाद्य अर्पण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्रों द्वारा अर्घ्य प्रदान करवाये—

अतं उद्दिश्य विघ्नेशं गन्ध-पुष्पादि संयुतम् ।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं सर्वसिद्धि प्रदायकम् ॥

ॐ धामन्ते व्विश्वं भुवनमधिश्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि । अपामनीके समिथे यऽआभृतमश्याम मधुमन्तन्त ऽऊर्मिम् ॥ १ ॥

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः । ततो व्विष्वङ् व्यक्रामत्सा शनानशने ऽअभि ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यार्पण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा आचमन प्रदान करवाये—

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण विघ्नेश्वर ! ॥

ॐ ततो व्विराड जायत व्विराजोऽ अधि पूरुषः ।

स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखे आचमनीय जलं समर्पयामि ।

आचमन प्रदान के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के स्नानार्थ निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा जलार्पण करवाये—

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानार्थे स्नान जलं समर्पयामि । * एतानि पाद्याऽर्घ्याऽऽचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि समर्पयामि ।

* विशेष—उपरोक्त श्लोक और मन्त्र द्वारा गणेशाम्बिका के लिए पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान एवं पुनः आचमन भी करवाया जाता है । —वेदप्रकाश गौडः

गणेशाम्बिका को जल स्नान अथवा आचमन करवाने के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से निम्न श्लोक एवं मन्त्र द्वारा गणेशाम्बिका को "[1]पञ्चामृत" से अलग-अलग स्नान करवाये —

दुग्ध स्नानम्

पयः पवित्रमतुलं यतः सुरभि-सम्भवा।
सुस्निग्धं मधुरं देव ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ पय ÷ पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिश ÷ सन्तु मह्यम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दुग्ध (पयः) स्नानं समर्पयामि। दुग्ध स्नानान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि।

दधि स्नानम्

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

---

१ पञ्चामृत — गव्यमाज्यं दधिक्षीरं माक्षिकं शर्करान्वितम्।
एकत्र मिलितं ज्ञेयं दिव्यं पञ्चामृतं परम् ॥
(देवी पुराणम्)

ॐ दधिक्क्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽआयूꣳषि तारिषत् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दधि स्नानान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि।

घृत स्नानम्

पयःसारं-सुखं-हृद्यं सर्वदेव प्रियं घृतम्।
स्नानार्थं ते प्रयच्छामि गृहाण परमेश्वर ! ॥

ॐ घृतंमिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्व धमावह मादयस्व स्वाहा कृतं व्वृषभव्वक्षि हव्यम् ॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि।

मधुस्नानम्

तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ मधु व्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः । मधु द्यौ-रस्तु नः पिता ॥ २ ॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ ऽअस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधु स्नानं समर्पयामि । मधु स्नानान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि ।

---

* दुग्धादि सामग्रियों से देवता को स्नान करवाना शास्त्र विहित है। यदि सामग्री का अभाव हो तो केवल जल से ही स्नान करा देना चाहिए। दुग्धादि सामग्रियों को एक कर या पृथक् पृथक् कर देवतादि को स्नान कराना भी स्वयं की इच्छा पर निर्भर है।

(पं०हरिनामदत्त शास्त्री तनय–विद्या वाचस्पति पं०देवीप्रसाद शास्त्री)

* जो लोग केवल पञ्चामृत से ही स्नान कराना चाहें वे निम्न ढँग से स्नान करवायें—

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयोदधि घृतं मधु । शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ पञ्च नद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधासोदेशे भवत्सरित् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि ।

(वेदप्रकाश गौडः)

शर्करा स्नानम्

ऐक्षवं सर्वभूतानां बल्लभं पार्वतीसुत ! ।
कषायं शुद्धमधुरं तेन स्नानं कुरुप्रभो ! ।।

अथवा

इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टि कारिकाम् ।
मालापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम्। अपाꣳरसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टं गृहणाम्येष ते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करा स्नानं समर्पयामि। शर्करा स्नानान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि।

गणेशाम्बिका को पञ्चामृत स्नान करवाने के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से निम्न श्लोक एवं मन्त्र द्वारा गणेशाम्बिका को [1]शुद्धोदक स्नान करवाये—

---

१ शुद्धोदक स्नानम्—अन्या निर्वेदितं तोयं प्रकृतिस्थं सुशीतलम् ।
हेमादि कुम्भ पात्रस्थं स्नानीयं जलमुच्यते ।।
(पुरश्चर्यार्णवः)

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येत÷श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभो रूपाः पार्ज्जन्याः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि ।

शुद्धोदक स्नानानन्तर आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा वस्त्रार्पण करवाये—

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः । तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाद्ध्यो मनसा देवयन्तः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि ।
वस्त्रान्ते [1]आचमनीय जलं समर्पयामि ।

वस्त्रार्पण के पश्चात् आचार्य गणेशाम्बिका के लिए पूजनकर्ता से उपवस्त्र का अर्पण निम्न श्लोक एवं मन्त्र द्वारा करवाये—

शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जायाः रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रं अतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्सवः । व्वासोऽअग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसो ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि वा उपवस्त्रं समर्पयामि । उपवस्त्रान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि ।

उपवस्त्र अर्पण के पश्चात् आचार्य गणेशाम्बिका के लिए पूजनकर्ता से यज्ञोपवीत अर्पण निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा करवाये—

---

१ आचमनीयम्—कर्पूरमगुरुं पुष्पं दद्याज्जातीफलं मुने ।
लवङ्गमपि कङ्कोलं शस्तं आचमनीयके ।
(देवी पुराणम्)

दत्तं मया सुमनसा वचसा करेण
यद् ब्रह्मवर्च समयं परमं पवित्रम् ।
यद्धर्म कर्म निलयं परमायुरेतद्
यज्ञोपवीतमुररीकुरु हे गणेश ! ॥
ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयु ष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवता मयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरी ! ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि । यज्ञोपवीतान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को यज्ञोपवीत अर्पण करवाने के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा [1]गन्धार्पण करवाये—

---

[1] गन्ध—तिलकं कुंकुमेनैव सदा मङ्गल कर्माणि । कारयेत् सुमतिमान्न श्वेतचन्दन मृदा ॥ १ ॥ अनामिकया देवानां ऋषीणां च तथैव च । गन्धानुलेपनं कार्यं प्रयत्नेन विशेषतः ॥ पितृणां अर्पयेद् गन्धं तर्जन्या च सदैव हि । तथैवाङ्गुष्ठ मध्याभ्यां धार्यो गन्धः स्वयं बुधैः ॥ (विष्णु धर्मोत्तरे)

गन्ध कर्पूर-संयुक्तं कुङ्कुमेन सुवासितम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ त्वां गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मान्मुच्यत ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि-बुद्धिहर्सित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को गन्धार्पण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए रक्त चन्दन का अर्पण निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा करवाये—

रक्तचन्दन संमिश्रं पारिजात समुद्भवम् ।
मयादत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्ध-संयुतम् ॥

ॐ अ्ठं० शुनाते अ्ठं० शुः पृच्यताम्परुषाम्परुः गन्धस्ते सोममवतुमदाय रसोऽच्युतः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, रक्तचन्दनं समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को रक्त चन्दन अर्पण के पश्चात् आचार्य

पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए [1]अक्षत निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा अर्पण करवाये—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ! कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण विघ्नेश्वर!॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत। अस्तोषत स्व भानवो विप्रा न विष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

गणेशाम्बिका को अक्षतार्पण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा [2]पुष्प माला अर्पण करवाये—

---

१ अक्षत—अक्षतास्तु यवाः प्रोक्ता अभावे व्रीहयः स्मृताः।
तदभावे च गोधूमा न तु खण्डित तण्डुलाः॥
(परशुरामः)

२ पुष्प—उन्मत्तमर्कं पुष्पं च विष्णोर्वर्ज्यं सदा बुधैः।
पुष्पाभावे प्रवालैर्वा तदभावे च कोरकैः॥
तदभावे फलैर्पत्रैः तदभावे तृणांकुरैः। (परशुरामः)
पत्रं वा यदि पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम्।
यथोत्पन्नं तथादेयं विल्वपत्रं अधोमुखम्॥
पुष्पं ऊर्ध्वमुखं श्रेयं पत्रं योज्यं तु अधोमुखम्।

पुष्पैर्नानाविधैः दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः ।
पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥१॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ! ।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण विघ्नेश्वर ! ॥२॥

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा ऽइव सजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को पुष्प माल्यार्पण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा दूर्वार्पण करवाये—

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ! ॥

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि । एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

फलं तु सन्मुखं योज्यं यथोत्पन्नं तथार्पयेत् ॥
मध्यमानामिका मध्ये पुष्प सङ्गृह्य पूजयेत् ।
अंगुष्ठ-तर्जनीभ्यां च देवे पुष्पं निवेदयेत् ॥
(संस्कार बोधिनी)

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को दूर्वार्पण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा सिन्दूर अर्पण करवाये—

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख-वर्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शघनासो व्वात प्रमियः पतयन्ति यह्वाः । घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को सिन्दूर अर्पण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा नाना परिमलद्रव्य के रूप में अबीर-गुलाल आदि का अर्पण करवाये—

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च ।
अबीरेणार्चितो देव ! अतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्ज्याया हेतिम्परि बाधमानः । हस्तघ्नो व्विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान्पुमाᳬ सम्परिपातु व्विश्वत ÷ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नाना परिमल द्रव्याणि समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को नाना परिमल द्रव्यादि अर्पण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक और मन्त्र द्वारा प्रज्वलित धूप अर्पण करवाये—

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व योऽस्मान् धूर्व्वतितं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः । देवानामसि वन्हितमᳬ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री सिद्धि बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि ।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया ।
दीपं गृहाण विघ्नेश ! त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं समर्पयामि [दर्शयामि]।

दीपार्पण के पश्चात आचार्य गणेशाम्बिका के लिए, पूजन कर्ता से निम्न श्लोक द्वारा नैवेद्यार्पण करवाये:—

अनेकस्वादु संयुक्तं नानाफल समन्वितम्।
मोदकं पायसं चैव गृहाण विघ्नेश्वर ! ॥

श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।

नैवेद्यार्पण के पश्चात् गणेशाम्बिका के लिए आचार्य निम्न श्लोकों द्वारा पूजनकर्ता से आचमनार्थ जल का अर्पण करवाये: —

अति तृप्तिकरं तोयं सुगन्धि च विवेच्छया।
त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि ॥ १ ॥
गणाधिप ! नमस्तुभ्यं गौरीसुत गजानन ! ।
गृहाण आचमनीयं त्वं सर्वसिद्धि प्रदायकं ! ॥ २ ॥

श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनं समर्पयामि।

आचमन करवाने के पश्चात् आचार्य गणेशाम्बिका के लिये पूजनकर्ता से निम्न श्लोक द्वारा ऋतुफल का अर्पण करवाये:—

इदं फलं मया देव ! स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिः भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलं समर्पयामि ।

ऋतुफल अर्पण के पश्चात् गणेशाम्बिका के लिए आचार्य ताम्बूलादि निम्न श्लोक द्वारा पूजनकर्ता से अर्पण करवाये:—

पूगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् ।
एलादि-चूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ताम्बूलं समर्पयामि ।

ताम्बूल अर्पण के पश्चात् आचार्य गणेशाम्बिका के लिए दक्षिणा-द्रव्य निम्न श्लोक द्वारा अर्पण करवाये:—

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को दक्षिणा द्रव्य अर्पण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए सुगन्धित इत्रादि निम्न श्लोक द्वारा अर्पण करवाये:—

स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वर दयानिधे ! ।
भक्त्या दत्तं मया देव ! स्नेहं ते प्रतिगृह्यताम् ॥

गणेशाम्बिका को सुगन्धित इत्रादि अर्पण के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक द्वारा (पुष्पाक्षत्-चन्दनयुक्त जलादि) विशेषार्घ्य प्रदान करवाये:—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष ! रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ! ।
भक्तानां भयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो ! षाण्मातुराग्रज प्रभो !
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ! ॥
अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा नम ।

श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को विशेषार्घ्य प्रदान करवाने के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक द्वारा आरती करवाये:—

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ।
त्वमेव सर्व ज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को आरती के पश्चात् आचार्य गणेशाम्बिका के लिए निम्न श्लोक द्वारा पूजनकर्ता के दोनों हाथों में पुष्प देकर पुष्पांजलि प्रदान कराये :—

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण विघ्नेश्वर ! ॥

श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

गणेशाम्बिका को पुष्पाञ्जलि के पश्चात् आचार्य गणेशाम्बिका के लिए पूजनकर्ता से निम्न श्लोकों द्वारा प्रदक्षिणा करवाये और प्रार्थना करवाये:—

यानि कानि च पापानि ज्ञाता ज्ञात कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ॥

श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

—: प्रार्थना :—

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ ! नमो नमस्ते ॥१॥

भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते ॥ २ ॥
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति शकलेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥ ३ ॥
लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

अनया पूजया श्री सिद्धि-बुद्धि सहित गणेशाम्बिके प्रीयेताम्।

॥ इति गणेशाम्बिका पूजनम् ॥

❋ कलश-स्थापनम् ❋

आचार्य कुंकुमादि से पवित्र भूमि पर अष्टदल पद्म (कमल) का निर्माण कर पूजनकर्ता को भूमि स्पर्श निम्न श्लोक द्वारा करवाये:—

ॐ पृथ्वि ! त्वा धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।
कलशाधारभूतं हि पवित्रं कुरू चासनम् ॥

भूमि स्पर्श के पश्चात् आचार्य पूजन कर्ता से भूमि पर निम्न श्लोक द्वारा धान्य छुड़वाये :—

यवोऽसि धान्यराजस्त्वं सर्वोत्पत्तिकरः शुभः ।
प्राणिनां जीवनोवायः कलशाधः क्षिपाम्यहम् ॥

धान्य के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से धान्य पुञ्ज पर निम्न श्लोक द्वारा कलश स्थापन करवाये:—

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकला ।
सङ्गृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन उच्यते ! ॥

कलश स्थापन के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश में शुद्ध जल को भरवाये निम्न श्लोक द्वारा:—

आपस्त्व मसि देवेश ! ज्योतिषांपतिरव्यय ! ।
भूतानां जीवनोपायः कलशे पूरयाम्यहम् ॥

कलश में जल भरवाने के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश में गन्ध छुड़वाये:—

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ १ ॥
श्री खण्डंचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुगन्धाय कलशे संक्षिपाम्यहम् ॥ २ ॥

गन्ध के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश में सर्वौषधि निम्न श्लोक द्वारा छुड़वाये: —

सर्वौषधयः सुगन्धाढ्या दिव्यवृष्टि समुद्भवा ।
कलशाप्यायनकरा मङ्गलाय क्षिपाम्यहम् ॥

सर्वौषधि के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश में दूर्वा निम्न श्लोक द्वारा छुड़वाये: —

दूर्वे ! ह्यमृत सम्पन्ने शतमूले शताङ्कुरे ।
शतं मे हर पापानि शतमायुः विवर्धिनी ॥

दूर्वा के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश में पञ्चपल्लव निम्न श्लोक द्वारा छुड़वाये: —

यज्ञीयवृक्ष सम्भूतान् पल्लवान् सरसाञ्छुमान् ।
अलङ्काराय पञ्चैतान् कलशे संक्षिपाम्यहम् ॥

पञ्चपल्लव के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश में पञ्चरत्न निम्न श्लोक द्वारा छुड़वाये : —

रत्नगर्भामर्वादूर्मी रत्नगर्भाढ्य भूधरा ।

कलशोरत्नगर्भः स्यात् तस्माद्रत्नापहंक्षिपेत् ॥

पञ्चरत्न के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश में पुष्प निम्न श्लोक द्वारा छुड़वाये :—

इदं फलं मया सम्यक् प्रक्षिपेत् कलशे यतः ।
तेनायं कलशः सम्यक् फलवानस्तु सर्वदा ॥

पुष्प के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश में द्रव्यादि निम्न श्लोक द्वारा छुड़वाये :

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदं कलशे संक्षिपाम्यहम् ॥

द्रव्य के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश पर वस्त्र अथवा रक्तसूत्र निम्न श्लोक द्वारा चढ़वाये :

शरण्ये सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम् ।
सुवेशधारि वस्त्रं हि कलशे वेष्टयाम्यहम् ॥

वस्त्र के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश पर पूर्णपात्र निम्न श्लोक द्वारा स्थापित करवाये :—

ध्यानपूर्ण इदं पात्रं स्थपितं कलशे यतः ।
तेनायं कलशः पूर्णः पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ! ॥

पूर्णपात्र स्थापन के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से कलश स्थापित करवा कर 'वरुण' का आवाहन निम्न श्लोक द्वारा करवाये :—

मकरस्थं पाशहस्तमर्णवांपतिमीश्वरम् ।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसांपतिम् ॥
अस्मिन् कलशे वरूणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि, भों वरुण ! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो भव ।

वरुणदेव आवाहन के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से तीर्थों का आवाहन निम्न श्लोकों द्वारा करवाये और पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार से पूजन करवाये :—

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ।
आयान्तु मम कार्यार्थं पापानां क्षयकारकाः ॥

तीर्थों के आवाहन के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से वरुण देव की प्रार्थना निम्न श्लोकों द्वारा करवाये :—

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ ! विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ! ॥
सान्निध्यं कुरु मे देव ! प्रसन्नो भव सर्वदा ।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथायनमोनमस्ते

ॐ वरुणाय नमः, अनया पूजया वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्ताम् ।

-: इति कलश स्थापनम् :-

❋ स्वस्ति-पुण्याह-वाचनम् ❋

पूजनकर्ता पूजनीय ब्राह्मणों के हाथ में जल देते हुए कहें—

शिवा आपः सन्तु ।

ब्राह्मण प्रत्युत्तर में कहें—सन्तु शिवा आपः ।

पूजनकर्ता कहें—सौमनस्यमस्तु ।

ब्राह्मण कहें—अस्तु सौमनस्यम् ।

पूजनकर्ता कहें—अक्षताः पान्तु, गन्धाः पान्तु ।

ब्राह्मण कहें—आयुष्यमस्तु ।

पूजनकर्ता कहें—पुष्पाणि पान्तु ।

ब्राह्मण कहें—श्रीरस्तु ।

पूजनकर्ता कहें—ताम्बूलानि पान्तु ।

ब्राह्मण कहें—ऐश्वर्यमस्तु ।

पूजनकर्ता कहें—दक्षिणाः पान्तु ।

ब्राह्मण कहें—आरोग्यमस्तु ।

पूजनकर्ता ब्राह्मण से कहें—

पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो बहुपुत्रं बहुधनं चास्तु । यं कृत्वा सर्ववेदक्रिया रम्भाः शोभना प्रवर्तन्ते तमह मोकारमादिं यं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वणाशीर्वचनं बहुऋषिमतं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं-पुण्याहं वाचयिष्ये ।

ब्राह्मण कहें—वाच्यताम् ।

पूजनकर्ता पुनः कहें—व्रतनियम-तपः-स्वाध्याय क्रतुदमदान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राम्हणानां मनः समाधीयताम् ।

ब्राम्हण कहें — समाहित मनसः स्मः ।

पूजनकर्ता कहें — प्रसीदन्तु भवन्तः ।

ब्राम्हण कहें — प्रसन्नाः स्मः ।

तदनन्तर पूजनकर्ता को आचार्य घुटने मुड़वाकर बैठाये और कमलवत् हस्ताञ्जलि करवा कर जलपूर्ण कलश धारण करवाये और पूजनकर्ता के सम्मुख दो मृत्तिकापात्र अथवा ताम्र पात्र भूमि पर स्थापित करवाये (दाहिने और बायें) प्रथम दाहिने पात्र में थोड़ा-थोड़ा जल गिरवाते हुए निम्न वाक्यों का उच्चारण करेः —

ॐ शान्तिरस्तु, ॐ पुष्टिरस्तु, ॐ वृद्धिरस्तु, ॐ ऋद्धिरस्तु, ॐ अविघ्नमस्तु, ॐ आयुष्यमस्तु, ॐ आरोग्यमस्तु, ॐ शिवमस्तु, ॐ शिवं कर्मास्तु, ॐ कर्म समृद्धिरस्तु, ॐ पुत्र समृद्धिरस्तु, ॐ वेद समृद्धिरस्तु, ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु, ॐ धनधान्य समृद्धिरस्तु, ॐ इष्ट सम्पदस्तु, ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु, ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु ।

तत्पश्चात् आचार्य द्वितीय बायें पात्र में पूजनकर्ता से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवाये : —

यत्पापमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु ।

तत्पश्चात् आचार्य प्रथम दाहिने पात्र में पूजनकर्ता से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवाये :—

उत्तरोत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु। उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। तिथिकरण-मुहूर्त-नक्षत्र-ग्रह-लग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। तिथिकरणे-सुमुहूर्ते-सुनक्षत्रे सुग्रहे-सुदैवते प्रीयन्ताम्। अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। माहेश्वरीपुरोगा मातरः प्रीयन्ताम्। वशिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। अरुन्धती पुरोगाः एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ऋषयश्छन्दांस्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। अम्बिका-सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। माहेश्वरी प्रीयताम्। भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवती

तुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

तत्पश्चात् आचार्य द्वितीय बायें पात्र में पूजनकर्ता से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवाये :—

हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। हताश्च विघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवं यान्तु। शाम्यन्तु घोराणि। शाम्यन्तु पापानि। शाम्यन्त्वीतयः।

तत्पश्चात् आचार्य प्रथम दाहिने पात्र में पूजनकर्ता से निम्न वाक्योच्चारण द्वारा जल गिरवाये:—

शुभानि वर्द्धन्ताम्। शिवा आपः सन्तु। शिवा ऋतवः सन्तु। शिवा अग्नयः सन्तु। शिवा आहुतयः सन्तु। शिवा वनस्पतयः सन्तु। शिवा अतिथयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

निकाये निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्। योगक्षेमो नः कल्पताम्।

शुक्राङ्गारक बुध-बृहस्पति शनैश्चर राहु-केतु सोमादित्यसहिताः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्।

भगवान् नारायणः प्रीयताम् । भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम् । भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम् ।

पुरोनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु । याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु । वषट् कारेण यत्पुण्यं तदस्तु । प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु ।

तत्पश्चात् आचार्य जलपूर्ण कलश (घट) को पूजनकर्ता से पृथ्वी पर रखवा दे और प्रथम दाहिने पात्र के जल से पूजन-कर्ता तथा उसके परिवार के लोगों का अभिषेचन करे और द्वितीय बायें पात्र के जल को वहाँ से कहीं अन्यत्र लेजाकर गिरवादे या रखवा दे ।

तत्पश्चात् पूजनकर्ता ब्राह्मणों से निम्न वाक्यों को कहे:—

ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादन कारकम् ।
वेदवृत्तोद्भवं पुण्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य-सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

तत्पश्चात् ब्राह्मण पूजनकर्ता से तीनबार निम्न वाक्य कहें:—

ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम् ।
ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः ।

पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥

तत्पश्चात् पूजनकर्ता ब्राह्मणों से निम्न वाक्य कहें:—

ॐ पृथिव्यां उद्धृता यान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम् ।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैः तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य-सपरिवारस्य भवन्तो ब्रुवन्तु ।

तत्पश्चात् ब्राह्मण पूजनकर्ता से तीन वार निम्न वाक्य कहें—

ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम् ।

तत्पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से निम्न उच्चारण करवाते हुए कहवाये :—

सागरस्य च या लक्ष्मीर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य-सपरिवारस्य गृहे ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

तत्पश्चात् ब्राह्मण प्रत्युत्तर में तीन वार निम्न वाक्य कहें:—

ॐ कर्म ऋद्ध्यताम्, ॐ कर्मऋद्ध्यताम्, ॐ कर्म ऋद्ध्यताम् ।

तत्पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से निम्न श्लोक और वाक्य कहवाये:--

स्वस्त्यस्तु ह्यविनाशाख्या नित्यं मङ्गलदायिनीम् ।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य-सपरिवारस्य गृहे स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

तत्पश्चात् ब्राह्मण प्रत्युत्तर में तीनबार निम्न वाक्य कहें:--

ॐ स्वस्ति, ॐ स्वस्ति, ॐ स्वस्ति ।

तत्पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता निम्न श्लोक और वाक्य कहवाये :—

समुद्रमथनाज्जाजा जगदानन्दकारिका ।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य-सपरिवारस्य गृहे श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

तत्पश्चात् ब्राह्मण प्रत्युत्तर में तीन बार निम्न वाक्य कहें :—

ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तुश्रीः ।

तत्पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता को तिलक कर आशीर्वाद निम्न वेदमन्त्र और श्लोक द्वारा प्रदान करे:—

तिलक—

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा

विश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्ट नेमिः स्वस्ति-नो बृहस्पतिं दधातु ॥

आशीर्वाद—

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते । धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥

तत्पश्चात् आचार्य निम्न सङ्कल्प द्वारा ब्राह्मणों को पूजनकर्ता की शक्ति के अनुसार दक्षिणा दिलावाये :-

ॐ अद्य पुण्याह वाचन साङ्गता सिद्ध्यर्थं पुण्याह वाचकेभ्यो नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां यथाशक्ति हिरण्य मूल्य द्रव्य दक्षिणां सम्प्रददे ।

-: इति स्वस्ति-पुण्याह-वाचनम् :-

❋ षोडश मातृका पूजनम् ❋

आचार्य लकड़ी के पीढ़े पर अथवा चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर सोलह कोष्ठों का निर्माण करे और प्रत्येक कोष्ठ में गोधूम या अक्षत पुञ्ज रख उनके ऊपर एक-एक सुपारी रखे और पूजनकर्ता से निम्न श्लोक का उच्चारण करवाये और अक्षत छुड़वाये:—

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृकाभ्यो नमः, इहागच्छत इहतिष्ठत ॥

ॐ गौर्यादि षोडशमातृकाभ्यो नमः।

उपरोक्त गौर्यादिषोडश मातृकाओं का पूजन पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार से आचार्य पूजनकर्ता से करवाये और पूजन के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से निम्न प्रार्थना करवाकर अक्षत छुड़वाये :—

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः, अनया पूजया गौर्यादि षोडशमातरः प्रीयन्ताम्।

-: इति षोडशमातृका पूजनम् :-

❀ सप्तघृत-मातृका-पूजनम् ❀

आचार्य पूजनकर्ता से लकड़ी के पीढ़े पर श्वेतवस्त्र बिछवा कर उसे रक्तसूत्र या कच्चे सूत से बँधवा दे और घृतयुक्त सिन्दूर से सात बिन्दियाँ अङ्कित करवा दे (बिन्दियाँ क्रमानुसार रहेंगी, ऊपर से नीचे तक) तथा पूजनकर्ता के हाथों में अक्षत् पुष्पादि देकर निम्न श्लोक द्वारा षोडशोपचार अथवा पञ्चोपचार से पूजन करवाये :—

श्रीश्च लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा सरस्वती ।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तघृत मातृकाभ्यो नमः, इहागच्छत इहतिष्ठत ॐ सप्तघृत मातृकाभ्यो नमः।

तत्पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से निम्न श्लोक द्वारा हाथ जुड़वाकर प्रार्थना करवाये और अक्षत् छुड़वाये : —

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ १ ॥

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधार हेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृतः ॥ २ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तघृत मातृकाभ्यो नमः, अनया पूजया सप्तघृत मातरः प्रीयन्ताम् ।

-: इति सप्तघृत मातृका पूजनम् :-

❋ आयुष्य मन्त्र जपः ❋

आचार्य अपने यजमान (पूजनकर्ता) की आयु वृद्धि के निमित्त निम्न श्लोक और वेदमन्त्रों का एकाग्रचित होकर पाठ करे :—

ॐ यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्त जीविषु ।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥
दीर्घा नागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः ।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम् ॥
सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च ।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम् ॥
ॐ आयुष्यं वर्चस्यर्ठ० रायस्पोषमौद्भिदम् ।
इदर्ठ० हिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाविशता दुमाम् ॥

ॐ यदा बध्नन् दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानी-
काय सुमनस्यमानाः। तन्म ऽआबध्नामि शत
शारदाया युष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥

—: इति आयुष्य मन्त्र जपः :—

❀ नान्दी श्राद्धम् ❀

आचार्य पूर्व की तरफ विश्वेदेव के आसन स्थान पर कुशा उत्तराग्र रखे तथा तीन आसन दक्षिण पूर्वाग्र क्रमानुसार रखें। आसनों की दूरी अधिक न हो, केवल आसन एक दूसरे से आपस में सटे न रहें।

तत्पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से उन स्थापित आसनों पर विश्वेदेव सहित उसके पितरों की पूजा निम्न प्रकार [1] सव्य से ही आरम्भ करवाये, सर्वप्रथम आचार्य पूजनकर्ता के मस्तक तथा श्राद्ध सामग्री पर पवित्रीकरण हेतु निम्न श्लोक द्वारा जल छिड़कवाये :—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

१—सव्यः- अनस्मदवृद्ध शब्दानां अरूपाणां अगोत्रिणाम्।
अनाम्नां अतिलाद्य श्च नान्दीश्राद्धं च सव्यवत् ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।

तत्पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से यव, कुश, जल द्वारा निम्न सङ्कल्प करवाये :

ॐ अद्यामुकगोत्राणां मातृ-पितामही-प्रपितामहीनां अमुकाऽमुकीदेवीनां नान्दीमुखानां तथा अमुकाऽमुकगोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां-अमुकामुकगोत्राणां मातामह-प्रमातामह-वृद्ध-प्रमातामहीनांअमुकामुकशर्मणां सपत्नीकानां नान्दीमुखानांअमुकगोत्रस्याऽमुकप्रवरस्याऽमुक-शर्मणः नान्दीमुखश्राद्धकर्मणि सांकल्पिकेन श्राद्ध-महं करिष्ये ।

सङ्कल्प के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से पादप्रक्षालनार्थं निम्न क्रमानुसार जल प्रदान करवाये : —

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः । ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं

वः पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वःपाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नी-काः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

पाद प्रक्षालन के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से पितरों के निमित्त आसन निम्न क्रमानुसार प्रदान करवाये:

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमेआसने वो नमः। मातृ-पितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमेआसने वो नमः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमेआसने वो नमः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमाता-महाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमेआसने वो नमः।

आसन प्रदान के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से पितरों के निमित्त जल, वस्त्र, यज्ञोपवीत, रोली, अक्षत्, पुष्प, धूप, नैवेद्य,

ऋतुफल, ताम्बूल, लवङ्ग, इलायची, सुपारी तथा सुगन्धित इत्र आदि निम्न क्रमानुसार प्रदान करवाये :—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दी-मुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धाप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

गन्धादि दान के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से विश्वेदेव सहित पितरों के निमित्त भोजन निष्क्रय की दक्षिणा निम्न क्रमानुसार प्रदान करवाये :—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा

सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दी मुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्त आमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्त आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं आमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रुपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धि।

भोजन निष्क्रय निमित्त दक्षिणा प्रदान के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से निम्न क्रमानुसार दुग्ध सहित यवादि प्रदान करवाये :—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दी-मुख्यः प्रीयन्ताम्। ॐपितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ॐ मातामह-प्रमातामह-

वृद्ध-प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ।

दुग्ध सहित यवादि वितरण करवाने के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से क्रमशः जल, पुष्प, अक्षतादि निम्न क्रमानुसार प्रदान करवाये :—

ॐ शिवा आपः सन्तु, ॐ सौमनस्यमस्तु, ॐ अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु ।

जल, पुष्प और अक्षतादि अर्पण करवाने पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से सभी पितरों के निमित्त दाहिने हाथ के अँगूठे की तरफ से निम्न वाक्य द्वारा जलधारा अर्पण करवाये :—

ॐ अघोराः पितरः सन्तु ।

जलधारा प्रदान करवाने के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से हाथ जुड़वाकर उसके पितरों की निम्न क्रमानुसार वन्दना करवाये :—

ॐ गोत्रन्नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च । श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु ।

अन्नं च नो बहु भवेत् अतिथींश्च लभेमहि । याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ।

एताः सत्या आशिषः सन्तु ।

वन्दना करवाने के पश्चात् आचार्य और पूजन स्थल पर उपस्थित ब्राह्मण पूजनकर्ता को निम्न वाक्य द्वारा आशीर्वाद अ.ंण करें :—

सन्त्वेताः सत्या आशिषः ।

आशीर्वाद देने के पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से विश्वेदेव सहित पितरों के निमित्त आँवला, मुनक्का, यव तथा आदी (अदरख) मूलादि अलग-अलग निम्न क्रमानुसार वितरण करवाये :—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दी मुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षा आमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दी मुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्-ध्यर्थं द्राक्षा आमलक यव मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे । ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं

द्राक्षा आमलक यव मूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे ।

नोट:—यदि सामग्रियों का किसी कारण से अभाव रहे तो पूजनकर्ता दक्षिणा वितरण कर दें !

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । ऊभि देवाँ२ ॥ इयक्षते । ॐ इडामग्ने पुरुदꣳ सꣳ सनिं गोः शश्वत्तमꣳ हवमानाय साध । स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमति-र्भूत्त्वस्मे ॥

दक्षिणादि प्रदान करने के पश्चात् पूजनकर्ता आचार्य तथा ब्राह्मणों से नान्दी श्राद्ध की सम्पन्नता हेतु निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए पूछे :—

अनेन किं नान्दी श्राद्धं सम्पन्नम् ? ।

तत्पश्चात् आचार्य तथा अन्य उपस्थित ब्राह्मण पूजनकर्ता से आनन्द पूर्वक निम्न वाक्य कहें :—

निश्चितं सुसम्पन्नम् ।

तत्पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता से विश्वेदेवा सहित पितरों का विसर्जन निम्न वेदमन्त्रों द्वारा करवाये :

ॐ वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्राऽ अमृता ऽऋतज्ञा: । अस्य मद्ध्व÷ पिबत माद-यद्ध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥ १ ॥

ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्या देमे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे । आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात् ॥ २ ॥

ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ।

विसर्जन के पश्चात् पूजनकर्ता आचार्य तथा ब्राह्मणों से निम्न वाक्य कहें :—

अद्य मया आचरिते साङ्कल्पिक नान्दी श्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधि: स उपविष्ट ब्राह्म-णानां वचनात् परिपूर्णोऽस्तु ।

पूजनकर्ता द्वारा कहे गये वाक्यों का प्रत्युत्तर आचार्य और ब्राह्मण निम्न वाक्य द्वारा दें :—

अस्तु परिपूर्ण: ।

-: इति नान्दी श्राद्धम् :-

❋ आचार्यादि वरणम् ❋

पूजनकर्ता अपने आचार्य को उत्तराभिमुख अथवा पूर्वाभिमुख आसन पर बैठाकर गन्ध-अक्षत् और पुष्पादि से आचार्य का पूजन करे तथा निम्न सङ्कल्प द्वारा आचार्य का वरण करे:—

ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक प्रवरान्वितः अमुकनाम शर्माऽहं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक प्रवरान्वितं शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेय माध्यन्दिनीय शाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं (आचार्य) अस्मिन् वास्तुशान्ति कर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वां अहं वृणे।

पूजनकर्ता से आचार्य निम्न वाक्य कहें :—

वृतोऽस्मि।

तत्पश्चात् पूजनकर्ता आचार्य को हाथ जोड़कर निम्न श्लोक द्वारा प्रार्थना करे :—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत ! ॥

आचार्य प्रार्थना के पश्चात् पूजनकर्ता ब्रह्मा का वरण निम्न वाक्यों द्वारा करे :—

ॐ अद्य अस्मिन् वास्तुशान्ति कर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं त्वां अहं वृणे ।

तत्पश्चात् ब्रह्मा का वरण ग्रहण करने वाले ब्राह्मण को निम्न वाक्य कहना चाहिये :—

वृतोऽस्मि ।

तत्पश्चात् पूजनकर्ता ब्रह्मा को हाथ जोड़कर निम्न श्लोक द्वारा प्रार्थना करे :—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्माभव द्विजोत्तम ! ॥

ब्रह्मा की प्रार्थना के पश्चात् पूजनकर्ता ऋत्विक् वरण निम्न वाक्य द्वारा करे और गन्धाक्षत्-पुष्पादि ब्राह्मणों के हाथों में प्रदान कर दे :—

ॐ अद्य अस्मिन् वास्तुशान्ति कर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन त्वां अहं वृणे ।

तत्पश्चात् ऋत्विक् वरण ग्रहणकर्ता ब्राह्मण निम्न वाक्य कहें :—

वृतोऽस्मि ।

तत्पश्चात् पूजनकर्ता ब्राह्मणों को हाथ जोड़कर निम्न श्लोकों द्वारा प्रार्थना करे —

भगवन् सर्वधर्मज्ञ ! सर्वधर्म परायण ! ॥
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥१॥

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥२॥

तत्पश्चात् आचार्य पुनः दोनों हाथ जोड़कर आचार्य ब्रह्मा तथा अन्य वृणीत ब्राह्मणों की स्तुति निम्न श्लोक द्वारा करे :—

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ।
देवध्यानरताः नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥
अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः ।
मयाऽपि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥
ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन् ।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः ॥
अस्मिन्कर्मणि ये विप्राः वृता गुरुमुखादयः ।
सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं स्वं कर्म यथोदितम् ॥

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ॥
यथाविहितं कर्म कुरु (एकतन्त्रपक्षे-कुरुत) ।
विप्रः-यथाज्ञानं करवाणि (करवामः) ॥

—ः इति आचार्यादि वरणम् ः—

❀ रक्षा-विधानम् ❀

आचार्य बायें हाथ में पीली सरसों और तीन तार की मौली लेकर अपने दाहिने हाथ से ढँक कर निम्न श्लोकों का उच्चारण करें :—

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् ।
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम् ।
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥
शक्राद्याः देवताः सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान् ।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ॥

वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् ।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ॥
विद्याधिकाः ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः ।
तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा ॥

इसके पश्चात् आचार्य निम्नमंत्र पढ़ कर, चारों ओर सभी दिशाओं में सरसों छिड़के :—

पूर्वे रक्षतु गोविन्दः आग्नेय्यां गरुणध्वजः ।
याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तुनैर्ऋते ॥
वारुण्यां केशवो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः ।
उत्तरे श्रीधरो रक्षेदैशान्यांतु गदाधरः ॥
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः ।
एवं दशदिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ॥
शंखो रक्षेच्च यज्ञाग्रे पृष्ठे खड्गस्तथैव च ।
वाम पार्श्वे गदा रक्षेद्दक्षिणे तु सुदर्शनः ॥
उपेन्द्रः पातु ब्रह्माणमाचार्य्यं पातु वामनः ॥
अच्युतः पातु ऋग्वेदो यजुर्वेदमधोक्षजः ।
कृष्णो रक्षतु सामानि ह्यथर्वं माधवस्तथा ॥
उप विष्टाश्च ये विप्रास्तेऽनिरुद्धेन रक्षिताः ।

यजमानं सपत्नीकं कमलाक्षश्च रक्षतु ॥
रक्षा हीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षताद्धरिः ।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ॥
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।
अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ॥
ये भूताविघ्न कर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् ॥
सर्वेषामविरोधेन शांतिकर्म्म समारभे ।
भूतप्रेतपिशाचाद्य स्त्वपक्रामन्तु राक्षसाः
स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवमिमाम्

इति रक्षा विधानम्

❋ पञ्चगव्य करण ❋

तत्पश्चात् आचार्य गायत्री मन्त्र पढ़ करके गोमूत्र 'गन्ध द्वारा' इस मन्त्र से गोबर, 'आप्यायस्व' इस मन्त्र से दूध 'दधि क्राव्णों' इस मन्त्र से दधि, 'घृतं मिमिक्ष' इस मन्त्र से घृत 'आपो हिष्ठाः' इस मन्त्र से कुशोदक एक पात्र में लेकर 'प्रणव' का उच्चारण कर, यज्ञ काष्ठ से मिलावें और प्रणव मन्त्र से उसे अभिमन्त्रितकर 'आपो हिष्ठा' इस मन्त्र के द्वारा उसे सम्पूर्ण घर में छिड़के। तत्पश्चात् आचार्य इस मन्त्र का पाठ करे :—

स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः । स्वस्ति न स्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥

इसके पश्चात् हवन के लिए आचार्य स्थण्डिल (यज्ञ वेदी) का निर्माण करें और उसे विविध रंगों से अलंकृत करे, इस यज्ञ वेदी के पूर्व में ग्रह वेदी तथा घर के ईशान भाग में वास्तु वेदी का निर्माण करे ।

इति पञ्चगव्य-करणम् ।

❋ अग्निस्थापनम् ❋

तीन कुशाओं से पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा अथवा दक्षिण दिशा से उत्तर दिशा की तरफ तीन वार परिस मूहन कर उन कुशाओं को ईशान कोण में छोड़ दे । फिर जल मिश्रित गोबर लेकर उदक् संस्थ (दक्षिण से उत्तर) या प्राक् संस्थ तीन वार कुण्ड या वेदी का लेपन करे । फिर 'स्रुव' नामक यज्ञीय हवन करने वाले पात्र से प्रादेश प्रमाण या स्थण्डिल प्रमाण प्रागग्र पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा की ओर छः छः अंगुल व्यवहित कर उल्लेखन-क्रम से अनामिका और अंगूठे से जहाँ रेखा दी है, उन रेखाओं से एक वार वहाँ की मिट्टी दाहिने हाथ में रख ईशान कोण में फेंक दे । मुष्टिकृत नीचे को हाथ कर जल से अभ्युक्षण कर बिना धूम वाली अग्नि को स्वाभिमुख मध्य में ही अग्नि कोण में रख वहीं पर आमाद और क्रव्याद

नामक दो अंगारों को त्याग अवशिष्ट अग्नि को मध्य में स्थापन करे। अर्थात् आमाद तथा क्रव्याद को स्थण्डिल के बाहर न न निकालें, इसके पश्चात आचार्य इस वैदिक मंत्र द्वारा अग्नि का स्थापन करवाये :—

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँऽआसादयादिह।

इति अग्निस्थापनम्

❀ [1]नवग्रह स्थापन एवं पूजन ❀

एक हाथ लम्बी और एक हाथ चौड़ी काष्ठ चौकी अथवा पीढ़े पर श्वेत वस्त्र बिछाकर आचार्य ग्रहमण्डल का निर्माण कर सूर्यादि ग्रहों का स्थापन एवं पूजनकर्ता से निम्नप्रकार पूजन करवायें: —

सूर्य:—

जपाकुसुम सङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यं आवाहयाम्यहम्॥

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

१— ग्रहाणां पूजनं तत्र कारयेद्व्रदकोपरीति विश्वकर्मोक्तेः ग्रह तारा बलं लब्ध्वा ग्रह पूजा विधाय चेति मात्स्योक्तेश्चेति।

ॐ भूर्भुवः स्वः भो सूर्यः इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, सूर्यं आवाहयामि स्थापयामि ।

सोमः

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम् ।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोमं आवाहयाम्यहम् ॥

ॐ इमं देवाऽअसपत्नठं० सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठायाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममुमुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशाऽ एण वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाठं० राजा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो सोम ! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोमं आवाहयामि स्थापयामि ।

भौमः—

धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्तेजः समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौमं आवहयाम्यहम ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पति÷पृथिव्याऽ अयम् । अपाᳬरेताᳬसि जिन्वति ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो भौम । इहागच्छ इह-तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौमं आवाहयामि स्थापयामि

बुधः—

प्रियङ्गु कलिकामासं रूपेणऽप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधं आवाहयाम्यहम् ॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टा-पूर्ते सꣳ सृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अद्ध्यु-त्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो बुधः इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधं आवाहयामि स्थापयामि ।

गुरुः—

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चन सन्निभम् ।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुं आवाहयाम्यहम् ॥

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद् विभाति क्रतु मज्जनेषु । यदीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रग ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो गुरो । इहागच्छ

इह तिष्ठ ॐ गुरवे नमः, गुरू आवाहयामि स्थाप-यामि ।

शुक्रः—

हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं शुक्रं आवाहयाम्यहम ॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धसऽइन्द्र स्येन्द्रियमिदं पयोऽ-मृत मधु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो शुक्र । इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रं आवाहयामि स्थापयामि ।

शनिः—

नीलाम्बुजन्समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्ड-सम्भुतं शनिं आवाहयाम्यहम् ॥

ॐ शंनो देवी रभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये ।
शं यो रभिस्रवन्तु नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो शनैश्चरः । इहागच्छ

इहतिष्ठ ॐशनैश्चराय नमः, शनैश्चरं आवाहयामि स्थापयामि ।

राहुः –

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ॥
सिंहिका-गर्भ सम्भूतं राहुं आवाहयाम्यहम् ॥

ॐकया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो राहो ! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहु आवाहयामि स्थापयामि ।

केतुः –

पालाश-धूम्र-सङ्काशं तारकाग्रह-मस्तकम् ।
रोद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतु आवाहयाम्यहम् ॥

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्याऽअपेशसे। सभुषद्भि रजायथाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भो केतो । इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुं आवाहयामि स्थापयामि ।

इस प्रकार से आचार्य ग्रहों की स्थापना करवाये और शोडशादि यथोपलब्ध उपचारों से पूजन कर्ता से पूजन करवाये ।

इति नवग्रह स्थापन एवं पूजनम्

❀ असंख्यात् रुद्रपूजनम् ❀

कलश स्थापन विधि से आचार्य असङ्ख्यात रुद्र कलश की स्थापना करे, पूजन कर्त्ता अर्थात् (यजमान[1])से निम्नश्लोक और मन्त्र से रुद्र का ध्यान करवाये:—

रुद्रध्यान:—

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेश च त्रिलोचनम् ।
आवाहयामिश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम् ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः हे रुद्र इहागच्छ इह तिष्ठ
ॐ रुद्राय: नमः रुद्रं आवाहयामि स्थापयामि ।

इस प्रकार आचार्य आवाहन व स्थापन करवाये, फिर यथा विधि निम्न श्लोकों से रुद्र का पूजन पूजनकर्ता से क्रमानुसार करवाये:—

ध्यानम्: —

वृष वाहन ! सर्प-भूषण ! डमरू-बादक ! शुल-धारक ।
संततं हृदि चिन्तयामि त्वामयि गङ्गाधर!चन्द्रशेखर ॥

---

१ —दानवाचण्यान्वारम्भण वर वरण व्रत प्रमाणेषु यजमानं प्रतीया- दिति सूत्रार्कः ।

आवाहनम्:—

क्रियते करुणा निधे ! विभो ! गिरिशाऽवाहन-मद्यते मयाभगवन्निज-पाद-पङ्कजैः कुरू पूतं मम् सद्मपावनैः ॥

आसनम्:—

अयि रुद्र ! सुसज्जितं मयातव हेतोरिदमद्य-वासनम् ।
करूणेश गृहाण वर्धय निज-दासस्य-यशो-वितानकम्

पाद्यम्:—

अयि पाद्यमिदं प्रदीयते बहुभीतेन मया दयानिधे ।
करुणां कुरु गृह्यतांमिदं शिव!दूरी कुरू मामकं भयम्॥

अर्ध्यम्:—

करुणा यदि नाथ ते मयि यदि श्रद्धार्पितमेव गृह्यते ।
पुनरीश ! विलम्ब्यते कथं कथमर्घ्यन्त ममाद्य गृह्यते॥

आचमनीयम्:—

गिरिशोपहरामिते पुरो निजभक्त्या परिपूरितंसुद्रा ।
इदमाचमनीयमीश्वर ! करुणा दर्शय गृह्यतां प्रभो !॥

दक्षिणा:—

सर्वं त्वदियं मम् नास्ति किञ्चिद ।
ददामि किंम ते वद दक्षिणायां ॥

तथापि देवेश ! मयार्पितं त्वं।
स्वकीय मेवाद्य गृहाण नाथ ! ॥

नीराजनाः—

दयानिधिं वेत्ति न को जगत्यां।
लम्बोदरं त्वा वद दीन-बन्धो ! ॥
अजानताऽर्चा सरणीं मयाऽपि।
नीराजनाऽतः किल कल्प्यते ते ॥

परिक्रमाः—

पुनाति विश्वं हि परिक्रमा।
ते सुरा सुरैरर्चितपादपद्म ! ॥
अतो दया नाथ ! यथाविधं तां।
करोमि भक्त्यानत-मस्तकोऽहम् ॥

स्नानम्:—

मया ते प्रियं संभृतं गाङ्गमीश ! जलं पूत-पूतं त्वदर्थं त्रिनेत्र। प्रसीद प्रभो ! जटा जूट धारिन् ! कुरु स्नानमीशान ! देवाधिदेव ! ॥

मधुपर्कः—

अयि दैयामय ! देव ! समर्प्यते शिव ! हरे !

मधुपर्कलवस्त्व । पतितपावन ! पावन-पादयोरनु-गृहाण जपं कुरु मे विभो ! ॥

कुंकुमम्:--

श्रुतस्त्वं मयादीन बन्धुर्दयालुस्तथा चाशु-तोषः पुनःको विलम्बः । मया भक्तियुक्तेन दानेन दत्तं गृहाणाधुना कौङ्कुमं चूर्ण मेतत् ॥

धूपः —

इदं गन्धयुकं विभो ! धूपाजलं त्वदर्थं मया संभृतं किं नवाऽलम् । यदि स्यादिदं स्वीकृतं ह्याशुतोषं । यथार्थ भवेन्नाम् ते दीनबन्धो ! ॥

दीपः —

प्रदीपायसे त्वं जगत्यां दयालो ! प्रदीपः पुरस्ते ।
न शोभां दधाति विलोक्येश ॥
लोकस्य रीतिं तथापि महादेव ।
दीपं पुरस्ते अपर्यामि ॥

नैवेद्यम्: —

शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् ।
उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

ताम्बूलम्ः—

पूगीफलं महाद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युत्तम् ।
एलादि चूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

दक्षिणाः—

त्व मेवासि दाता विधाता दयालु दर्दामीश ! किं दक्षिणा व्याजतोऽहम् तथापीश ! मत्वा स्व-दासार्पितां तामिमां दक्षिणां दीनबन्धो ! गृहाण ॥

आरतीः—

कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्र हारम् । सदा वसन्तं हृदयारबिन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि ॥

पुष्पाञ्जलिः—

पुष्पविना मयि दयामव ! नास्ति किञ्चिद् दीनो ऽस्मि त्वं शरणोऽसि च माहशानाम् ।
कृत्वा महेश ! करुणामत एव दीने पुष्पाञ्जलि मम गृहाण दया विधातः ! ॥

प्रार्थनाः—

दीनं ज्वलन्मम मनो विषयाग्नि कुण्डे आकारयत्यतितमां किल दीनबन्धुम् ।

त्क्तोऽपरं कथय कं परमेश्वरं हा ! पायाद दयामय ! विभो ! शिव ! शूलधारिन !

इति रुद्र पूजनं समाप्त

❋ वास्तु वेदी-पूजनम् ❋

ग्रह पूजन और असंख्यात रुद्र का पूजन करवाने के पश्चात् आचार्य वास्तु वेदी के समीप आकर, वास्तु मण्डल के कोणों में ईशानादि क्रम से सकुओं का आरोपण करें।

शंकुरोपण मन्त्रः—

विशन्तु भूत लेनागा लोक पालाश्च सर्वतः।
अस्मिन गृहे ऽवतिष्ठन्तु आयुर्वल करा सदा॥

तत् पश्चात् रोपित सङ्कुओं के पास ईशानादि क्रम से ही ही दही उड़द और भात (चावल) की बलि रखें,

बलि देने का मन्त्रः--

ॐ अग्निभ्यो ऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्येतान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्य मोदन मुत्तमम्॥

इसके पश्चात् वेदी के ऊपर बिछे हुए वस्त्र कुंकुमादि से स्वर्ण की शलाका से पूर्व-पश्चिम, उत्तर, दक्षिण की ओर दस-दस रेखायें बनावें।

पुनः ईशान कोण वाले पद से आरम्भ कर शिल्यादि देवताओं का वास्तु मंण्डल में स्थापन करेः—

ॐशिखिने नमः शिखिनम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐपर्जन्याय नमः पर्जन्याय आवाहयामि स्थापयामि।
ॐजयन्ताय नमः जयन्तम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐकुलिशायुधायः कुलिशायुधायं
आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ सूर्याय नमः ॐसूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ सत्याय नमः सत्यम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ भृशाय नमः भृशम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ वायवे नमः वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ पूष्णे नमः पूष्णम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐवितथायनमः वितथम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ गृहत्क्षताय नमः गृहत्क्षतम्
आवाहयामि स्थापयामि।
ॐयमायनमःयमम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐगन्धर्वाय नमः गन्धर्वम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ भृंगराजाय नमःभृगराजम् आवाहयामि
स्थापयामि।

ॐ मृगाय नमः मृगम् आवाहयामि स्थापयामि ॥

ॐ पितृभ्योनमः पितृण् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ दौवारिका नमः दौवारिकम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ सुग्रीवाय:नमःसुग्रीवम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ वरुणाय नमः वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ पुष्पदन्ता नमः पुष्पदन्तम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ असुराय नमः असुरम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ शोषाय नमः नमः शोषम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ पापाय नमःपापम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ रोगाय नमः रोगम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ अहये नमः अहिम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ मुख्याय नमः मुख्यम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ भल्लायम् नमः भल्लाम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ सोमाय नमः सोमम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ सर्पाय नमः सर्पम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ आदित्यै नमः आदित्यम् आवाहयामि
स्थापयामि ।
ॐ दित्यै नमः दितिम् आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ मित्राय नमः मित्राम् आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ राजयक्ष्मणे नमः राजयक्ष्मणम्
आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ पृथ्वीधराय नमः पृथ्वीधरयै
आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ आपवत्साय नमः आपवत्सम्
आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ विदार्यै नमः विदार्यं आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ पूतनायै नमः पूतनायं आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ पापराक्षस्यै नमः पापराक्षस्मि आवाहयामि
स्थापयामि ।
ॐ स्कंदाय नमः स्कंदम्यै आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ अर्यम्णेनमः अर्यम्णं आवाहयामि स्थापयामि ।
ॐ जृंभकायनमः जृंभकम् आवाहयामि स्थापयामि ।

ॐ पिलिपिच्छायनमः पिलिपिच्छाम् आवाहयामि
स्थापयामि ।

ॐ उग्रसेनाय नमः उग्रसेनं आवाहयामि
स्थापयामि ।

ॐ डामराय नमः डामरं आवाहयामि
स्थापयामि ।

ॐ कालाय नमः कालं आवाहयामि स्थापया म ।

ॐ एकपदे नमः एकपदं आवाहयामि स्थापयामि ।

इस प्रकार से वास्तु मंडलस्थ देवताओं का आवाहन और स्थापन करके, निम्न श्लोकों के द्वारा आचार्य पूजनकर्ता से वास्तु मंडलस्थ देवताओं का पूजन करवाये:—

आवाहनः—

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशकाः
श्री प्रदवास्तु देवाः ।
आवाहनं वो वितनोमि भक्त्या
शिल्यादिका भव्यकरा भवन्तु ॥

आसनः—

चित्र प्रभाभासुरमच्छ शोभं
मयार्पितं शोभित मासनं च ।

शिख्यादिका भव्यकरा भजन्तु
भवन्तु मेऽभीष्टकराः सहाङ्गै ॥

पाद्यम्:—

कस्तुरिका सुरभि चन्दन युक्त
मेला चम्पाल वङ्गघनसार सुवासितं च ।
पाद्यं ददामि जगदेकनिवास वास्तु-देवाः
सदा सुखकराः प्रतिमानयन्तु ॥

अर्घम्:—

सौजन्य सौख्य जननी जननी जनानां
येषां कृपैव वसुधा वसुधारिणी मे ।
ते सर्व देवगुण पूरित वास्तु देवा अर्थ
सुखेन विमलं मम धारयन्तु ॥

आचमनीय:—

कङ्कोल पत्र चरि चन्दन पुष्पयुक्त
मेलाल वङ्गलवली घनसार सारम् ।
दत्तं सदैव हृदये करुणाशयेऽस्मिन देवा
भजन्तु शुभ माचनीयमम्भः ॥

पञ्चामृत स्नानः—

विमलगाङ्ग जलेन युतं पयो

घृतासितादधिसर्पि रूपान्वितम् ।
प्रियतरं भवतां परि गृह्यत यदि
कृपा भवतां मयि सेवके ॥

शुद्धोदक स्नानं:—

जले समादाय विचित्र पुष्पाण्यच्छानि
नव्यानि निपातितानि ।
स्नानं विधेयं विबुधाः
समन्तादागत्य युष्माभि रिहाङ्गणे ॥

वस्त्रः

अनर्घ्य रत्नै रति भासितानि
चेतोहराण्यद्‌भूत चिन्तितानि ।
शुभानि वस्त्राणि निवेदितानि
गृह्यन्तु हार्देन च वास्तुदेवाः ॥

यज्ञोपवितः

कोशेयसूत्र विहितं विमलं सुचारु
वेदोक्त रीति विहितं परिपावनं च ।
साङ्गा निवेदितमिदं लघु वास्तुदेवा
यज्ञोपवीत मुररी क्रियतां प्रसन्नाः ।

उपवस्त्रं:—

त्रिविधताप विनाश विचक्षणाः
परम भक्ति युतेन निवेदितम् ।
सुरनुता उप वस्त्र मिदं नवं सुरभितं
परिगृह्णत मेऽधुना ।

गन्धं:—

शिख्यादयो मलयजात सुगन्धराशिं
सप्रेम गृह्यतः सुशीतलमच्छशोभम् ।
सन्तापविस्तृतिहरं परम् पवित्रं द्रागर्पितं
मम् मनोरथ पूरकाः स्युः ।

अक्षत: -

शिख्यादयः केसर कुंकुमाक्तान्
भक्तया मया स्नेह समर्पितांश्च ।
गृह्णन्तु देवा द्रुतमक्षतान्मे
सर्वान्तरायान् विनिवर्तयध्वम् ॥

पुष्पं:—

बहुविधं परितो हि समाहृतं
समुचितं मकरन्दसमान्वितम् ।

विकसितं कुसुमं विनिवेदितं
कुरुत मे सफलं नयनाञ्चलैः ।

मौलीः—

सौभाग्य सौन्दर्य विवर्द्धनानि
शोणश्रियाऽऽनन्द विवर्धनानि ।
श्री रक्तचूर्णानि मयाऽर्पितानि
शिख्यादयोगृह्यतः वास्तु देवाः ॥

धूपं:—

लवङ्ग पाटीर सुगन्ध पूर्ण नरा
सुराणामपि सौख्यदं च ।
लोकत्रये गन्धमयं मनोज्ञं
गृह्यन्तु धूपं मम वास्तु देवाः ॥

दीपं:—

सद्वर्तिको घोर तमो पहन्ता
दीपो मया सत्वर मर्पितो वः ।
प्रज्वालितो वह्निशि खासमेतः
शिख्यादयो वेदविधानयुक्तः ॥

नैवेद्यः—

सिद्धान्नकर्पूर विराजमानं
सौरभ्यसान्द्रेण सुशोभमानाम् ।
नैवेद्य मेतस्सर सं पवित्रं स्त्रीकृत्य
मामत्र कृतार्थ यन्तु ॥

ताम्बूलः—

शिख्यादिकाः खलु समेत्य गृहं मदीयं
भक्त्यार्पितं परमगन्धयुतं सुरम्यम् ।
एलालवङ्ग बहुलं क्रमुकादियुक्तं
ताम्बूलकं भजत मंडपवास्तु देवाः ॥

दक्षिणाः—

देवासुरै नित्यमशेषकाले
प्रगीयगानाः प्रभवः पुराणाः ।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां मे
ध्यानेन भक्ते मयि वर्तितव्यम् ॥

आरतीः—

नीराजना सौख्य मयी सदैव
गाढ़ान्ध कारानपि दूरकर्त्री ।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं
करोति प्रिय मानवस्य ॥

प्रदक्षिणाः—

प्रदक्षिणाः सन्ति प्रदक्षिणा स्तथा
पदे पदे दुखविनाशिका अपि।
जन्मान्तरस्यापि विनाश कारिकाः
पापस्य याश्चित्त विवर्धितस्य ॥

पुष्पाञ्जलिः—

शिख्यादिका में खलु वास्तु देवा
गृह्णन्तु पुष्पांजलि मंत्र शीघ्रम्।
पीडा हरा भव्यकरा विशाला
भवन्तु भूयालन तत्पराश्च ॥

स्तुतिः—

जानामि नोऽर्चन विधिं परमं क्षमध्वं
लोकार्तिं पुञ्जमतुलं क्षपयन्तु नित्यम्।
शिख्यादिकाः सुविमलाः सुखमाकिरन्तु
कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितान् समन्तात् ॥

तत् पश्चात वास्तु मंडल के पूर्वादि अष्ट दिशाओं में इन्द्रादि देवताओं की स्थापना करे और वास्तु मण्डल के मध्य में कलश स्थापित कर उस कलश पर स्वर्णमयी दो प्रतिमाएँ जिनमें एक प्रतिमा वृष वास्तु की तथा द्वितीय प्रतिमा वास्तो-

स्थापित की होगी। उन्हें स्थापित करें। और निम्न मन्त्र से आचार्य उन मूर्तियों में देवता का आवाहन कर पूजन करें।

वास्तु देवता मन्त्र

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान
स्वावेशो अनमी वो भवानः।
यत्वे महे प्रतितन्नो जुषश्व शन्नोभव
द्विपदे शंचतुष्पदे स्वाहा॥

इसके पश्चात आचार्य वास्तु मंडल से ईशान कोण में एक कलश स्थापित कर पूजन कर्ता से वरुण का पूजन करावें।

इति वास्तुवेदी पूजनम्

❋ कुशकण्डिका ❋

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वंब्रम्हा भव 'भवामि' इति

ब्रह्मा के आसन पर ब्रह्मा को बैठा दे कहे हें ब्रह्मन जब तक कर्म की समाप्ति न हो तब तक आप ब्रह्मा पद पर आसीन हो। ब्रह्मा–मैं होता हूँ यो कह कर पूर्व स्थापित आसन पर

पठित्वा तत्रोपवेशनम् । 'भत्रामि' इति ब्रम्हणः प्रत्युक्तिः । ब्रम्हा वाग्यतश्च भवेत । ततः प्रणीतापात्रं सव्यहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तगृहीतेनोदकपात्रेण तत्र जलं सम्पूर्य पश्चादास्तीर्णकुशेषु दक्षिणहस्तेन निधाय (कुशैराच्छाद्य तत्पात्रमालभ्य ब्रम्हणोमुख मवलोक्य ईक्षणमात्रेण ब्रम्हणाऽनुज्ञातः—उत्तरत आस्तीर्णेषु कुशेषु निदध्यात् । ततो द्वादशानां परिस्तरण कुशानां चतुरो भागान् वामहस्तेकृत्वा एकैकभागेन आग्नेयादीशानान्तम्,ब्रह्मणोऽग्निपर्यतम् , नैर्ऋत्याद्वाय-

---

बैठे, तदनन्तर ब्रह्मा मौन हो जाये, फिर प्रणीता पात्र को बायें हाथ में धारण कर दाहिने हाथ से ग्रहण किये हुए, जलपात्र से उस प्रणीता पात्र में जल को भर के पहले से बिछी हुई कुशाओं पर दाहिने हाथ से रखकर (कुशो द्वारा आच्छादन कर) उस पात्र को स्पर्श कर ब्रह्मदेव के मुख को देखकर ईक्षण मात्र से ब्रह्मा की आज्ञा लेकर उत्तर दिशा की ओर बिछी कुशाओं पर रख दे, तदनन्तर बारह परिस्तरण कुशाओं के चार भागों को बायें हाथ में रख उसमें से एक-एक भाग से परिस्तरण अग्निकोण से ईशानादि में करे। तदनन्तर-पश्चिम

व्यान्तम्, अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। इतरथा वृत्तिः। तत उत्तरतः स्तीर्णकुशेषुद्विशः पात्राणि यथासम्भवं न्युब्जानि उदक्संस्थानि प्राक्संस्थानि वा सादयेत्। पवित्रे छेदनकुशाः। प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली। चरुस्थाली। संमार्जनकुशाः पञ्च: उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानि तत्तद्ग्रहवस्त्राणि। अधिदेवताद्यर्थं श्वेतानि। तत्तद्ग्रहचन्दनानि। अक्षतास्तद्ग्रहवर्णाः। तत्तद्ग्रहपुष्पाणि। तत्तद्ग्रहधूपाः। तत्तद्ग्रहनैवे-

---

दिशा से उत्तर की ओर बिछी कुशाओं पर दो-दो पात्रों को यथा सम्भव न्युब्ज-उदक् संस्थ या प्राक् संस्थ आसादन करे, दो पवित्र छेदन करने के लिए कुशा प्रोक्षणीपात्र आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जन कुशा पाँच, उपयन कुशा सात, तीन समिधा, स्रुव-घृत-चावल पूर्णपात्र-सूर्यादि ग्रहों के अनेक वर्ण के वस्त्र-अधिदेवता, देवता आदि के लिये सफेद वस्त्र, सूर्यादि ग्रहों के लिए अनेक प्रकार के चन्दन, तत्-तत् वर्ण के ग्रहों की धूप, ग्रहों के नैवेद्य-फल-दक्षिणा वितान सूर्यादि की समिधा यव और तिल, पूर्णाहुत्यर्थं नारिकेल और वस्त्र। तदन्तर

द्यानि। फलानि। दक्षिणाः। वितानम्। अर्का-दिसमिधः। सय वतिलाः। पूर्णाहुत्यर्थं नारि-केलवस्त्रादि। ततः पवित्र करणम्। तद्यथा-आसादितं कुशपत्र द्वयं स्थौल्येन समं मध्यशल्य रहितं। वामहस्ते कृत्वा अग्रतः प्रादेशमात्रं परि-माय मूले तयोरुपरि कुशात्रयमुदगग्रं निधाय तत्कुशत्रयं तयोर्मूलभागेनप्रदक्षिण्येन परिवेष्ट्य तयोः प्रादे शपरि माणमग्रभागं वामस्ते कृत्वा अवशिष्टं मूलभागंकुशत्रयं च दक्षिणहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन त्रोटयेत् परित्यजेच्च। शिष्टं पत्रद्वयं

पवित्र बनावे जैसे—स्थापित मध्य (वीच कुशा से रहित) शल्य रहित दो कुश पत्र द्वय को वरावर नापकर वायें हाथमें कर कुशा के अग्रभाग से प्रादेश मात्र नापकर उसके मूल पर उन दोनों कुशा के ऊपर तीन कुशाओं को उदगग्र रखकर उन कुशाओं को उस दो कुशा के मूल भाग से प्रादक्षिण्य क्रम से वेष्टन कर उन दो कुशपत्रों को प्रादेश मात्र परिमाण के अग्रभाग को बाये हाथ में कर वचे हुए मूल भाग को और तीन कुशाओं को दाहिने हाथ में धारणकर दाहिने हाथ से तोड़ दें। और त्याग दें, शिष्ट पत्र द्वय ही पवित्र हैं। उस

पवित्रम् । तस्मिन्पत्र द्वयेऽविश्लेषाय ग्रथिं कुर्यात। ततः प्रागग्रंप्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौनिधाय तत्र-सपवित्रेण पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकं त्रि-रासिच्यप्रोक्षणीपात्रं सव्ये कृत्वा दक्षिणेन वाम हस्तधृतमेवकर्णसमुत्थाय नीचैः कृत्वा प्रणीतोदकेन पवित्रानीतेनोत्तान हस्तेन प्रोक्षणीः प्रोक्षयेत् । ततः प्रोक्षणी जलेनआज्यस्थाली प्रोक्षणम् । चरु-स्थालीं, प्रोक्षणम् । समांर्जन कुशानां प्रोक्षणम् । उपयमकुशानां प्रोक्षणम् । समिधांप्रोक्षणम । स्रु-वस्य प्रोक्षणम् । आज्यस्य प्रोक्षणम् । पूर्णपात्रस्य

पत्र द्वय में अविश्लेषण के लिए गाँठ दें । तदनन्तर प्रागग्र प्रोक्षणीपात्र को प्रणीता के समीप रख वहाँ से सपवित्र पात्रान्तर हाथ से प्रणीता पात्र के जल को तीन वार आसेचन कर प्रोक्षणी पात्र को वायें हाथ में कर दाहिने से वाये हाथ से धारण किये हुए ही कान की तरफ उठाकर नीचे की तरफ कर प्रणीता पात्र के जल से पवित्र द्वारा ग्रहण किये हुए, उत्तान हाथ से प्रोक्षणी पात्र का प्रोक्षण करें । प्रोक्षणी जल से आज्यस्थाली का प्रोक्षण करें । चरुस्थाली का प्रोक्षण करे । संमार्जन कुशाओं का प्रोक्षण करे । उपयमन कुशाओं का, समि-

प्रोक्षणम् । ततस्ते पवित्रे प्रोक्षणी पात्रे संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्रमग्नि प्रणीतयोर्मध्ये निदध्यात् । ततोऽग्नेः पश्चादाज्यस्थालीं निधाध तत्राज्यं प्रक्षिपेत् एवं चरुस्थाली मग्नेः पश्चिमतो निधाय तत्र सप वित्रायां त्रिः प्रक्षालितान् तण्डुलान प्रक्षिप्य प्रणीतोदकमा सिच्योपयुक्तं जले तत्र निनीय ब्रम्हदक्षिणतआज्यम् आचार्य उत्तरतश्चरुमदग्ध-मस्रावितमण्डमन्तरुष्मापवक्कसुश्रृतंपचेत् । (केवला-ज्ये तु उत्तराश्रितामाज्यस्थालीमग्ना वारोपयेत्) । ततोऽग्नेर्ज्वलदुल्मुकमादाय ईशानादि प्रदक्षिणामी

घी का, स्रुवका आज्य का और पूर्ण पात्र का प्रोक्षण करे । तदनन्तर उन दोनों पवित्रों को प्रोक्षणी पात्र में स्थापन कर उस प्रोक्षणी पात्र को अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य में रख दे । फिर अग्नि के पीछे आज्य स्थायी रख उसमें आज्य का प्रक्षेप करें । इसी प्रकार अग्नि के पश्चिम् चरुस्थाली रख सप-वित्रवाली उसमें तीन वार धाये हुए चावलों का छोड़ प्रणीता-पात्र के जल से आसेचन कर उपयुक्त जल को उसमें छोड़कर ब्रह्मा के दक्षिण तरफ घी को आचार्य उत्तर दिशा से अदग्ध अस्रावित पक्व चरु को पका दे । तदनन्तर अग्निकुंड या

शान पर्यन्तमग्निमाज्यचर्वोः परितं भ्रामयित्वोल्मुकमग्नौ प्रक्षिप्य अप्रदक्षिणं हस्तमीशानकोणापर्यन्तं पर्यावर्तयेत। अर्द्धश्रिते चरौ स्रुवं गृहीत्वाऽधोबिलं सकृत प्रतप्य संमार्जनकुशानामग्रै रन्तरतः— उपरि मूलादारभ्याग्रपर्यन्तं प्राञ्चं संमृज्य कुश मूलैर्बहिरधः प्रदेश अग्रादारभ्य प्रत्यञ्चं सम्मृज्य संमार्जन कुशानग्नौ प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनः स्रुवं प्रतप्य दक्षिणस्यां दिशि तं

स्थण्डिल से जलते हुए, उल्मुक को लेकर ईशान आदि से प्रदक्षिण ईशान पर्यन्त अग्नि स्थित आज्य और चरू के चारों तरफ घुमकर उस उल्मुक को अग्नि में छोड़ दे। फिर अप्रक्षिण क्रम से अपने हाथ को ईशान कोण पर्यन्त घुमा दे। चरू के आधे पक जाने पर स्रुव को हाथ में ग्रहण कर उस स्रुव के बिल को नीचे की तरफ कर एक वार अग्नि में तपाकर संमार्जन कुशाओं के अग्रभाग से भीतर की तरफ से मूलभाग से आरम्भ कर अग्र भागपर्यन्त पूर्व की तरफ संमार्जन कर कुश मूलों से बाहर और नीचे के हिस्से में अग्रभाग से आरम्भ कर शुद्ध कर संमार्जन कुशाओं को अग्नि में फेंककर प्रणीता जल से स्रुव का अभ्युक्षण तथा स्रुव का प्रतपन कर दक्षिण दिशा की तरफ उस स्रुव को रख दे।

स्थापयेत्। ततः शृतं चरुं स्रुवेण गृहीतेनाज्ये-नाभिघार्य आज्यस्थालीं चरोः पूर्वेणानीयोत्तरत उद्वास्याग्नेः पश्चिमतः स्थापयेत्। ततश्चरुमादाय उत्तरत उद्वास्य आज्यस्य पूर्वेणानीय आज्यस्योत्त रतः स्थापयेत्। ततो दक्षिणहस्तस्याङ्गुष्ठानामि काभ्यां पवित्रयोर्मूलं सङ्गृह्य वामहस्तस्याङ्गुष्ठानामि काभ्यां तयोरग्रं संङ्गृह्य ऊर्ध्वाग्रेऽनम्रीकृत्यधारयन्ने वाज्ये प्रक्षिप्याज्यस्योत्पवनं कुर्यादुच्छालयेत्।

तदनन्तर पके हुए चरू में स्रुव के द्वारा घी को छोड़ आज्यस्थाली को चरू के पूर्व से ले आकर उत्तर दिशा की तरफ रख फिर अग्नि के पश्चिम दिशा की तरफ स्थापन करे। फिर चरू को लेकर उत्तर दिशा से उतारे हुए घी के पूर्व से ले आकर घी के उत्तर की तरफ स्थापन करे।

तदनन्तर—दाहिने हाथ के अंगूठे और अनामिका से उस दोनों कुशाओं (पवित्र) के अग्रभाग को पकड़कर ऊपर के अग्रभाग को नम्र बनाकर धारण करते हुए ही आज्य (घी) में प्रक्षेप कर आज्य को उत्पवन करें। फिर घी को देख कर उसमें अपद्रव्य हो उसे निकाल दे। तदनन्तर फिर पवित्रों को ग्रहण कर प्रोक्षणी स्थित जल को उत्पवन करे फिर बाये हाँथ

तत आज्यमवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरस्येत्। ततः पूर्ववत्पवित्रे गृहीत्वाप्रोक्षणीनामपामुत्पवनं कुर्यात्। ततो वामहस्ते उपयमनादाय दक्षिणेन प्रादेशमात्रीः पालाशी स्विस्त्रः—समिधो घृताक्ता द्व्यङ्गुलादूर्ध्वं मध्यमानामि कांगुष्ठैर्मूलभागे धृतास्तर्जन्यग्रवत्स्थूलास्तन्त्रेणाग्नौतूष्णीं प्रक्षिप्य सपवित्रेण प्रोक्षण्युदकेन चुलुकगृहीतेन ईशानादि प्रदक्षिणमीशान कोणपर्यन्तं पर्युक्ष्य अप्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं

में उपयमन कुशा को लेकर दाहिने हाथ में प्रादेश प्रमाण की तीन समिधाओं को घी में भिगोकर दो अंगुल ऊपर मध्यमा अनामिका अँगूठे के मूल भाग में धारण की हुई, तर्जनी की तरह मोटी समिधा को एक साथ चुपचाप अग्नि में प्रक्षेप कर सपवित्र वाली प्रोक्षणी पात्र के जल से चुल्लु द्वारा ग्रहण कर ईशान कोण से प्रक्षेप कर फिर ईशान पर्यन्त प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण कर अप्रदक्षिण क्रम से ईशान कोण पर्यन्त अपने दाहिने हाथ को केवल घुमा दे। तदनन्तर उन पवित्र को प्रणीता पात्र में रख अपने दाहिने जानु को मोड़कर ब्रह्मा से कुशों द्वारा अन्वारब्ध (स्पर्श) कर उपयमन कुशा के सहित अपने हाथ की अँगुलियों को फैलाकर उस हाथ को हृदय में लगा

हस्तं पर्यावर्तयेत् । ततः पवित्रे प्रणीतासु निधाय दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः उपयमन कुशस हितं प्रसारितांगुलिहस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरंगुलं त्यक्त्वा शङ्खसन्निभ-मुद्रया स्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौवायव्य कोणा-दारभ्याग्निकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वासन्त तघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् स्रुवेण तूष्णीं सशेषं मौनी जुहुयात् । नात्र स्वाहाकारः । इदं प्रजापतये न मम इति यजमानेन त्यागः कर्तव्यः । होमत्यागा-

---

कर दाहिने हाथ से स्रुव के मूल से चार अंगुल छोड़कर 'शंख' मुद्रा से स्रुव को ग्रहण कर प्रदीप्त अग्नि में वायव्य कोण से प्रारम्भ कर अग्नि कोण पर्यन्त या पूर्व दिशा की तरफ निर-न्तर घी की धारा द्वारा प्रजापति का मन से ध्यान करें । स्रुव से चुप-चाप शेष के सहित हवन करे. इसमें स्वाहाकार नहीं है । 'इदं प्रजापतये न मम्' इस वाक्य का यजमान त्याग करें । होम त्याग के बाद स्रुवस्थित आज्य का सर्वत प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करें ।

नन्तरं स्रुवाव शिष्टस्याज्यस्य सर्वत्र प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः। ततो नैर्ऋतिकोणादारभ्येशानकोण पर्यन्तं प्राच्यं वा—ॐ इन्द्राय स्वाहा इति जुहुयात्। इदमिन्द्राय न मम' इति त्यजेत्। तत उत्तरपूर्वार्द्धे—ॐ सोमाय स्वाहा—इदं सोमाय न मम इति जुहुयात् ततो यजमानः द्रव्यत्यागं कुर्यात्। तत्र च बहुकर्तृके होमे यथाकालं प्रत्या हुतित्यागस्य कर्तुमशक्य त्वात्सर्वंहवनीये द्रव्यं देवताश्च मनसा ध्यात्वा त्यजेत्। तच्चैवम् इदमुप-

---

तदनन्तर—निर्ऋतिकोण से आरम्भ कर ईशान कोण पर्यन्त या पूर्व की तरफ 'इन्द्राय स्वाहा' इससे हवन करे। 'इन्द्रमिन्द्राय न मम्' इससे त्याग करें। फिर उत्तर पूर्वार्ध में 'अग्नये स्वाहा' से हवन करें। दक्षिण पूर्वार्ध में 'सोमाय स्वाहा' से हवन करें। तदनन्तर यजमान त्याग करें। क्योंकि बहुकर्तृक हवन में यथा समय प्रति आहुति के बाद प्रोणाणी पात्र में त्याग करना असम्भव है। अतः सब हवनीय द्रव्य तथा देवताओं को मन से ध्यान कर 'इदमुपकल्पितं समित्ति

कल्पितं समित्तिलादिद्रव्यं (यथासम्पादितम्) या या यक्ष्य माण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न ममेति साक्षतजलं भूमौ क्षिपेत्। यथादैवतमस्तु।

॥ इति कुशकण्डिका ॥

लादि द्रव्यं याया यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्य स्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम्' इस वाक्य को पढ़कर जल सहित अक्षत भूमि में प्रक्षेप करें 'यथादैवतमस्तु' यह कहें।

॥ इति कुशकण्डिका ॥

❋ ग्रहादि-होमः ❋

आचार्य गणानां त्वा० से स्योना पृथिवि० निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजनकर्त्ता से आहुतियाँ दिलावें—

ॐ गणानान्त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधिनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वम जासि गर्भधम् स्वाहा।

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवा सिनीम् स्वाहा।

आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निदेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा।

इमन्देवाः ऽअसपत्नर्ठ० महते क्षात्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्या येन्द्र स्येन्द्रियाय। इमम पुष्य पुत्रममुष्यै पुत्र मस्यै व्विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राम्हणानार्ठ० राजा स्वाहा।

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपाᳬं रेताᳬं सि जिन्वति स्वाहा।

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा।

बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा।

अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳬं शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्ये न्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु स्वाहा।

शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु नः स्वाहा।

कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया ऽवृता स्वाहा।

केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः स्वाहा।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम्। उर्व्वा रूकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा।

श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्त्रेपार्श्वे नक्ष-त्राणि रूप मश्विनौ व्यात्तम्। इष्णा निषाणा मुंम ऽइषाण सर्व्वं लोकं म ऽइषाण स्वाहा।

यदक्रन्द्रः प्रथमं जायमान ऽघन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जात ते ऽअर्व्वन स्वाहा।

विष्णो ररराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो वि-ष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णो त्वा स्वाहा॥

आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामो राष्टे राजन्यः शूर ऽइषव्व्यो ऽतिव्व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्व्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यज-मानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्ज-न्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योग-क्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा।

सजोषां ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिबव्वृत्रहा शूर बिद्वान। जहि शत्रूँ २॥ रप मृधो नुद स्वाथा भयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा।

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमहे स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा।

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा।

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा।

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्य वाहमुप ब्रुवे। देवाँ २॥ ऽआसादयादिह स्वाहा।

आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऽउर्ज्जे दधातन। महेरणा यचक्षसे स्वाहा।

स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म्म सप्रथाः स्वाहा।

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्‌ समूढमस्य पाठं० सुरे स्वाहा।

इन्द्र ऽआसां नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः

पुर ऽएतु सोमः । देवसेनानाम भिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम् स्वाहा ।

अदित्यै रास्ना सीन्द्राण्या उष्णीष÷पूषासि घर्म्माय दीष्व स्वाहा ।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्त्वय-ममुष्य पितासावस्य पिताव्वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणार्ठ० स्वाहा ॥

नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु । ये अन्तरिक्षे पे दिवि तेभ्य÷सर्पेभ्यो नम÷स्वाहा ।

ब्रह्म यज्ञानां प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः । स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विव÷स्वाहा ।

गणानान्त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्प्रिया-णान्त्वा प्प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधिनान्त्वा निधि पतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम । आहम जानि गब्र्भधमात्वम जासि गब्र्भधम् स्वाहा ।

अम्बे ऽअम्बिके ऽम्बालिके न मानयति

कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥

व्यायो ये तेसहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्त्योसोपीतये स्वाहा ।

घृतं घृतपावनः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबन्तान्त रिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिश ÷ प्रदिश ऽआदिशो व्विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।

या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती तया यज्ञं मिमिक्षतम् स्वाहा ।

वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमी वो भवानः यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ।

नहिस्पशम् विदन्नन्न्य मस्माद्वैश्वानरात्पुर ऽएनारमग्नेः । ऐमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्नानर क्षैत्रजित्त्याय देवाः स्वाहा ।

त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्रꣳ हवे हवे सुह्वꣳ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति मघवा धात्विन्द्र स्वाहा ।

त्वन्नो ऽअग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषठं॰ रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा।

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमहे स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे स्वाहा।

असुन्वन्त मयजमानमिच्छस्ते नस्ये त्यामन्विहि तस्करस्य। अन्न्यमस्मदिच्छ सात ऽइत्या नमो देवि निऋृते तुभ्यमस्तु स्वाहा।

तत्त्वा यामि ब्राह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भि÷। अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशठं॰ समान ऽआयुः प्रमोषिः स्वाहा।

आ नो नियुद्भि÷शतिनी भिरध्वरठं॰ सहस्त्रिणी भिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पातस्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा।

वयठं॰ सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि स्वाहा।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्व-

मवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये स्वाहा ।

अस्मे रुद्रा मेहना पर्व्वता सो व्वृत्रहत्ये भर-हूतौ सजोषाः यः शर्ठ० शते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा ऽअस्माँ २।। अवन्तु देवाः स्वाहा ।

स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनि यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः स्वाहा ।

।। इति ग्रहादि होम ।।

❋ वास्तु होम ❋

स्रुवे में घी भरकर चारों स्तमभ स्थानों में स्तमभ के अभाव में शिला पर चारो कोणों पर अग्नि कोण से प्रारम्भ कर निम्न आहुतियाँ देवें ।

ॐ अच्युताय भौमाय स्वाहा ।

इदं अच्युताय भौमय नमम् ।

इसके पश्चात् आग्नेय कोण में स्थित स्तमभ अथवा तद् अभाव में शिला का स्पर्श कर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें—

इमामुच्छ्रयामि भुवनस्य नाभिं वसोर्द्धारा प्रतरणीं वसूनाम् । इहैव ध्रुवां निमिनो मिशालां क्षेमे तिष्ठतु घृतमुक्ष माणा ।

अश्वावती गोमती सूबता वत्युच्छ्र यस्व महते सौभगाय । आत्वा शिशुरा क्रन्दत्वा गात्रो धेनवो वाश्यमानाः ।

आत्वाकुमार स्तरुण आवत्सौ जगदैः सह । आत्वा परिस्रुतः कुम्भ आदध्नः कलशैरूप क्षेमस्य पत्नी वृहती सुवासा रयिन्नो धेहि सुभगे सुवीर्यम् अश्वादगोम दूर्ज स्वत्पर्णं वनस्पते रिव । अभिनः पूर्यतार्ठ० रयिरिद मनु श्रेयो वसानः ।

इसी प्रकार नैऋत्य वायव्य—ईशान कोण के स्तम्भों में स्पर्श करते हुए इन चारों मन्त्रा की आचार्य आवृत्ति करें । इसके पश्चात् गृह से बाहर निकल कर गृह की ओर मुख कर मुख्य द्वार के समिप खड़े होकर ब्रह्मा से प्रवेशकर्त्ता यजमान (पूजनकर्ता) पूछें ।

ब्रह्मन प्रविशामि, ब्रह्मा कहें:—प्रविशस्व ।

इस तरह ब्रह्मा से आज्ञा पाकर गृह प्रवेश करें । गृह प्रवेश करते समय निम्न मन्त्र पूजनकर्ता पढ़ें:—

ॐ ऋतंम प्रपद्ये शिवं प्रपद्ये ।

तत्पश्चात् दो घृत की आहुति आचार्य इन मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजनकर्ता से प्रदान करवाये :—

ॐ इह रति रिह रमध्यमिह घृतिरिह स्व-घृतिः स्वाहा । इदंग्नये न मम् ।

ॐ उप सृजान्ध रूणं मात्रे वरुणो मातरं धयन् । रायस्पोषमस्मासु दीधरत्तस्वाहा । इदं-ग्नये नम् ।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ध्यस्मान् स्वावेशो अनमी वो भवानः । यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ।

ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिदोः अजरासस्ते सख्ये स्याम् पितेव पुत्रान्प्रतितन्नो जुषस्य । शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ।

ॐ वास्तोष्पते शग्मया सठ० सदाते सचीम हिरण्यमया गातु म चहिक्षेम उतयोगे वरन्नो यूयं पातस्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा ।

ॐ अमी वहा वास्तोष्पते विश्वारूपाशया विशन् सखा सुशेव एधिः नः स्वाहा ।

ॐ वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां सन्नं सौम्या नां द्रप्सोभेत्ता पुरां शाश्वती ना मिक्षे मुनीनां सखा स्वाहा ।

इदं वास्तोष्पतये नमम ॥

इसके पश्चात् ब्रह्मा से अन्वारब्ध करके पूजनकर्ता आघाराज्य भाग संज्ञक निम्न आहुतियाँ प्रदान करें—

१—ॐ भूः स्वाहा—इदं अग्नये नमम ।

२—ॐ भुवः स्वाहा–इदं वायवे नमम ॥

३—ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय नमम ।

४—ॐ त्वन्नोऽअग्ने श्ररणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअवया सिसीष्ठाः । यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषार्ठ० सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ।

५ —ॐ सत्वन्नोऽअग्ने नमो भवोतीने दिष्ठोऽअस्याऽउषसो व्यष्टौ । अवयक्ष्वनो व्वरूणर्ठ० रराणोव्वी हिमृर्गकर्ठ० सुहवोनऽएधि स्वाहा ।

६ —ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभि शस्तिपाश्च

सत्यमित्वमयाऽअसि । अयानो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजठं॰ स्वाहा ।

७—ॐ येते शतं वरूण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः । ते भिर्नोऽअद्य सवितो विष्णु विंश्वे मुञ्चन्तु मरूतः स्वर्क्का स्वाहा ।

८—ॐ उदुत्तमं व्वरूण पाशमस्मदवा धमं व्विमध्यमठं॰ श्रथाय । अथाव्वयमा दिव्य-व्रतेत वानागसोऽअदितये श्याम स्वाहा ।

९—ॐ प्रजापतये स्वाहा–इदं प्रजापतये नमम ।

इसके पश्चात् निम्न मन्त्रों से खीर की आहुतियों से हवन करे—

१—अग्निमिन्द्रं र बृहस्पतिं विश्वान्देवा नूयह्वये सरस्वतीं च वाजीं च वास्तु मे दत्तवा जिनः स्वाहा इदंग्नये इन्द्राय बृहस्पतये विश्वेभ्यो देवेभ्यः सरस्वत्यै वाज्यै च न मम ॥

ॐ सर्पदेवजनान् सर्वान् हिमवन्तठं॰ सु-

दर्शनम् । वसूं श्च रूद्रानादित्या नीशातं जगदैः

सह। एतान सर्वा प्रपद्येऽहं वास्तु मे दत्तवा जिनः स्वाहा। इदं सर्पदेवजनेभ्यो हिमव्वते सुदर्शनाय वसुभ्यो रूद्रेभ्य आदित्येभ्य ईशानाय ईशानाय जगदेभ्यश्चय:।

पूर्वाहम पराहं चोभौ मध्यन्दिना सह। प्रदोषमर्धरा त्रंच व्युष्टां देवीं महापथाम्। एता० इदं पूर्वा ह्रायापरा ह्रायम ध्यन्दिनाम् प्रदोषायार्द्ध रात्रा भव्युष्टायै देव्यै महापथा यैचनः। कर्त्तारं च विकर्त्तारं विश्वकर्माणमो वधीं कव्वन स्पतीन् एता। इदं कर्त्रे विकर्त्ते विश्व कर्मणे ओषधी भ्योव्वन स्पतिभ्यभव० धातारं च विधातारं निधीनां च पतिं सह। एतान्स० इदं धात्रे विधात्रे निधीनां पतये च स्योनर्ठ० शिवमिदं वास्तु मे दत्तं ब्रह्म प्रजापती। सर्वा कव्व देवताः स्वाहा। इदं ब्रह्मणो प्रजापतये सर्वाभ्यो देवताभ्यकवः।

इसके पश्चात् शिख्यादि एक पदान्त वास्तुमण्डलगत देवताओं के लिए प्रत्येक नाम से १०८ या २८ या ८ बार घी, खीर या शाकल्य से आहुतियाँ देवे—

१ : ॐ शिखिने स्वाहा । इदं शिखिने नमम ॥
२ : ॐ पर्जन्याय स्वाहा । इदं पर्जन्याय नमम ॥
३ : ॐ जयन्ताय स्वाहा । इदं जयन्ताय नमम ॥
४ : ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा । इदं कुलिशायु-
धाम नमम ॥
५ : ॐ सूर्याय स्वाहा । इदं सूर्याय नमम ॥
६ : ॐ सत्याय स्वाहा । इदं सत्याय नमम ॥
७ : ॐ भृशाय स्वाहा । इदं भृशाय नमम ॥
८ : ॐ आकाशाय । इदं आकाशाय नमम ॥
९ : ॐ वायवे स्वाहा । इदं वायवे नमम ॥
१० : ॐ पूष्णो स्वाहा । इदं पूष्णो नमम ॥
११ : ॐ वित्थाय स्वाहा । इदं वित्थाय नमम ॥
१२ : ॐ गृहत्तताय स्वाहा । इदं गृहत्तताय नमम॥
१३ : ॐ यमाय स्वाहा । इदं यमाय नमम ॥
१४ : ॐगन्धर्वाय स्वाहा । इदं गन्धर्वाय नमम ॥
१५ : ॐभृङ्ग राजाय स्वाहा । इदं भृङ्ग राजाय
नमम ॥

१६ : ॐ मृगाय स्वाहा । इदं मृगाय नमम ॥

१७ : ॐ पितृभ्यो स्वाहा। इदं पितृभ्योन नमम ॥
१८ : ॐ दौवारिकाय स्वाहा। इदं दौवारिकाय नमम ॥
१९ : ॐ सुग्रीवाय स्वाहा। इदं सुग्रीवाय नमम ॥
२० : ॐ पुष्पदन्ताय स्वाहा। इदं पुष्पदन्ताय नमम॥
२१ : ॐ वरूणाय स्वाहा। इदं वरुणाय नमम ॥
२२ : ॐ असुराय स्वाहा। इदं असुराय नमम ॥
२३ : ॐ शोषाय स्वाहा। इदं शोषाय नमम ॥
२४ : ॐ पापाय स्वाहा। इदं पापाय नमम ॥
२५ : ॐ रोगाय स्वाहा। इदं रोगाय नमम ॥
२६ : ॐ अहये स्वाहा। इदं अहये नमम ॥
२७ : ॐ मुख्याय स्वाहा। इदं मुख्याय नमम ॥
२८ : ॐ भल्लाटायस्वाहा। इदं भल्लाटाय नमम ॥
२९ : ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय नमम ॥
३० : ॐ सर्पाय स्वाहा। इदं सर्पाय नमम ॥
३१ : ॐ अदित्यै स्वाहा। इदं अदित्यै नमम ॥
३२ : ॐ दित्यै स्वाहा। इदं दित्यै नमम ॥
३३ : ॐ सावित्राय स्वाहा। इदं सावित्राय नमम ॥

३४ : ॐ जयाय स्वाहा। इदं जयाय नमम ॥

३५ : ॐ रुद्राय स्वाहा। इदं रुद्राय नमम ॥

३६ : ॐ अर्यम्णे स्वाहा। इदं अर्यमणाम नमम ॥

३७ : ॐ सवित्रै स्वाहा। इदं सवित्रै नमम ॥

३८ : ॐविवस्वते स्वाहा। इदं विवस्वते नमम ॥

३९ : ॐविभूधाधिपाय स्वाहा। इदं विभूधाधिपाय नमम ॥

४० : ॐ मित्राय स्वाहा। इदं मित्राय नमम ॥

४१ : ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा। इदं राजयक्ष्मणे नमम ॥

४२ : ॐ पृथ्वी धरांय स्वाहा। इदं पृथ्वीधरांय नमम ॥

४३ : ॐ आपवत्साय स्वाहा। इदं आपवत्साय नमम ॥

४४ : ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। इदं ब्रह्मणे नमम ॥

४५ : ॐ चरक्यै स्वाहा। इदं चरक्यै नमम ॥

४६ : ॐ विदार्यै स्वाहा। इदं विदार्यै नमम ॥

४७ : ॐ पूतनायै स्वाहा। इदं पूतनायै नमम ॥

४८ : ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा। इदं पाप राक्षस्यै नमम॥

४९ : ॐ स्कंदाय स्वाहा। इदं स्कंदाय नमम॥

५० : ॐ अर्यम्णे स्वाहा। इदं अर्यम्णे नमम॥

५१ : ॐ जृंभकाय स्वाहा। इदं जृभकाय नमम॥

५२ : ॐ पिलिपिच्छाय स्वाहा। इदं पिलिपिच्छाय नमम॥

५३ : ॐ उग्रसेनाय स्वाहा। इदं उग्रसेनाय नमम॥

५४ : ॐ डामराय स्वाहा। इदं डामराय नमम॥

५५ : ॐ कालाय स्वाहा। इदं कालाय नमम॥

५६ : ॐ एकपदे स्वाहा। इदं एकपदे नमम॥

इसके पश्चात् वास्तोष्पते इत्यादि चार मंत्रों से प्रति मन्त्र घृत-पायस-तील-समिधा (औदुम्बर) से एक सौ आठ, अठाईस, या आठ आहुतियाँ देवें।

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान स्वावेशो अनमी वो भवान यत्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥१॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो

गोभि रश्वे भिरिदो अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रतिन्नो जुषस्य शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ वास्तोष्पते शग्मया सर्ठ० सदाते सक्षीम हिरण्यया गातु मन्धा । चह्निक्षेम उतयोगे वरन्नो यूयं पातस्वस्तिभिः सदानः स्वाहा ॥ अमी वहा वास्तोष्पते विश्वारूपाशया विशन् सखा सुशेव एधिन स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ वास्तोष्पते ध्रुवास्थूणां सनं सौभ्या नां द्रप्सो भेत्ता पुरां शाश्वती ना मिन्क्षे मुनीनां सखा स्वाहा ॥ ४ ॥

तत्पश्चात् वास्तोष्पते आदि चार या 'अमि वहा' इस मन्त्र को पृथक कर के पाँच मन्त्रों से पृथक-पृथक या सभी मन्त्रों से एक ही बार घी में डुबो कर बिल्व फल की तीन आहुतियाँ अग्नि में देवे । और अन्त में 'इदं वास्तोष्पते' कह के त्याग करें । इन मन्त्रों से उक्त वस्तुओं की आहुति हाथ से ही देवे ।

॥ इति वास्तु होम ॥

❋ स्विष्टकृत ❋

आचार्य निम्न वैदिक मंत्र से पूजनकर्ता से अग्नि का पूजन करवाये :—

ॐ अग्नेनय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्श्वानि देवव्वयुनानि व्विद्वान्। युयोद्ध्यस्म्माज्जुहुराण मेनो भूयिष्ठान्तेन्मऽउक्तिं व्विधेम्।

तत् पश्चात् बड़े पात्र में तिलों को ग्रहण कर दाहिने हाथ से घी भर कर स्रुव को ले दाहिने पैर की जांघ को मोड़कर ब्रह्मा से स्पर्श कर निम्न मन्त्र से स्विष्टकृत संज्ञक आहुति देवे।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।
इद मग्नये स्विष्टकृते न मम॥

॥ इति स्विष्टकृत ॥

❋ व्याहृति होम ❋

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजनकर्ता से नौ व्याहृति आदि की आहुति घी से प्रदान करवायें :—

ॐ भूः स्वाहा—इदंमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम ।

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषार्ठ॰ सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥

इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम् ।

ॐ सत्वन्नो अग्नेवमो भवोतीने दिष्टोऽअस्या ऽउषसोव्यष्टौ । अवयक्ष्वनो वरूणर्ठ॰ रराणोव्वी हिमृड़ीकर्ठ॰ सुहवोनऽएधि स्वाहा ।

इदं मग्नी वरूणाभ्यां न मम् ।

ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्यनभि शस्तिपाश्च सत्यमि त्व मयाऽअसि । अया नो यज्ञम् वहास्यया नो धेहि भेषजर्ठ॰ स्वाहा ॥

इदमग्नये अयसे न मम् ।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रां यज्ञिया पाशा वितता महान्तः । ते भिर्न्नोऽअद्य सवितो विष्णु-र्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा ।

इदं वरुणाय सविते विष्णवे विश्वेभ्यो देवे-भ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाश मस्मदवा धमंव्वि-मध्यमर्ठ० श्रथाय । अथाव्वयमादित्य व्रतेत वा-नागसोऽअदितयेस्याम स्वाहा ।

इदं वरुणायादित्यायादि तये न मम ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये न मम ।

॥ इति व्याहृति होम ॥

❋ दशदिक्पाल बलि ❋

ॐ त्राता रमिन्द्र मवितार मिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूर मिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिर्ठ० स्वस्ति मधवा धात्विन्द्रः ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर आचार्य पुष्प अक्षत और जल पूजनकर्ता के हाथ में देकर कहवाऐ : -

इन्द्राय नम इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो इन्द्र स्वां दिशं बलिं भक्ष मम् सकुटु-म्बस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टि-

कर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ।

पूर्वाभिमुख होकर पुष्प-अक्षत और जल भूमि में डालें।

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति-काय इमं सदीपदधि माष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्ति कर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम् ।

दक्षिणे 'यमाय त्वा' यमाय नमः-यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधि माषभक्त बलिं समर्पयामि ।

भो यम स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम् ।

नैर्ऋत्याम्—'ॐ असुन्न्वन्त' निर्ऋत्ये नमः निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो निर्ऋते स्वां रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टि कर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम्।

पश्चिमे--'ॐ तत्वा यामि' वरुणाय नमः वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधिभाष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो वरुण स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम्।

वायव्याम्—'ॐ आनो नियुद्भिः' वायवे नमः वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधि माष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो वायो स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम

सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्

उत्तरे 'ॐ वयर्ठ० सोम' सोमाय नमः सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो सोम स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता-तुष्टिकर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम् ।

ईशान्याम्—'ॐ तमीशानं जगतः' ईशानाय नमः । ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि ।

भो ईशान स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता पुष्टिकर्ता-तुष्टिकर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम् ।

ईशान पूर्वयोर्मध्ये—'ॐ अस्मे रूद्रा मेहना' ब्रह्मणे नमः ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि ।

भो ब्रह्मन् स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम् सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता-तुष्टिकर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम् ।

निर्ऋति पश्चिमयोर्मध्ये—'ॐ स्योना पृथिवि' अनन्ताय नमः, अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि ।

भो अनन्त स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम् सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ।

अनेन बलि दानेन अनन्तः प्रीयताम् ।

॥ इति दशदिक्पाल बलि ॥

❋ दिक्पाल बलिदानम् ❋

आचार्य निम्न मन्त्रो का उच्चारण करते हुए पूजनकर्ता से इन्द्रादि दशदिक्पालों के लिए बलि समर्पण करावे।

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यैदिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यैदिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा ॥

इन्द्रादिभ्यो दशभ्यो दिक्पालेभ्यो नमः।

इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्य सपरिवारेभ्य सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि।

भो इन्द्रादिशदिक्पालाः स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्ति कर्तारः पुष्टि कर्तारः तुष्टि कर्तारः वरदाः भवत।

अनेन बलिदानेन इन्द्रादयो दश दिक्पालाः प्रीयन्ताम।

॥ इति दिक्पाल बलिदानम ॥

❋ सूर्यादिनवग्रह बलिः ❋

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजनकर्ता से सूर्यादि नवग्रह बलि को करावे :—

'आकृष्णेन' सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराग्नि रूपाधि देवता प्रत्यधि देवता सहिताय इमं सदीपमाष भक्तबलिं समर्पयामि ।

भो सूर्य इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्ति कर्ता पुष्टिकर्त्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन सूर्यः प्रीयताम् ।

'इमन्देवाः' सोमाय साङ्गाय उमा आपोरूपाधिदेवता सहिताय० ।

भो सोम! इमं बलिं० अने० सोमः प्रीयताम् ।

'अग्निमूर्द्धा' भौमाय साङ्गाय स्कन्द भूमि रूपाधि देवता प्रत्यधि देवता ।

भो भौम बलिं० अनेन भौमः प्रीयताम ।

'उद्बुध्यस्व' बुधाय साङ्गाय नारायण विष्णु रूपाधि देवता प्रत्यधिदेवता सहि० ।

भो बुध इमं बलिं० भक्ष० अनेन बलि बुधः प्रीयताम् ।

'बृहस्पतेऽअति' बृहस्पतये साङ्गा० ब्रह्मेन्द्र-रूपाधि देवता प्रत्यधिदेवता ।

भो बृहस्पते दिशं रक्ष० अनेन बलिदानेन बृहस्पतिः प्रीयताम् ।

'अन्नात्परि' शुक्राय साङ्गाय इन्देन्द्राणी रूपाधि देवता प्रत्यधिदेवता ।

भो शुक्र ! इमं बलिदानेन अनेन बलिदानेन शुक्रः प्रीयताम् ।

'ॐ शन्नोदेवीः' शनैश्चराय साङ्गाय सपरि-वाराय यम प्रजापति रूपाधि देवता प्रत्यधिदेवता ।

भो शनैश्चराय अनेन बलिदानेन शनैश्चरः प्रीयताम् ।

'कयानश्चित्र' राहवे साङ्गा० कालसर्प रूपाधि देवदिभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्य

सशक्तिकेभ्यः इमं सदीपदधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो सूर्यादयो देवाः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारो वरदाः भवत ।

अनेन बलिदानेन साङ्गाः सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम् ।

॥ इति सूर्यादिनवग्रह बलिः ॥

❀ षोडशमातृका बलिः ❀

निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हूए आचार्य पूजन कर्ता से गणेश-गौरी आदि सोलह माताओं के लिए बलि समर्पण करावे :—

ॐ समख्ये देव्याधिया सन्दक्षिणा योरू चक्षसा । माम ऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहन्तवव्वीरं व्विदेयत वदेविसन्दृशि ।

सगणेश गौर्यादि मातृभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः इमं सदीप मास भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो गणेश पूर्वक गौर्यादि मातरः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्याभ्युदय कर्त्र्यः आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदाः भवत ।

अनेन बलिदानेन सगणेशगौर्यादि मातरः प्रीयन्ताम् ।

॥ इति षोडशमातृका बलिः ॥

❋ प्रधान बलिः ❋

आचार्य निम्न मन्त्रों का क्रम से उच्चारण करते हुए, पूजनकर्ता से विष्णु-गरूण सहित सर्वतोभद्रमण्डलस्थब्रह्मा आदि देवताओं को नमस्कार करावे और इन देवों को उड़द् और दही मिश्रित बलि को समर्पण करावे :—

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समु-ढस्य पा० सुरे ।

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्त्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमाश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्व्वलोकं म इषाण ।

सुपर्णोऽसि गरुत्माँ स्त्रिवत्तेशिरोणा यत्रञ्चक्षु-बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽआत्मा छन्दा० स्यङ्गा

नियजूर्ठं० विनाम। सामतेतनूर्व्वाम देंव्यं यज्ञाय ज्ञियं पुच्छन्धिष्ण्या: शफा:। सुपर्णोऽसिगरूत्मा न्दिवङ्गच्छ स्व: पत।

महा विष्णु महा लक्ष्मी सुपर्ण देवता पूर्वक ब्रह्मादि-सर्व तो भद्र मण्डलस्थ देवेभ्यो नम:।

महाविष्णु महालक्ष्मी। सुता प्रत्याधे देव०।

भो राहो। इमं बलिं अनेन बलिदानेन राहु प्रीयन्ताम्।

'केतुं कृण्वन्' केतवे साङ्गाय चित्रगुप्त ब्रह्म-रूपाधि देवता प्रत्यधि देवता।

भो केतु इमं बलिं अनेन बलिदानेन केतु: प्रीयन्ताम्।

'गणानां त्वां' गणपतये सांगाय। भो गण-पते इमं बलिदानेन अनेन बलिदानेन गणपति: प्रीयन्ताम्।

'अम्बेऽअम्बिके' दुर्गायै सांगायै० भो ! दुर्गे इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्यायु: कर्त्री क्षेम कर्त्री शांतिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री वरदाभव।

अनेन बलिदानेन दुर्गा प्रीयताम् ॥

'वायोये ते' सां० । भो वायो इमं बलिं० अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयन्ताम् ।

'घृतं घृत पावनः' आकाशाय सांगाय सपरिवाराय । भो! आकाश इमं बलिं० अनेन बलिदानेन आकाशः प्रीयताम् ।

'यावां कशा' अश्विभ्या० सांगाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकाभ्यां इमं सदीप मासभक्तबलिं समर्पयामि ।

भो अश्विनौ' इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य क्षेमकर्तारौ पुष्टिकर्तारौ वरदौ भवतम् ।

अनेन बलिदानेन अश्विनौ प्रीयेताम् ॥

'वास्तोष्पते प्रति' वास्तोष्पतये नमः सांगाय सपरिवाराया भो ! वास्तोष्पते इमं बलिं० अनेन बलिदानेन वास्तोष्पतिः प्रीयताम् ।

॥ इति प्रधान बलिः ॥

❀ एकतन्त्रेण ग्रहबलिः ❀

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजनकर्ता से ग्रह पीठस्थ अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता, पञ्च लोकपाल, यज्ञ संरक्षक इन्द्रादि दश दिक्पालों सहित सूर्यादि सपरिवार और आयुध सशक्तियों के लिए दधि-उड़द युक्त बलि समर्पण करावे।

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जा हुतयोऽव्यन्तो विप्राय-मतिम् । तेषां विशिप्रियाणांवोहमिषमूर्ज्जंठ० समग्र भमुपया मगृहीतोसीद्रायत्वा जुष्ट ह्माम्येषते यो निरिन्द्रा यत्वा जुष्टतमम् ।

ग्रह पीठ स्थेभ्यः सूर्यादि नवग्रहेभ्यः अधि-देवता प्रत्यधिदेवता पञ्चलोकपाल क्रतु संरक्षक दशदिक्पाल सहितेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

सूर्यापर्णदेवता पूर्वक सर्वतो भद्र मण्डलस्थ देवेभ्यः साङ्गेभ्यः समपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्ति केभ्यः इमं सदीपदधिभाष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो महाविष्णु महालक्ष्मी सुपर्ण देवता पूर्वक ब्रह्मादि सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवाः इमं सदीप दधिभाष भक्त बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्यायुः

कर्तारः क्षेमकर्तारः शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदाः भवत ।

अनेन बलिदानेन महाविष्णु महालक्ष्मी सुपर्णपूर्वक ब्रह्मादि सर्वतो भद्र देवाः प्रीयन्ताम् ।

॥ इति एकतन्त्रेण ग्रहबलिः ॥

❋ क्षेत्रपाल बलिः ❋

पूजन कर्ता सूप आदि में चतुर्मुख दिपक, उड़द, दहि मिश्रित चावल, पान, दक्षिणा, कूष्माण्ड, पात्र में जल, हलदी, रोली, सिन्दूर, पताका और लाल पुष्प युक्त थाली को रख कर कहे :—

क्षेत्रपालादिभ्यो नमः

आवाहयामि देवेशं भैरवं क्षेत्रपालकम् ।
दिव्य तेजं महाकायं नाना भरण भूषितम् ॥
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं गृहणन्नमोऽस्तुते ।
असुरा यातु धानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ॥
शाकिन्या यक्ष बेताला योगिन्यःपूतनाःशिवाः ।
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नाना विद्याधरा नगाः ॥
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्न विनायकाः ।
जगतां शांति कर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ॥

मा विघ्न मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहा ॥

आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करते हुए वेतालादि परिवार सहित, क्षेत्रपालादि समस्त परिवार भूतों के लिए पूजन कर्ता से इस बलि को समर्पण करावें :—

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥

वेतालादि परिवायुत क्षेत्रपालादि सर्व भूतेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः भूत-प्रेत पिशाच-राक्षस शाकिनी सहितेभ्यः कुंकुमारक्त पुष्पादियुतं सदीपं सदक्षिणम बलिं समर्पयामि ।

भो भो क्षेत्रपालादयः इमं बलिं गृह्णीत पूजन-कर्तुः आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टि कर्तारः निर्विघ्न कर्तारः वरदाः भवत ।

अनेन सार्व भौतिक बलिप्रदानेन क्षेत्रपालादयः प्रीयन्ताम् ॥

इस बलि को शुद्र या दुर्ब्राह्मण एक बार शिर पर से घुमाकर ले जाए और वह पिछे की तरफ न देखे, और उसे ले जाकर नैऋत्य कोण में पडने वाले चौराहे पर रख आवे:—

पूजन कर्ता उसके पीछे जाकर इन मन्त्रों को पढ़ते हुए जल अथवा चावल छिड़के।

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहो पविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहाऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा-सꣳ हानाय स्वाहो पस्तिथताय स्वाहा यनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥

इसके पश्चात् पूजनकर्ता अपने हाथ-पैर धो कर आपने आसन पर बैठ जावें।

॥ इति क्षेत्रपाल बलि ॥

❋ पूर्णाहुतिः ❋

आचार्य निम्न संकल्प पूजनकर्ता से करावें—

गृह वास्तु शान्ति कर्मण सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं 'मृडनामाग्नौ पूर्णाहुति होष्यामि ।

इस प्रकार संकल्प करने पश्चात् चार अथवा बारह बार घी को यज्ञीय पात्र स्रुव के द्वारा स्रुचि नामक पात्र में ग्रहण कर शिष्टाचार से उस स्रुचि पर सुपारी-पान-पुष्प-रेशमी वस्त्र से वेष्ठित कर पुष्प माला से सुशोभित तथा सुगन्ध द्रव्य सिन्दूर आदि द्रव्य से सजाकर स्रुचि पर रख आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र से पूजन करावे :—

ॐ पूर्णादर्व्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत । व्वस्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जᳬ शतक्रतो ।

तत्पश्चात् अधोमुख स्रुव को रख श्रुचि को बाये हाथ से यथोचित्त रूप से पकड़ कर तथा खड़े होकर आचार्य निम्न वैदिक मन्त्रों को पढ़े :—

ॐ समुद्राद्रूर्म्मिम्मर्धुमाँ२ उदारदुपांᳬ शुनासम मृतत्वमानट् । घृतस्यनाम गृह्यंय्यदस्ति जिह्वा देवानाम मृतस्यनाभिः ॥

ॐव्वयन्नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्नयज्ञे

धारयामानमोभिः। उपब्रह्माशृणवच्छस्य मान-ञ्चतु ÷ शृङ्गो वमीद्गौर ऽएतत् ॥

ॐ चत्वारि शृङ्गात्र्यो ऽअस्य पादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य। त्रिधाबद्धो॰वृष भोरोरवीति महोदेवा मर्त्याँ२ ऽआविवेश ॥

ॐ त्रिधाहितं पणिभिर्गुह्य मानङ्ग विदेवोसो घृतमन्न्ववविन्दन्। इन्द्रऽएकठं सूर्य्यऽएकञ्जजान-व्वेना देकठं॰ स्वधयानिष्टतक्षुः ॥

एताऽअर्षन्तिहृद्यात्समुद्राच्छत व्व्रजारिपुणा-नाव चक्षे। घृतस्यधाराऽअभिचाकशी मिहिरण्ण्ययो व्वेतसोमध्यऽ आसाम् ॥

ॐ सम्म्यक् स्रवन्ति सरितोनधेनाऽअन्त-र्हृदामनसा पूयमानाः। एतेऽ अर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगाऽइवक्षिपणोरीषमाणाः ॥

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासोव्वात प्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषोन-व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्न्वमानः ॥

ॐ अभिप्रवन्त समनेवयोषाः कल्याण्य ÷

स्मयमानासो ऽअग्निम् । घृतस्य धाराः समिधो न सन्तता जुषाणो हर्य्यतिजा तवेदाः ॥

ॐ कन्या ऽइवव्वहतु मेतवाऽडऽअञ्ज्य-ञ्ञाना ऽअभिचाकशीभि । यत्रसोम÷ सूयते यत्र्यज्ञो घृतस्य धाराऽअभित त्पवन्ते ॥

ॐ अभ्यर्षत सुष्टुतिङ्गव्व्यमाजिमस्म्मा सुभद्द्राद्द्रविणानिधत्त । इमं यज्ञ न्नयत देवता नो घृतस्यधारा मधुमत्पवन्ते ॥

धामन्ते व्विश्वम्भुवनमधिश्रितमन्तरॅं समुद्रे हृद्यन्तरायुषि । अपामनीकेसमिथेय ऽआभृतस्त मश्याम मधुन्तन्त ऽऊर्म्मिम् ।

पुनस्त्वा दित्या रूद्रा व्वसवः समिन्धताम्पु नर्ब्रह्माणोव्वसुनीथयज्ञैः । घृतेनत्वन्तन्न्वव्वर्ध-यस्वसत्याः सन्तुयजमानस्य कामाः ॥

मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निन् । कविरॅं सम्म्राजमतिथिञ्जनाना-मासन्नापात्र ञ्जनयन्त देवाः ॥

पूर्णादर्व्विपरापत सुपूर्णा पूनरापत। व्वस्नेवव्विक्रीणा वहाऽइष मूर्ज्जं शतक्क्रतो स्वाहा॥

तत्पश्चात् श्रुचि में स्थित नारिकेल को अग्नि कुंड में यथोचित् रूप से सिधा रख दे। तदनन्तर श्रुचि स्थित घी के शेष को इस वाक्य से प्रोक्षणी पात्र में त्याग करे।

इदमग्नये वैश्वानराय नमम्॥

विशेष:—विवाहादि क्रियायां च शालायां वास्तु पूजने। नित्य होमे वृषोत्सर्गे पूर्णाहुतिं न कारयेत्—इति प्रयोगरत्ने निषिद्धत्वाच्च॥ अत्र पूर्णाहुति कृता कृतम्॥

॥ इति पूर्णाहुतिः॥

❀ वसोर्धारा होमः ❀

आचार्य निम्न संकल्प वसोर्धारा होम के निमित्त पूजन-कर्ता से करावें—

कृतस्य गृहवास्तु कर्मणः साङ्गता सिध्यर्थम् वसोर्द्धारां होष्यामि।

इसके पश्चात् दो स्तम्भों में धारण की हुई, उदुंबर की सीधी मनोहरा बाहुमात्र प्रमाण की वसोर्धारा को प्रागग्र रख, उसके ऊपर शृंखला से परिपूर्ण निर्मल घी से ताम्र आदि द्वारा नीचे यवमात्र छिद्र द्वारा आज्य को छोड़ते हुए अग्नि के

ऊपर वसोर्धारा गिरावे। उसके मुख में सोने की जिह्वा बांधे, उस घृत धारा के गिरने पर श्रुचि द्वारा नाली से अग्नि में गिरती हुई, अतः उस समय आचार्य निम्न मन्त्रां का उच्चारण करते हुए इन मन्त्रों से हवन करावे :-

ॐ सप्तते ऽअग्ने समिध ÷ सप्तजिह्वाः सप्त ऽ ऋषयः सप्तधामप्रियाणि। सप्तहोत्राः सप्तधात्वा यजन्तिसप्त योनी रापृण स्व घृतेन स्वाहा ॥

ॐ शुक्र ज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्य-ज्ज्योतिश्च ज्ज्योति ष्मांश्च। शुक्रश्च ऋत-पाश्चात्यंह० हाः ॥

ईदृङ्चान्न्या दृङ्च सदृङ्चप्रति सदृङ्च। मितश्चसम्मितश्चसभराः ॥

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्चधरुणश्च। धर्त्ता चविधर्त्ता चविधारयः ॥

ऋतजिच्चसत्य जिच्चसेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरे ऽअमित्रश्च गणः ॥

ईदृक्षास ऽएतादृक्षास ऽऊषुण ÷ सदृक्षासः प्रति सदृक्षास ऽएतन। मितासश्च सम्मितासोनो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन् ॥

स्वतवांश्च प्रघासी चसान्त पनश्च गृहमेधीच । क्रीडीच शाकीचो ज्जेषी । इन्द्र दैवीर्विशोमरूतो नुवर्त्मानो भवन् । एवमिमंयजमानन्दैवीश्श्चविशोमानुषीश्श्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥

इमंऽ० स्तनमुर्ज्ज स्वन्तन्ध यायां प्रपीनमग्ग्ने सरिरस्यद्धो । उत्सज्जुषस्वमधुमन्तमर्व्वन्तसमुद्रि॒यऽ० सदनमाविशस्व ॥

व्वसोः पवित्र॒ँ मसिशत धारंव्व सोः पवित्र॒ मसिसहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातुव्वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा ।

हवन के पश्चात् जो घृतादि शेष हो उसे प्रोक्षणी पात्र में इस वाक्य का उच्चारण करके छोड़ दे :—

'इदंग्नये वैश्वानराय न मम्'

॥ इति वसोर्धारा होमः ॥

❋ अग्नि प्रदक्षिणा ❋

अग्नि देव की प्रदक्षिणा कर अग्नि के पीछे-पश्चिम देश में पूर्वाभिमुख बैठ स्रुवा से स्रुवा कुंड से भस्म लेकर निम्न चार

मन्त्रों से पूजनकर्ता क्रमानुसार ललाट-गले-दाहिने बाहु और हृदय में भस्म लगावें :—

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्ने:

ललाट् पर इस मन्त्र से लगावे।

ॐ कश्यपस्यत्र्यायुषम्

गले पर इस मन्त्र से लगावे।

ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषम्।

दाहिने बाहु पर इस मन्त्र से लगावे।

ॐ तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्।

हृदय में इस मन्त्र से लगावे।

तत्पश्चात् प्रोक्षणी में स्थित घृत का पूजनकर्ता प्राशन करे। पुनः प्रणीता में स्थित पवित्री ग्रन्थि को अलग कर उन पवित्रीयों से प्रणीता जल को अपने सिर पर छिड़क कर उन दोनों पवित्रीयों को अग्नि में गेर देवे।

-: इति अग्नि प्रदक्षिणा :-

❋ पूर्णपात्रदानम् ❋

आचार्य निम्न संकल्प पूजनकर्ता से करावें :—

अद्य कृतस्य गृहवास्तु कर्मणः साङ्गतासिद्धये

तत्सम्पूर्ण फल प्राप्तये च इदं पूर्ण पात्र सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे।

--: इति पूर्णपात्र दानम् :--

❋ प्रणीता जलेन संस्कारादि ❋

आचार्य अग्नि के पीछे जल युक्त पात्र को लेकर रख दे, तत्पश्चात् उसे उलट दे, पुनः उस जल को निम्न मन्त्र द्वारा 'उपयमनकुशा' आदि से पूजनकर्ता-स्त्री और पुत्र के सिर पर सेचन करें।

ॐ आपः शिवा शिवतमाः शान्ताः शान्त तमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥

उपयमन कुशा को अग्नि में फेंक दे।

विशेषः—'एषवैयाज्ञीयोऽवभृतथः' इसी को ही याज्ञीय अवभृथ कहा जाता है कुछ पद्धतिकारों ने इस मार्जन को ही अवभृथ स्नान की संज्ञा से विभूषित किया है।

--: इति प्रणीता जलेन संस्कारादि :--

❋ वास्तु बलि ❋

वास्तु मंडल के पश्चिम देश में या वास्तु मंडल के मध्य में पलाश के पत्तो पर आचार्य पूजन कर्ता से 'शिख्यादीभ्यो'

कहवा के बलि प्रदान करावे. बलि देने का प्रकार यह है। पूजनकर्ता घृत युक्त पायस एकग्रास मात्र लेकर पत्तल पर इस प्रकार कहते हुए वास्तु देवताओं को समर्पित करे :—

१ : ॐ शिखीने एष पायस बलि र्नमः।
२ : ॐ पर्जन्याय एष पायस बलि र्नमः।
३ : ॐ जयन्ताय एष पायस बलि र्नमः।
४ : ॐ कुलिशायुधाय एष पायस बलि र्नमः।
५ : ॐ सूर्याय एष पायस बलि र्नमः।
६ : ॐ सत्याय एष पायस बलि र्नमः।
७ : ॐ भृशाय एष पायस बलि र्नमः।
८ : ॐ आकाशाय एष पायस बलि र्नमः।
९ : ॐ वायवे एष पायस बलि र्नमः।
१० : ॐ वितथाय एष पायस बलि र्नमः।
११ : ॐ गृहक्षताय एष पायस बलि र्नमः।
१२ : ॐ यमाय एष पायस बलि र्नमः।
१३ : ॐ गन्धर्वाय एष पायस बलि र्नमः।
१४ : ॐ भृङ्गराजाय एष पायस बलि र्नमः।

१५ : ॐ मृगाय एष पायस बलि र्नमः।

१६ : ॐ पितृभ्योन एष पायस बलि र्नमः ।
१७ : ॐ दौवारिका एष पायस बलि र्नमः ।
१८ : ॐ सुग्रीवाय एष पायस बलि र्नमः ।
१९ : ॐ पुष्पदन्ता एष पायस बलि र्नमः ।
२० : ॐ वरुणाय एष पायस बलि र्नमः ।
२१ : ॐ असुराय एष पायस बलि र्नमः ।
२२ : ॐ शोषाय एष पायस बलि र्नमः ।
२३ : ॐ पापाय एष पायस बलि र्नमः ।
२४ : ॐ रोगाय एष पायस बलि र्नमः ।
२५ : ॐ अहये एष पायस बलि र्नमः ।
२६ : ॐ मुख्याय एष पायस बलि र्नमः ।
२७ : ॐ भल्लायम एष पायस बलि र्नमः ।
२८ : ॐ सोमाय एष पायस बलि र्नमः ।
२९ : ॐ सर्पाय एष पायस बलि र्नमः ।
३० : ॐ आदित्यै एष पायस बलि र्नमः ।
३१ : ॐ दित्यै एष पायस बलि र्नमः ।
३२ : ॐ अद्भ्यो एष पायस बलि र्नमः ।

३३ : ॐ सावित्राय एष पायस बलि नमः ।

३४ : ॐ जयाय एष पायष बलि र्नमः ।
३५ : ॐ रूद्राय एष पायस बलि र्नमः ।
३६ : ॐ अर्यम्णो एष पायस बलि र्नमः ।
३७ : ॐ सविमे एष पायस बलि र्नमः ।
३८ : ॐ विवस्वते एष पायस बलि र्नमः ।
३६ : ॐ मित्राय एष पायस बलि र्नमः ।
४० : ॐ राजयक्ष्मणो एष पायस बलि र्नमः ।
४१ : ॐ पृथ्वीधराय एष पायष बलि र्नमः ।
४२ : ॐ आपवत्साय एष पायस बलि र्नमः ।
४३ : ॐ ब्रह्मणे एष पायस बलि र्नमः ।
४४ : ॐ चूरकौ एष पायस बलि र्नमः ।
४५ : ॐ विदार्यै एष पायस बलि र्नमः ।
४६ : ॐ पूतनायै एष पायस बलि र्नमः ।
४७ : ॐ पाप राक्षस्यै एष पायस बलि र्नमः ।
४८ : ॐ स्कंदाय एष पायस बलि र्नमः ।
४६ : ॐ जृंभकाय एष पायस बलि र्नमः ।
५० : ॐ पिलिपिच्छाय एस पायस बलि र्नमः ।
५१ : ॐ उग्रसेनाय एष पायस बलि र्नमः ।

५२ : ॐ डामराय एष पायस बलि नमः ।
५३ : ॐ कालाय एष पायस बलि नमः ।
५४ : ॐ एकपदे एष पायस बलि नमः ।

तत्पश्चात् पूजनकर्ता दक्षिणा स्वरूप सोने की टिकीड़ियाँ अथवा द्रव्य प्रत्येक देवताओं के नाम से 'यथा इदं हिरण्यं शिखीने नमः' आदि कहकर चढ़ावे, केवल ब्रह्मा के लिये गोदान 'एषा पयस्विनी गौ ब्रह्मणे नमः' कहकर प्रत्यक्ष या गौ निष्क्रय रूप से देवे। इसके पश्चात् अवशिष्ट चरुपायादि देवताओं को माष भक्त बलि देवे। तत्पश्चात् आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पूजनकर्ता से नैऋत्य दिशा में महाबलि प्रदान करावें।

१—ॐ देव्यो देवा मुनीन्द्रा भुवन पतयो दानवाः सर्व सिद्धायक्षा रक्षांसिनागा गरूड मुख खगा गुह्यका देवदेवाः। डाकिन्यो देव वेश्या हरि दधिपत योमा तरो विघ्ननाथाः प्रेता भूताः पिशाचाः पितृ वन नगराद्या धियाः क्षेत्रपालाः ॥

२— गन्धर्वाः किन्नराः सर्वे जटिलाः पितरो ग्रहाः। कूष्माण्डाः पूतना रोगा ज्वरा वैतालिकाः शिवाः ॥

३—असकल्पुताश्चव पिशुना भक्त मांसा

न्यनेकश। लम्बक्रोडास्तथाह्रस्वा दीर्घाः शुक्लास्त थैवच ॥

४—खंजाः शुक्लास्तथैकाक्षा नानापक्षि मुखास्तथा। व्यालास्या उष्ट्रवक्त्रश्च अवक्त्राः क्रोडवर्जिताः ॥

५—धमनाभास्तमालाभा द्विपा भामेष सन्नि-भाः। द्रुतगाश्च मनोगाश्च वायुवेग समाश्रये।

६ बहुवक्त्रा बहुशिरा बहुवा हुसमन्विताः बहुपादा बहुदृशः सर्पाभरण भूषिताः ॥

७—विकटा मुकुटा केचिततथा वैरत्न धरिणः सूर्यकोटि प्रतीकाशा विद्युत्सदृशवर्चसः कपिला हुत भुगवर्णाः प्रथमा बहु रूपिणः गृह्णन्तु च बलिं सर्वे तृप्तायान्तु बलि र्नमः ॥

इसके पश्चात् पूजनकर्ता हाथ-पैर धोकर आसन पर बैठे और प्रार्थना करे :—

भूतानि यानीह वसन्तितानि बलिं गृहीत्वा विधीवत्त प्रयुक्तम्। अन्यत्र वासं करिकल्प्य यान्तु क्षमन्तु तान्यत्र नमोस्तु तेभ्यः।

॥ इति वास्तु बलि ॥

❀ गृह प्रोक्षण एवं प्रार्थना ❀

तत्पश्चात् कांश्य पात्र में दूध, जल और उदुम्बर का पत्ता-दूब, गोवर, दहि, मधु, घृत, कुश तथा जौ डालकर उत्तर की तरफ स्थापित पात्र से जल लेवे, और इस वस्तु मिश्रीत जल से जितने भी खुटी आदि गृह के देवता स्थान है। सबका प्रोक्षण आचार्य पूजनकर्ता से करावे, इस प्रोक्षण के समय पावमान, सूक्त रक्षोघ्न सूक्त का पाठ आचार्य करते रहे, इसके बाद गृह के पूर्व सन्धि का स्पर्श करते हुए, यह वाक्य कहें :—

ॐ श्रीश्चत्वायश्च पूर्वे सन्धौ गोपायेताम् ।

इसके बाद दक्षिण सन्धि का स्पर्श करते हुए यह वाक्य कहें :—

यज्ञस्चत्वा दक्षिणा च दक्षिणे सन्धौ गोपायेताम् ।

पुनः पश्चिम सन्धि का स्पर्श करते हुए यह वाक्य कहें: —

ॐ अन्नंच त्वा ब्राह्मणा भत्र पश्चिमे सन्धौ गोपायेताम् ।

पश्चिम सन्धि के स्पर्श के पश्चात् पुनः उत्तर सन्धि का स्पर्श इस वाक्य से करे :—

ॐ उर्क् चत्वा सूनृता चोत्तरे सन्धौ गोपाताम् ।

इसके बाद गृह से बाहर निकल कर, असम्भव हो तो गृह के भितर ही खड़े होकर पूर्वादि क्रम से चारों दिशाओं में निम्न वाक्यों का उच्चारण आचार्य पूजनकर्ता से करावे :—

'पूर्व में पठनिय वाक्य'

ॐ केता च मा सुकेता च पुरस्ता द्रोपाये तामित्यग्निर्वै केता दित्यः सुकेता च तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोस्तु तौ मा पुरस्ताद्रो पायेताम् ।

'दक्षिण में पठनिय वाक्य'

ॐ गोपायमानं च मा रक्ष माणाच दक्षिण तो गोपाये तामित्य हर्वै गोपाय मानर्ठ० रात्रीरक्ष माणा ते प्रपद्ये ताभ्यां नमोस्तु तेमा दक्षिण तो गोपायेताम् ।

'पश्चिम में पठनिय वाक्य'

ॐ दीदि विभव माजा गृवि भव पभवा द्रो पावेता मित्यन्तं वैदी दिविः प्राणो जागृवि स्तौ प्रपद्ये ताभ्यां नमोस्तु तौ मापभवा द्रो पायेताम् ।

'उत्तर में पठनिय वाक्य'

ॐ अस्व प्रभव मानव द्राणभवोत्तरतो गो-पायेता मिति चंद्रमा अस्व प्रोवायु रन द्राणस्तौ

प्रपद्ये ताभ्यां नमोस्तु तौ मोत्तरतौ गोपायेताम् ।

—: इति गृह प्रोक्षण एवं प्रार्थना :—

❀ त्रिसुत्री वेष्टन एवं जलदुग्ध धारा पातन ❀

इसके पश्चात् आचार्य वास्तु मन्डलगत ब्रह्मा के स्थान पर सुन्दर रूपवती आभूषणों सुसज्जित स्त्री रूपा पृथ्वी का ध्यान करके :—

ॐ धरायै नमः ।

इस मन्त्र से पंचोपचार पूजन कर गृह के पूर्व दिशा से प्रारम्भ कर कुंकुम लिप्त त्रिशूत्री से पावमान एवं रक्षोघ्न सूक्तों को पढ़ते हुए 'ईशान कोण' से आरम्भ कर तीन-बार धीरे-धीरे चलकर गृह को लपेटे । उसके बाद दुग्ध पूर्ण या जल पूर्ण पात्र से पूर्व कथित दोनों सूक्तों का उच्चारण करते हुए ईशान कोण से प्रारम्भ कर अविच्छिन्न धारा प्रदक्षिण क्रम से प्रदान करे ।

तत्पश्चात् गृह में ध्वज और पताका लगावे ।

—: इति त्रिसुत्री वेष्टन एवं जलदुग्ध धारा पातन :—

❀ ध्वज पताका स्थापन विधि ❀

पूर्व दिशा में जाकर ध्वज स्थान के समिप आसन पर बैठकर आचमन एवं प्राणायाम पूजनकर्ता करे। इसके पश्चात् तिथ्यादि का उच्चारण कर संकल्प के अन्त में 'अस्मिन गृह वास्तु शांति कर्मणि ध्वज पताकादि नाम स्थापनम् तत अधिष्ठात्रि देवानाम पूजनं च करिष्ये, ऐसा वाक्य पूजनकर्ता से आचार्य कहवाये, फिर पूर्व दिशागत पीत रंग की ध्वजा, पताका स्थापित करे। उसमें 'ॐ इन्द्राय नमः' कह के इन्द्र का पूजन करे।

इमां पताकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभनम् ।
आलभामि सुरेशाय शची प्रीत्यै नमोनमः ।

ॐ हेतु काराय नमः ।
ॐ क्षेत्र पालाय नमः ।

इन नाम मन्त्रों से ध्वजा और पताका का पूजन कर प्रार्थना करे :—

इंद्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः ।
शत यज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः ।।

फिर निम्न श्लोक से ध्वज के समीप बलि प्रदान करे :—

माष भक्त बलि देव गृहाणेन्द्र शचीपते ।
यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकल सुराणा मधिपतये सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यो इमं सदीपदधि माष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो इंद्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव । अनेन बलि दानेन इंद्रः प्रीयताम् न मम ॥

इसके पश्चात् अग्नि कोण में आकर पूर्ववत ध्वजा-पताका रक्त वर्ण की स्थापित करे निम्न श्लोक को पढ़े :—

पताका मग्नयेरक्तताम गन्ध माल्यादि भूषिताम्,
स्वाहा युक्ताय देवाय ह्वालाभामि हविर्भुजे ॥

ध्वज और पताका के बीच में:—

१—ॐ कुमुदाय नमः ।

२—ॐ क्षेत्रपालाय नमः ।

निम्न श्लोक से पूजा कर प्रार्थना करे।

आग्नेय पुरुषो रक्तः सर्व देवमयोऽव्ययः ।
धूम्र केतु रजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥

निम्न श्लोक से ध्वज के समीप बलि प्रदान करे :—

इमं माष बलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन ।
यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

अग्नने सांगाय सपरिवाराय सशक्ति काय इमं सदीप दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन अग्निः साङ्गः सपरिवारः सशक्तिकः प्रीयताम् ।

अग्नि कोण के पश्चात् दक्षिण में जाकर कृष्ण वर्ण की ध्वजा पताका स्थापित कर निम्न श्लोक को पढ़े :—

कृष्णवर्णां पताकाञ्च कृष्णवर्णं ध्वजं तथा ।
अन्तकायालभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे ॥
इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादि भूषितम् ।
यमदेव गृहाणत्व प्रसीद करुणा कर ॥

निम्न श्लोक से पूजन कर प्रार्थना करे :—

यमस्तु महिषारूढो दण्ड हस्तो महाबलः ।
धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमोनमः ।

निम्न श्लोक से ध्वज के समीप बलि प्रदान करे :—

इमं माष बलिं देव गृहाणान्तक वै यम
यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ! ।।

ॐ यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो यम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुकर्ता शांतिकर्ता तुष्टि कर्ता, पुष्टि-कर्ता क्षेमकर्ता आरोग्य कर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन यमः साङ्गः सपरिवारः सायुध सशक्तिकः प्रीयतां नमम् ।।

तत्पश्चात् नैऋर्त्य कोण में आकार पुनः नील वर्ण की ध्वजा-पताका स्थापित कर निम्न श्लोक पढ़े : —

ध्वजपताका मालभ्य पताकानिऋ तञ्च व नीलवर्णं ध्वजं तथा । पिशाच गणनाथाय आलभामि ममाध्वरे ।।

ॐ कुमुदाय नमः ।
ॐ क्षेत्रपालाय नमः ।

इस श्लोक से प्रार्थना करे :—

सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋतिर्नीलविग्रहः ॥
करे खड्गधारो नित्यं निर्ऋतये नमो नमः ॥

निम्न श्लोक से ध्वज के समीप बलि प्रदान करे :—

इमं माष बलिं यत्नो गृहाण निर्ऋति प्रभो ।
यज्ञ सरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुःकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः साङ्गःसपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयताम नमम् ।

इसके पश्चात् पश्चिम में श्वेत वर्ण की ध्वजा पताका स्थापित कर निम्न श्लोक पढ़े :—

श्वेतवर्णं पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम् ।
वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये ॥

इस श्लोक से प्रार्थना करे :—

पाश हस्तस्तु वरुणः साम्भसाम्पतिरीश्वरः ।
शमन्नथाप्सु विघ्नानि नमस्ते पाशपाणये ॥

इस श्लोक से ध्वज के समीप बलि प्रदान करे :—

इमं माष बलिं देव गृहाण जलधीश्वरः ।
यज्ञ सरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ॐ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो वरुण बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टि-कर्ता क्षेमकर्ता आरोग्य कर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन नमो भगवये सकल जला-नामधिपतये न मम ॥

पुनः वायव्य कोण में आकर धूम्र वर्ण की ध्वज पताका स्थापित कर निम्न श्लोक पढ़े ।

पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णं ध्वजं तथा ।
आलभाम्यनुरूपाय प्रसादाय हिताय च ॥

निम्न श्लोक से प्रार्थना करे :—

अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्धवहः प्रभुः ।
तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च ॥

निम्न श्लोक से ध्वज के समीप बलि प्रदान करे :—

माष भक्त बलिं वायो मया दत्तं गृहाण भो ।
यज्ञ सरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ॐ वायवे साङ्गःसपरिवार सायुधः सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो वायो साङ्गःसपरिवारः सायुधः सशक्तिकः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शांति कर्ता पुष्टि कर्ता तुष्टि कर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन नमो भगवते वायवे सकल प्राणनाम धिपतये प्रीयताम न मम् ॥

उत्तर की ओर हरित वर्ण की ध्वजा-पताका स्थापित कर निम्न श्लोक को पढ़े ।

हरितवर्णां पताकां च हरिणद्वर्णं मयं ध्वजम् ॥
कुबेराय लभाम्यव पूजये च सदार्थिना ॥

इस श्लोक से प्रार्थना करे :--

गौरोपम पुमान्स्थूलः सर्वौषधि रसादयः।
नक्षत्राधिपतिः सोमस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

निम्न श्लोकसे ध्वज के समीप बलि प्रदान करे :--

इमं माष भक्त बलिं देव गृहाण त्वं धनप्रद।
यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय इमं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि।

भो सोम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता-शांति कर्ता पुष्टि कर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्य कर्ता वरदो भव।

अनेन बलिदानेन नमो भगवते सोमाय सकल कोशाधिपतये प्रीयतां न मम्।

पुनः ईशान में श्वेत ध्वज-पताका स्थापित कर निम्न श्लोक को पढ़े।

ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम्।
आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने॥

इस श्लोक से प्रार्थना करे :--

सर्वाधिपो महादेवः ईशानः शुक्ल ईश्वरः ।
शूलपाणि विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः ॥

निम्न श्लोक से ध्वज के समीप बलि प्रदान करे :—

इमं माषबलिं देव गृहाणेशान शंकरः ।
यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ॐ ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो इशानं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता शांति कर्ता पुष्टि कर्ता तुष्टि कर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन ईशानः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम ॥

ईशान कोण और पूर्व दिशा के बीच में जाकर पञ्च वर्ण की ध्वजा-पताका स्थापित कर निम्न श्लोक पढ़े :—

पञ्चवर्णां पताकां च पञ्चवर्ण ध्वजं तथा ।
आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणे नन्त शक्तये ॥

निम्न श्लोक से प्रार्थना करे :—

पद्मयोनिश्च तुर्मूर्ति वेदव्यास पितामहः ।
यज्ञा ध्यचास्तुर्वक्रस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥

निम्न श्लोक से ध्वज के समीप बलि प्रदान करे :—

इमं माष बलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन ।
यज्ञ सरचाणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ॐ ब्रह्मणे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधि माष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो ब्रह्मन् मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता: शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता, क्षेमकर्ता, आरोग्य कर्ता वरदो भव ।

अनेन बलि दानेन नमो भगवते ब्रह्मणे सकल वेद शास्त्र तत्व ज्ञानाधिपतये प्रीयतां न मम ।

इसके पश्चात् नैऋर्त्य और पश्चिम के मध्य में जाकर पुनः मेघ वर्ण की ध्वजा-पताका स्थापित कर निम्न श्लोक पढ़ें:—

मेघवर्णा पताकां च मेघवर्ण ध्वजन्तथा ।
आल भामि ह्यनन्ताय धरिणी धारिणे नमः ॥

निम्न श्लोक से प्रार्थना करे :—

घनवर्णां पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम् ।
स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः ॥

निम्न श्लोक से ध्वज के समीप बलि प्रदान करे :—

इमं माष बलिं शेष गृहाणानन्त पन्नग ।
यज्ञ संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदोभव ॥

ॐ अनन्ताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ।

भो अनन्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शांति कर्ता पुष्टि कर्ता तुष्टि कर्ता क्षेमकर्ता आरोग्य कर्ता वरदो भव ।

अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम ।

तत्पश्चात् ईशान में जाकर आचार्य पूजनकर्ता से पञ्चरंग महाध्वज का पूजन निम्न वाक्य का उच्चारण करवाते हुए करवाये :—

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

ध्वज दण्ड का पूजन आचार्य पूजनकर्ता से निम्न वाक्यों का उच्चारण करवाते हुए करवाये :—

ॐ किन्नरेभ्यो नमः ।

ॐ पन्नगेभ्यो नमः ।

तत्पश्चात् निम्न प्रार्थना आचार्य पूजनकर्ता से करवाये:—

इमं विचित्र वर्णन्तु महाध्वज विनिर्मितम् ।
महाध्वजञ्चाल भामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥
अमुं महाध्वजं चित्रं सर्व विघ्न विनाशकम् ।
महा मण्डप मध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने ॥
अनया पूजया इन्द्रः प्रीयताम ।

—: इति ध्वज-पताका स्थापन विधि :—

❋ गर्त्त कर्मः ❋

आचार्य पूजनकर्ता से सम्पूर्ण गृह भूमि को नौ भागों में विभाजित करने की कल्पना करावे। फिर पूर्व की ओर आग्नेय कोण में आकाश संज्ञक वास्तु पद में घुटने भर गढ्ढा पूजन-कर्ता खोदे और उसका गोबर से लेपन करें। उसके मध्य में सफेद चन्दन, पुष्प, चावल, सप्त-धान्य, दहि, भात छोड़े इसके पश्चात् जल पूर्ण नवीन कुंभ (घड़े) की गन्धादि से आचार्य पूजनकर्ता से पूजा करवाये।

पूजनकर्ता दोनों हाथों से पकड़कर घुटने टेक कर 'ॐ नमो वरूणाय' इस वाक्य को कहकर कलश के जल से उस गढ्ढे को भर देवे, पुनः उस गढ्ढे में मिट्टी से निर्मित की हुई पेटी

में सप्तधान्य, दहि, भात, सेवाल, फल, पुष्प छोड़कर वास्तु मंडल पिठ पर पूजित, स्वर्णवास्तु प्रतिमा को पेटी में रखकर उस पेटी को गढ्ढे में छोड़ देवे।

तत्पश्चात् आचार्य पूजनकर्ता के हाथ में पुष्पांजलि देकर उससे निम्न प्रार्थना करवाये :—

॥ इति गर्त्त कर्मः ॥

❋ वास्तु पुरुष प्रार्थना ❋

पूजितोऽसिमया वास्तोहोमाद्यैरर्चनैः शुभैः ।
प्रसिद्पाही विश्वेश देहिमे गृहजं सुखम् ॥१॥
नमस्ते वास्तु पुरुष भूशय्या भिरत प्रभो ।
मग्दहं धन धान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥२॥
प्रार्थयामी त्यहं देवशालाया अधिपस्तुयः ।
प्रायश्चित्त प्रसङ्गे न गृहार्थे यन्मया कृतम् ॥३॥
मूलछेदं तृणच्छेदं कृमि कीट निपातनम् ।
हननं जलजीवानां भूमौ शस्त्रेण घातनम् ॥४॥
अनृतं भाषितम् यच्च किं चिद्वृक्षस्य पातनम् ।
एतत्सर्वं क्षमस्वेदं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥५॥

गृहार्थेय त्कृत पापम् ज्ञानेनाथ चेतसा ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव गृहशालाम शुभां कुरु ॥६॥
ॐ सशैल सागरां पृथ्वीं यथा वहसि मूर्द्धनि ।
तथा मां वह कल्याणि सम्पत्सन्ततिभिः सह ॥

इसके पश्चात् पूजनकर्ता उस गढ्ढे को भर देवे, और उस गढ्ढे की भूमि को समान करके गोबर से लिपकर नाम मन्त्र से पूजा कर उसके ऊपर घृत का दीपक जला देवे, तत्पश्चात् आचार्य सहित ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे, और आचार्यादि भी सपरिवार सहित पूजनकर्ता का अभिषेक करें। देवताओं का विसर्जन करे, तत्पश्चात् पूजनकर्ता यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करावे। तथा पूजन कर्म ईश्वर के अर्पण करे। तदनन्तर गृह प्रवेश करे।

॥ इति वास्तुपुरुष प्रार्थना ॥

❋ गृह प्रवेश विधिः ❋

नूतन जल पूर्ण पञ्चपल्लव विभूषित दुर्वा वस्त्र वेष्ठित पूर्ण पात्र से ढके हुए कुम्भ को दोनों हाथों से दाहिने कन्धे पर लेकर पूजनकर्ता ब्राह्मणों के साथ गृह में दाहिने पैर को आगे बढ़ाकर प्रवेश करे।

तन्त्रमन्त्रः—

ॐ धर्म स्थूणा राजठं० श्री स्तुपमहोरात्रे द्वारफल के इंद्रस्य गृहाव सुमंतो वरूथिनस्ता नहं प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिः सहयन्मे किंचिदस्यु पहूतः सर्वगणः सखायः साधु संवृत्त स्तां त्वा शाले रिष्ट वीरा गृहान्नः संतुसर्व्वतः ।

गृह प्रवेश के पूर्व आचार्य पूजनकर्ता से द्वार शाखाओं को इस श्लोक से नमस्कार करवाये :—

स्थापिता सिमयाशाखे सुखहा ऋद्धिदाभव ।
पूजिता सिमया भक्त्या स्थापिता च स्थिरा भव ॥

पूर्व दिशा में :—

ॐ गणपतये नमः ।

दक्षिण शाखा में —

ॐ धात्रे नमः ।

वाम शाखा में —

ॐ विधात्रे नमः ।

उपर्युक्त वाक्यों का उच्चारण आचार्य पूजनकर्ता से करवाकर पूजन करवाये ।

तत्पश्चात् स्तम्भ पूजन में आचार्य पूजनकर्ता से निम्न श्लोक कहवाये :—

धारयत्वं महाभागा निर्मितो विश्वकर्मणा ।
स्थापितः शुभदो नित्यं मम गेहस्थो भव ॥

तथा गन्धादि से पूजनकर्ता से पूजन करावे ।

तत्पश्चात् दीप स्थान का पूजन आचार्य पूजनकर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे :—

दीपाय नमः ।

दीप स्थान के पूजन के बाद रसोई घर में चूल्हे का पूजन आचार्य पूजनकर्ता निम्न वाक्य कहवा के करावे :—

ॐ गन्धर्वाय नमः

चूल्हे के पूजन के बाद भोजन बनाने के पात्रों का पूजन आचार्य पूजनकर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे :—

ज्येष्ठाय नमः

पात्रों के पूजन के बाद जल स्थान का पूजन आचार्य पूजनकर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे :-

ॐ वरूणाय नमः

जल स्थान के पूजन के बाद चक्की के स्थान का पूजन आचार्य पूजन कर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे :—

ॐ सुभगायै नमः

चक्की के स्थान के पूजन के बाद ऊलूखल के स्थान का पूजन आचार्य पूजनकर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे :--

ॐ रौद्र पीठाय नमः

ऊलूखल के पूजन के बाद मूसल के स्थान का पूजन आचार्य पूजन कर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे।

ॐ बलभद्रप्रियाय प्रहरणाय नमः।

मूसल के स्थान के पूजन के बाद शयन के स्थान का पूजन आचार्य पूजनकर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे :—

ॐ कामाय नमः

शयन के स्थान के पूजन के बाद पृष्ठ भाग का पूजन आचार्य पूजनकर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे :—

ॐ पन्नगाय नमः

पृष्ठ भाग के पूजन के बाद खाट की पट्टियों का पूजन आचार्य पूजनकर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे :--

ॐ किन्नराय नमः

खाट की पट्टियों के पूजन के बाद गृह के मध्य भाग का पूजन आचार्य पूजनकर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे :--

ॐ क्षेत्रपालाय नमः

गृह के मध्य भाग के पूजन के बाद बर्तन (पात्र) स्वच्छ करने के स्थान का (गृह देवताओं) पूजन आचार्य पूजनकर्ता से निम्न वाक्य कहवा के करावे।

ॐ रक्षो जनेभ्य नमः

तत्पश्चात् आचार्य की आज्ञा प्राप्त कर पूजनकर्ता जलपूर्ण कलश को प्रधान कमरे में धान्य पर स्थापित करें। और आचार्य सहित ब्राह्मणों से पूजनकर्ता पुण्याह वाचन कराके आर्शीवाद लेवे।

॥ इति गृह वास्तु शान्ति ॥

लेखक-टीकाकार--पं० वेद प्रकाश शास्त्री गौड़
संशोधक-सम्पादक--पं० अशोक कुमार गौड़

परिशिष्ट

गृह वास्तु विषये विशेष विचारः

१—एतद् वास्तूपशमनं कृत्वा कर्म समाचरेत् ।
प्रासादभवनोद्यानप्रारम्भे परिवर्तने ॥
पुरवेश्मप्रवेशे च सर्वदोषोपशान्तये ।
वास्तूपशमनं कृत्वा ततः सूत्रेण वेष्टयेत् ॥
रक्षोघ्नपावमानेन सूक्तेन भवनादिकम् ।
नृत्यमङ्गलवाद्यैश्च कुर्याद् ब्राह्मणभोजनम् ॥
अनेन विधिना यस्तु प्रतिसंवत्सरं बुधः ।
गृहे वाऽऽयतने कुर्यान्न स दुःखमवाप्नुयात् ॥

इति हेमाद्रौ मत्स्यपुराणे गृहनिर्माण-गृहप्रवेशादौ वास्तुशान्ति सर्वाशुभ-निवृत्त्यादिफलिका विहिता ।

२—कार्यारम्भेषु सर्वेषु नववेश्मप्रवेशने ।
ग्रहशान्ति विधानेन कृत्वाऽभीष्ट समश्नुते ॥

इति शौनकेन ग्रहयागस्यापि वास्तुशान्तौ विधानात् सति सम्भवे ग्रहयाग-सहिता वास्तुशान्तिः प्रकर्तव्या । ग्रहपूजनं च वास्तुदेवतापूजनापेक्षया पूर्वमेव कार्यम् । होमोऽपि ग्रहोद्देश्यको वास्तुदेवोद्देश्यकहोमापेक्षया पूर्वमेव कार्यः । ग्रहशान्तेः सकलकर्मसाधारण्येन पुण्याहवाचनादीनामिव कर्मारम्भात्पूर्वमेव अनुष्ठातुमुचितत्वात् ।

"ततो ग्रहार्चनं वास्तुपूजाविधिमतः परम् ।"

इति विश्वकर्मप्रकाशे (८।२।२७) वचनात् ।

"होमं कुर्याद् ग्रहाणां तु स्वशाखोक्तविधानतः ।
वास्तुहोमं ततः कुर्यात्................ ॥" (११।४०)

इति तत्रैव होमेऽपि ग्रहहोमस्यैव पूर्वोक्तेः ।

३—"नित्यं नैमित्तिकं हित्वा सर्वमन्यत्समण्डपम् ।"

इति शारदातिलकात् । मत्स्यपुराणे गृहप्रवेशविधिमुक्त्वा "प्रासादवास्तुशमने च विधिर्यं उक्तः" (२५७) इति प्रासादवास्तुशान्त्युक्तविधानस्य गृहवास्तुशान्तौ अतिदिष्टत्वाच्च मण्डपकरणं सति संभवे भवति । प्रासादवास्तुशान्तौ च मण्डपो मात्स्ये उक्तस्तदनुसृत्य मयूखादौ चोक्तः ।

४—वास्तुशान्तौ वरदो नामाग्निः । वास्तुयागे "प्रजापतिः" इति वास्तुतत्त्वे वचनात् प्रजापतिर्वा ।

५—"ईशान्यां चतुरस्रां चतुरङ्गुलमुच्छ्रितां वेदिं कृत्वा" (आश्व० गृ० प०) इति सूत्राद्वास्तुवेदिः चतुरस्रा चतुरंगुलोच्छ्रिता हस्तमाना कार्या । शान्तिसार-शान्तिकमलाकर-मयूखकारादिभिः सर्वैः परिशिष्टवचनमनुसृत्य ईशान्यामेव वास्तुवेदिकरणमुक्तम् ।

गर्त्तस्योत्तरपूर्वेण स्थण्डिलं हस्तमात्रकम् ।
द्विवप्रं चतुरस्रं च वितस्त्युच्छ्रायसम्मितम् ॥

इति पूजार्थवेदिनिर्माणस्य ईशान्यामेव वास्तुवेदिकरणं युक्तम् । पूर्वतो वेदिकरणं तु निर्मूलमेव ।

ग्रहवेदिश्च वास्तुवेदितो दक्षिणतः कार्या, वास्तुवेदिश्च तदुत्तरतः । ग्रहाणां पूर्वाङ्गत्वात् प्राक् पूजनीयत्वेन पश्चाद् रुद्रपूजाया उदक्संस्थत्वापेक्षणात् । अतएव—

अथ प्रधानादपि यत्र पूर्वं ग्रहादिवासश्च तदा प्रधानम् ।
ईशान देशे च ततस्त्ववाच्यां ग्रोर्खेटवेदिः करजिस्तृतोक्ता ॥

इति कुण्डरत्नावल्यामुक्तम् । भट्टकृतमहारुद्रपद्धतौ च "महारुद्र-वास्तुशान्त्यादौ प्रधानमीशान्यां तद्दक्षिणे ग्रहाः" इत्युक्तम् ।

"अवाङ्मुखो निपतित ईशान्यां दिशि संस्थितः ।" (वि०क०प्र०४।२

इति विश्वकर्मप्रकाशवचनमप्यत्रानुकूलमिति ।

६—वास्तुमण्डलकोणेषु ईशानादिक्रमेण च ।

शंकूनां रोपणं शस्तं प्रादक्षिण्येन मार्गतः ॥ (वि० क० प्र० ५।१३)

इति वचनात् ।

कुर्याद् वेदिं हस्तमितां चतुरस्रामुदक्प्लवाम्।
तदीशानादिकोणेषु लोहकीलान् निवेशयेत्॥

इत्युक्तेश्च ईशानादितः शंकुरोपणम्।

स्तम्भोच्छ्राये शिलान्यासे सूत्रयोजनकीलके।
खननेऽवटसंस्कारे प्रारम्भो वह्निगोचरे॥

इति वचनादाग्नेयादित इति केचित्। शङ्कवश्च सारदारुमया इति श्लोक-शुल्वे। "कुर्याद् वेदिम्" इत्युक्तवचनाल्लोहमया वा इत्यपि जीर्णसम्प्रदायः।

७—वास्तुदेवतास्थापने शिख्यादिक्रमः—

"शिखी चैवाथ पर्जन्यो जयन्तः कुलिशायुधः।"

इत्यादिना मत्स्यपुराणे उक्तः। आश्वलायनगृह्यपरिशिष्टेऽपि "ब्राह्मण-मादितः कृत्वाऽदित्यन्तमेके" इति शिख्यादिक्रममुक्त्वा उक्तम्। अत एवात्र एकग्रहणात् ब्रह्मादिक्रमेऽनादरता प्रदर्शिता। मयूख-शान्तिसार-शान्तिकमला-करादिभिरपि अयमेव क्रमोऽङ्गीकृतः। शारदातिलके परं "ब्रह्माणं पूजयेदादौ" इत्यादिना ब्रह्मादिक्रम उक्तः।

८—वास्तुपूजनं वेदमन्त्रैर्नाममन्त्रैः समुच्चितैः प्रणवव्याहृतियुतैः "ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः" इत्याकारकैर्विधेयम्।

शिख्यादिपञ्चचत्वारिंशद्देवांस्तत्र प्रपूजयेत्।
वेदमन्त्रैर्नाममन्त्रैः प्रणवव्याहृतिस्तथा॥

इति विश्वकर्मप्रकाशे (५।१०) वचनात्।

९—ब्रह्मस्थाने ततो विद्वान् कुर्यादाधारमग्रतः।
तस्मिन् संस्थापयेत् कुम्भं वह्न्या सह पूरितम्॥

इति यागतत्त्वे वचनात्। विश्वकर्मप्रकाशे (५।१७०) तु—

"कलशे स्थापयेद्देवं वरुणं वारुणैस्ततः।"

इत्यादिना कलशस्थापनमुक्तम्, स्थानं नोक्तम्। तत्र सामान्यनियमात् ईशान्यां तत्स्थापनमिति पद्धतिकाराः।

१०—कलशे सर्वौषध्यादिप्रक्षेपणमत्र ग्रन्थविशेषतः प्रक्रिया उक्ता वास्तु-शान्तौ। ते यथा विश्वकर्मप्रकाशे (५।१०४-१०५)—

वटीर्वटोदुम्बरस्य वेतसस्य तथैव च ।
अश्वत्थस्यैव मूलं च पञ्च काषायकाः स्मृताः ॥
तुलसी सहदेवी च विष्णुक्रान्ता शतावरी ।
मूलान्येतानि गृह्णीयाच्छतालाभे विशेषतः ॥ इति ।

११—वास्तुमूर्तिः सर्पाकारा कार्या—

इति प्रार्थ्य ततो भूमौ सलिखेद् वास्तुपूरुषम् ।
पिष्टातकैस्तण्डुलैर्वा नागरूपधरं विभुम् ॥ (वि० क० प्र० १।७)

इति वचनात् ।

गृहवास्तुं प्रवक्ष्यामि येन देवमयो भवेत् ।
ईशानादि निऋत्यन्तं वास्तुः सर्पः प्रकीर्तितः ।

इति प्रतिष्ठासरणौ सङ्गमशक्तितन्त्रधृतवचनाच्च ।

१२—अत्र वास्तुदेवतापूजन-बलिदान-होम-प्रतिमा-निखननान्तः परिशिष्टाद्युक्तो मुख्यः पक्षः । प्रतिमानिखननरहितो मात्स्योक्तो मध्यमः । पूजाबलिदानमात्रः शारदोक्तः कनिष्ठः । न च मतभेदात्सर्वेऽपि मुख्यकल्पा एवेति वाच्यम् । "एककर्मणि गुणविशेषे फलविशेषः" (का० श्रौ० सू० १ । १० । ११) इति न्यायेन समानफलानुत्पत्तेः ।

१३—"वास्तोष्पते" इति मन्त्रैश्चतुर्भिर्होमः शिख्यादिहोमात्पूर्वमेव कार्यं इति युक्तं पश्यामः । अत्र वास्तुशान्तौ वास्तोष्पतिदेवस्य प्रधानत्वात् प्रधानहोमस्य च पूर्वमेव न्याय्यत्वात् । परिशिष्टे—"वास्तोष्पत इति चतसृभिश्चरुणा समित्तिलपायसाज्यैः केवलाज्येन वा हुत्वा होमशेषं समाप्य" (आश्व० परि०) इत्युक्तेश्च । पद्धतिकारैस्तु सर्वैः शिख्यादिहोम एव पूर्वमुक्तः । तैः शिख्यादयोऽपि प्रधानत्वेनैवाङ्गीकृताः । शिख्यादिहोमानन्तरं "वास्तोष्पते" इति चतुर्भिर्मन्त्रैः प्रधानहोमः ततो बिल्वहोम इति पद्धतिक्रमः । अस्माकं मते तु आदौ प्रधानहोमः ततो बिल्वहोम इति पद्धतिक्रमः । अस्माकं मते तु आदौ प्रधानहोमस्ततः शिख्यादिहोमः । ततो बिल्वहोमः । प्रधानहोमश्च प्रतिद्रव्यं प्रतिमन्त्रं वा अष्टादिसंख्यया, शिख्यादिहोमश्चाष्टसंख्यया, सामान्यनियमात् ।

होमो ग्रहादिपूजायां शतमष्टोत्तरं भवेत् ।
अष्टाविंशतिरष्टौ वा तत्संख्या परिकीर्तिता ॥
अष्टोत्तरसहस्रं वा तत्संख्या परिकीर्तिता ।

इति वचनात् । अथवा शिख्यादिभ्यो दश-दश-सङ्ख्यया होमः कार्यः ।

"इतरान् दशभिद्वानाहुतिभिः प्रकल्पयेत् ।"

इति वास्तुयागतत्त्वे रघुनन्दनधृतवचनात् । अथवा "वास्तोष्पत इति चतसृभिः प्रत्यृचं हुत्वा" इति सूत्रविहितहोमे सकृत्सङ्ख्या यथा गृह्यते, तद्वदत्रापि सकृत्संख्यैव ग्राह्या, तेन शिख्यादिभ्यः एकैकाऽऽहुतिरित्यपि पक्षो बोध्यः ।

१४--शिख्यादिहोमः पूजान्ते कार्य इति विश्वकर्मप्रकाशे (५।९९)। शिख्यादिपूजन मुक्त्वा ततः कलशस्थापनं च (वि० क० प्र० ५।१००--१०९) उक्त्वा अनन्तरं 'होमस्त्रिमेखले कार्यः" (वि० क० प्र० ५।११०-११२) इत्यादिना पूजनानन्तरमेव होमविधानात् ।

१५--वास्तुबलिहोमान्ते कार्यः--

होमान्ते भक्ष्यभाज्यैस्तु वास्तुदेशे बलिं हरेत् ।
नमस्कारान्तयुक्तेन प्रणवाद्येन सर्वतः ॥ (वि० क०प्र० ५।११३)

इति वचनात् । स च बलिः "घृतान्नं शिखिने दद्यात्" (वि० क० प्र० ५।११६-१३३) इत्यादिना शिख्यादिदेवेभ्यः पृथक् पृथग्द्रव्यैर्विहितेभ्यस्तत्तद्-द्रव्येण देयः ।

"अथवा पायसं दद्यात् सर्वेभ्यश्च सदीपकम् ।" (वि०क०प्र०५।१३४)
इति वचनात् ।

पायसं वाऽपि दातव्यं स्वनाम्ना सर्वतः क्रमात् ।
नमस्कारान्तयुक्तेन प्रणवाद्येन सर्वतः ॥

इति मात्स्यात् । "पायसान्नैर्बलिं हरेत्" इति शारदातिलकाच्च सर्वेभ्यः पायसद्रव्येण वा बलिर्देयः । आग्नेये तु बलिविशेषमभिधाय--

'यजेत सकलं वास्तु दध्यक्षतकुशैर्जलैः ।"

इत्यग्निपुराणे उक्तम् । बलिश्च-

"कुक्कुटाण्डप्रमाणं तु बलिरित्यभिधीयते ।"

इति स्मृत्यर्थसारोक्तः कार्यः । सति संभवे—

"सर्वेभ्योऽपि हिरण्यं च ब्रह्मणे गां पयस्विनीम् । (वि॰क॰प्र॰५।१३३)

इति वचनात् । शिख्यादिभ्यश्चतुश्चत्वारिंशद्भ्यः सुवर्णम्" ब्रह्मणे च गां तन्निष्क्रयं वा दद्यात् ।

१६ - ततः सम्पूजयेत्तस्मिन् सर्वलोकवसुन्धराम् ।
सुरूपां प्रमदारूपां दिव्याभरणभूषिताम ॥
ध्यात्वा तामर्चयेद्देवीं परितुष्टां स्मिताननाम् ।

इति वास्तुयागतत्त्वे रघुनन्दनोक्तेः ।

वास्तुमण्डलमध्ये तु ब्रह्मस्थाने प्रपूजयेत् ।
सुरूपां पृथिवीं दिव्यरूपाभरणसंयुताम् ॥ (वि॰ क॰ प्र॰ ५।३४)

इति वचनाच्च ब्रह्मस्थाने ब्रह्मपूजोत्तरं तस्मिन्नेव पदे तदुत्तरतो धरापूजनमाचरन्ति । केचित्तु अस्मिन्नेवावसर इति ।

१७—वास्तूपशमनं कृत्वा ततः सूत्रेण वेष्टयेत् ।
रक्षोघ्नपवमानेन सूक्तेन भवनादिकम् ॥ इति मात्स्यात् ॥

"कृणुष्व पाजः' इति पञ्चर्चं रक्षोघ्नसुक्तम् । "पुनन्तु मा पितरः" इत्यादिकं नवर्चं पवमानसूक्तम् ।

१८—"बलिं च सम्यग्विधिवत्प्रयुज्य क्षीरेद्य धारां परितस्तु दद्यात् ।"

इति मात्स्यात् ।

वाचयित्वा ततः स्वस्ति कर्करीं परिगृह्य च ।
सूत्रमात्रेण तोयस्य धारां कुर्यात्प्रदक्षिणाम् ॥
प्रक्षिपेत्तेन मार्गेण सर्वबीजानि चैव हि । (वि॰ क॰ प्र॰ ५.८७-८८)

इति विश्वकर्मप्रकाशोक्तेश्च जलदुग्धोभयधाराकरणमत्र कर्तव्यम् ।

१९—"होमशेषं समाप्याथ यजमानो वास्तुमूर्ति रौद्रकोणेऽधोमुखीं गर्ते प्रच्छादयेत्" इति आश्वलायनगृह्यपरिशिष्टे (४।२) पूजितवास्तुप्रतिमाया गर्ते प्रच्छादनमीशानकोणेऽभिहितम् ।

मृत्पेटिकां स्वर्णरत्नधान्यशैवालसंयुताम् ।
गृहमध्ये हस्तमात्रे गर्ते न्यस्याथ विन्यसेत् ॥

इति नारदसंहितायां मृत्पेटिकायां गृहमध्ये गर्ते निधानमुक्तम् । शान्तिसारादिकारैस्तु उभयैकवाक्यतया वास्तुप्रतिमां मृत्पेटिकायां निधाय गर्ते तस्या निधानमुक्तम् । अथ च वास्तुभूमेरेकाशीतिपदानि कल्पयित्वा ईशानकोणादष्टमे आकाशपदे निधानमुक्तम्, तच्च परिशिष्टोक्तसंहितोभयविरुद्धमिति चेन्न । आकाशपदस्यैव रौद्रत्वस्वीकारात्, लिङ्गतोभद्रादिमण्डले इन्द्राग्न्योर्मध्यस्द रुद्रायतनत्वकथनात् ।

२०—वास्तुयागान्ते दक्षिणोक्ता वास्तुयागतत्त्वे—

एवं निष्पाद्य विधिना वास्तुयागं सुरोत्तम ।
सुवर्णं गां च वस्त्रं च आचार्याय निवेदयेत् ॥ इति ।

विश्वकर्मप्रकाशे (५।२५६-२६२) च—

ततस्तु प्राङ्मुखो भूत्वा आचार्याय निवेदयेत् ।
दक्षिणां ब्रह्मणे दद्याद्यथाशक्त्यानुसारतः ॥
उदङ्मुखाय च ततः क्षमस्वेति पुनः पुनः ।
गां सवत्सां स्वर्णयुतां तथा वासोयुगान्विताम् ॥
यज्ञान्ते आप्लुतान् वस्त्रानाचार्याय निवेदयेत् ।
दैवज्ञं च ततस्तोष्य स्थपतीन् वैष्णवानपि ॥
दक्षिणां च ततो दद्यात् घृते छायां विलोकयेत् ।
रक्षाबन्धं मन्त्रपाठ ञ्यायुसं च समाचरेत् ॥
ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्याच्छिष्टेभ्यश्च स्वशक्तितः ।
दीनान्धकृपणेभ्यश्च दद्याद् वित्तानुसारतः ॥
सम्प्राप्नोति नरो लक्ष्मीं पुत्र-पौत्रधनान्विताम् । इति ।

२१—अकपाटमनाच्छन्नमदत्तबलिभोजनम् ।
गृहं न प्रविशेद्धीमान् विपदामाकरं हि तत् ।

इति नारदसंहितावचनात् गृहे ब्राह्मणानां भोजनं कृत्वा गृहप्रवेशः कार्यः ।

२२—गृहप्रवेशाङ्गत्वेन पताकादिरोपणप्रकारो विश्वकर्मप्रकाशे (१०१९८-१०१) विहितः ।